Introducing
CHAPTERWISE
VIDEO LECTURES

Neo Star

अयांश

हिंदी पाठमाला

(Text-cum-Workbook)

DESIGNED ACCORDING TO NEP 2020 GUIDELINES

6

• डॉ० गीता रानी
• शोभा जैन

Series Code : 1501

digibank

For Instructions turn the book or visit : www.vardhmanbooks.com

Neo Star

अयांश

हिंदी पाठमाला

6

(Text-cum-Workbook)

लेखिकाएँ
डॉ० गीता रानी
एम० ए० (हिंदी) गोल्ड मेडलिस्ट
पी-एच० डी०

शोभा जैन
(एम.एड.)

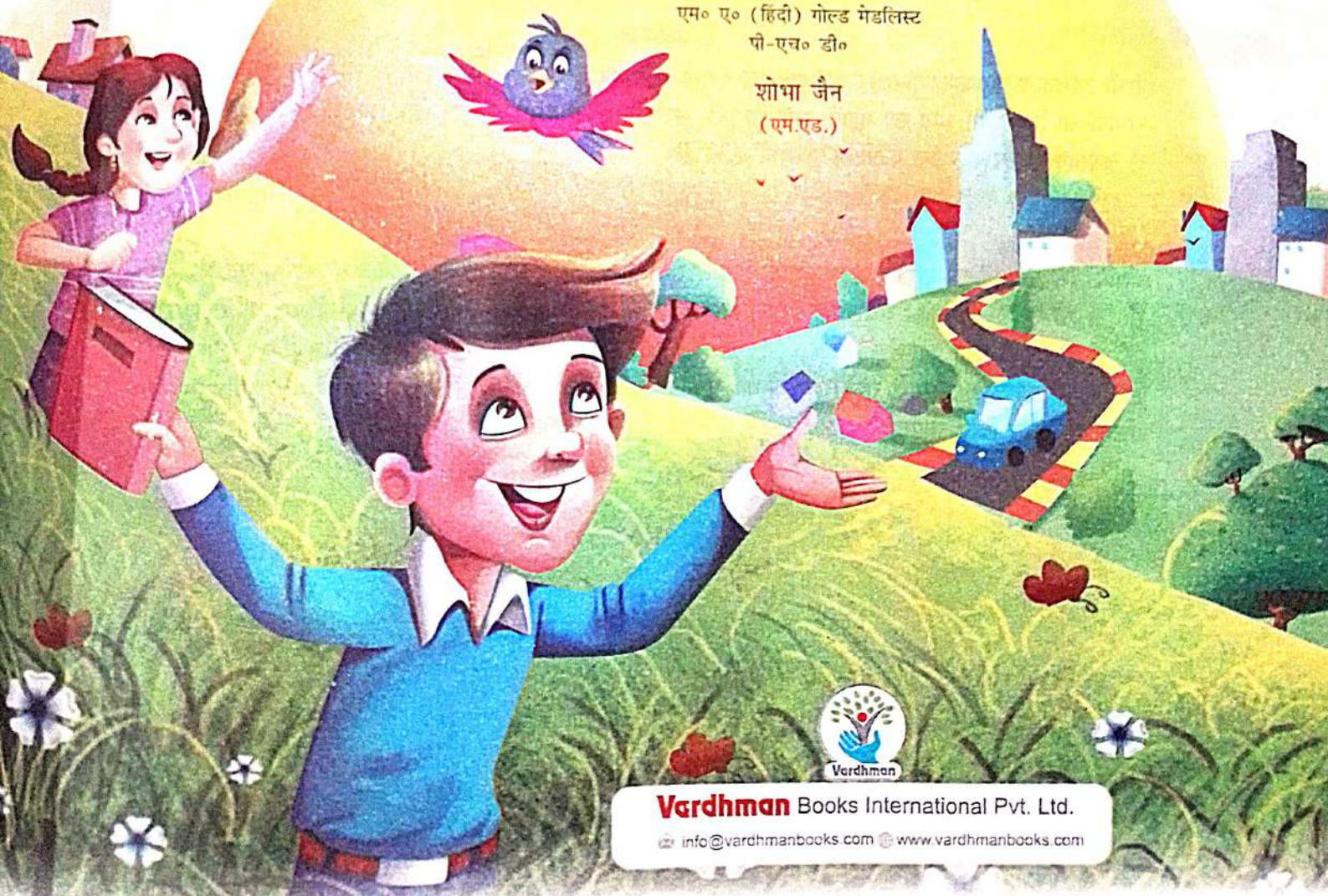

Vardhman Books International Pvt. Ltd.
info@vardhmanbooks.com www.vardhmanbooks.com

Vardhman Books International Pvt. Ltd.

Branch Office : Plot No. 16, Sector 10-C, IInd floor,
Vasundhara, Delhi/NCR—201012
info@vardhmanbooks.com
www.vardhmanbooks.com
Toll Free No. 1800-121-9968

© प्रकाशक :

सभी अधिकार प्रकाशकाधीन हैं। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक में समाहित संपूर्ण पाठ्य-सामग्री के किसी भी भाग का मुद्रण, इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा अन्य किसी विधि से संग्रहण, प्रसारण अथवा प्रकाशन पूर्णतया वर्जित है।

यद्यपि इस पुस्तक को लेखन/संपादन/प्रूफ रीडिंग, तथा चित्रांकन की दृष्टि से त्रुटिरहित रखने तथा पाठ्य-सामग्री को शुद्ध रखने का यथासंभव प्रयास किया गया है तथापि भूलवश कोई त्रुटि, मशीनी या यांत्रिकी, रह गई हो तो इसके लिए प्रकाशक, लेखक और मुद्रक उत्तरदायी नहीं हैं। पुस्तक के सुधार हेतु प्राप्त सुझावों के लिए प्रकाशक/लेखक आभारी रहेंगे। त्रुटियों का परिमार्जन एवं प्राप्त विचारों और सुझावों का समायोजन आगामी संस्करण में कर दिया जाएगा।

संपादक मंडल : वर्धमान बुक्स संपादक मंडल
टाइप सेटिंग एवं चित्रांकन वर्धमान बुक्स
मुद्रक वर्धमान प्रिंट लाइन

रजिस्टर्ड ऑफिस : प्लॉट नं. 2, मोहकमपुर इंडस्ट्रियल एरिया,
फेज़-II, दिल्ली रोड, मेरठ (एन.सी.आर.)-250002

आमुख

प्रस्तुत हिंदी पाठमाला अयांश बालकों के मानसिक विकास की प्रक्रिया को रचनात्मक रूप से विविध स्तरों पर अग्रसर करने में एक महत्वपूर्ण शृंखला है।

इसे पूर्णतया संशोधित 'नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति' के अनुरूप पाठ्यक्रम पर आधारित किया गया है। पाठमाला में हिंदी साहित्य की विविध विधाओं जैसे— कविता, एकांकी, कहानी, संस्मरण, पत्र, जीवनी, डायरी, चित्रकथा, लोककथा आदि का समावेश किया गया है। राष्ट्र, समाज और संस्कृति के साथ-साथ पर्यावरण के प्रति भी विद्यार्थियों को सजग करने की चेष्टा इसमें निहित है।

ज्ञानवर्धन के साथ-साथ रोचकता और चित्रात्मकता इन पुस्तकों को अभिप्राय: पूर्ण बनाते हैं। भाषा की बारीकियों को सहज रूप से समझाने के उद्देश्य से व्याकरण को स्वाभाविक व रोचक रीति से समाहित किया गया है।

भाषा के सभी कौशलों जैसे— 'पढ़ना', 'लिखना', 'बोलना' और 'सुनना', आदि का विकास हो सके, इस उद्देश्य को इस पाठमाला की रचना के दौरान विशेष लक्ष्य में रखा गया है।

प्रश्नों को मौखिक, लिखित, बहुविकल्पीय, लघु उत्तरीय, दीर्घ उत्तरीय आदि में विभाजित करके पाठ का पूर्ण निहित अर्थ सुस्पष्ट रूप में समझने की विद्यार्थियों की पात्रता का विकास व मूल्यांकन किया गया है। साथ ही विविध प्रकार से विषय पर चिंतन-मनन करने तथा नए-नए बिंदुओं पर विचार करने की क्षमता को भी विकसित करने का प्रयास है।

पुस्तक बालकों में चिंतन-मनन की क्षमता को निश्चित की विकसित करेगी। साथ ही उनकी अनुभूति क्षमता भी गहन हो सकेगी।

स्वयं ही संवेदना की आंदोलित भावभूमि हमारे दावों का समर्थन करेगी। आदरणीय अध्यापक बंधुओं और विद्वत्जनों के सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

—लेखिकाएँ व प्रकाशक

विषय-सूची

1.	किरण प्रेम की ऐसी झरती	*(कविता)*	5
2.	जब मैं मर गया	*(हास्य-व्यंग्य)*	9
3.	माँ तुझे प्रणाम	*(ललित निबंध)*	15
4.	शिक्षा की आवश्यकता	*(निबंध)*	20
5.	यह मेरा : यह मीत का	*(संस्मरण)*	25
6.	ज़िंदगी कैसे चलेगी	*(कविता)*	32
7.	ऐसे थे प्रेमचंद	*(संस्मरण)*	36
8.	विज्ञापन युग	*(हास्य-व्यंग्य)*	43
*	शहीद का पत्र	*(पठन हेतु)*	50
9.	अपूर्व अनुभव	*(कहानी)*	51
*	पेड़ का दर्द	*(पठन हेतु)*	58
10.	चेतावनी	*(कविता)*	60
11.	नया नज़रिया	*(चिंतन-मनन)*	64
12.	असली माँ	*(कहानी)*	69
*	सवा सेर गेहूँ	*(पठन हेतु)*	76
13.	वशीकरण एक मंत्र है	*(निबंध)*	81
14.	स्वर्ग बना सकते हैं	*(कविता)*	88
*	प्यार की जीत	*(पठन हेतु)*	92
15.	हिंद महासागर में छोटा-सा हिंदुस्तान	*(यात्रा-वृत्तांत)*	98
16.	नीति व भक्ति	*(दोहे व पद)*	104
17.	कवि का चुनाव	*(कहानी)*	109
*	पूर्व मध्यावधि प्रश्न-पत्र		115
*	मध्यावधि प्रश्न-पत्र		117
*	उत्तर मध्यावधि प्रश्न-पत्र		119

अध्याय

1. किरण प्रेम की ऐसी झरती

प्रेम एक महान शक्ति है, इसके सामने हर शक्ति नतमस्तक हो जाती है। आइए इसकी महिमा जानें-

सरस धारा प्रेम की
जब तक रहती गतिमान।
तभी तक सुरक्षित रहती
मानवता की अद्‌भुत शान।

घृणा-द्‌वेष है विषधर जैसे
जब चित्त को डस लेते,
जीवित रहते हुए भी प्राणी
साँस मृतक सम लेते।

जीवन का आनंद प्रेम है
खुशियों का संदेश यही है।
उमंग अनूठी लाता है यह
जीवन सफल बनाता है यह।

इससे शृंगार करे यह धरती
बिन इसके हाहाकार वह करती।
नहीं राजमुकुट में वह आकर्षण
किरण प्रेम की ऐसी झरती।

भर लो शुद्‌ध प्रेम जीवन में
गाते इसका गुणगान पैगंबर,
अवतारों की पहचान है इससे
सच मानो यह स्वयं है ईश्वर।

—डॉ० गीता रानी

अध्यापन संकेत विद्यार्थियों को विविध भावों के मन-मस्तिष्क पर पड़ने वाले प्रभाव के विषय में समझाते हुए, प्रेमभाव विकसित करने की प्रेरणा दें।

शब्दार्थ

गतिमान - चलती हुई; मानवता - इंसानियत; विषधर - साँप; घृणा-द्वेष - नफ़रत, बैर; मृतक - मरा हुआ; हाहाकार - ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर रोना; शान - शोभा; चित्त - चेतना, होश; पैगंबर - आध्यात्मिक गुरु।

अभ्यास

कविता से

मौखिक प्रश्न

(क) कविता में कौन सी धारा के विषय में कहा गया है?

(ख) मानवता की शान कैसे सुरक्षित रह सकती है?

(ग) यहाँ घृणा-द्वेष की तुलना यहाँ किससे की गई है?

(घ) प्रेम अपने साथ क्या-क्या लाता है?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) प्रेम को यहाँ कहा गया है–

(अ) राष्ट्र की शान ⬡ (ब) मानवता की शान ⬡

(स) परिवार की शान ⬡ (द) विद्यालय की शान ⬡

(ख) घृणा-द्वेष के विषधर डसते हैं–

(अ) कमज़ोरों को ⬡ (ब) वीरों को ⬡

(स) चित्त को ⬡ (द) शरीर को ⬡

(ग) जीवन को सफल बनाता है–

(अ) धन ⬡ (ब) यश ⬡

(स) पद ⬡ (द) प्रेम ⬡

(घ) प्रेम के बिना धरती करती है–

(अ) श्रृंगार (ब) हाहाकार

(स) उपद्रव (द) उपवास

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

इन पंक्तियों के अर्थ स्पष्ट कीजिए-

(क) 'जीवन का आनंद प्रेम है।'

(ख) 'सच मानो यह स्वयं है ईश्वर।'

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) घृणा-द्वेष के विषधरों के डस लेने पर व्यक्ति की दशा कैसी हो जाती है?

(ख) जीवन में खुशी या उमंग कब आते हैं?

(ग) प्रेम का गुणगान कौन-कौन करते हैं?

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थक शब्द लिखिए

(क) विषधर _____ (ख) उमंग _____

(ग) मृतक _____ (घ) अनूठा _____

(ङ) गुणगान _____ (च) ईश्वर _____

2. सही वर्ग में लिखिए

प्रेम, किरण, घृणा, द्वेष, हाहाकार, चित्त, विषधर, मानवता

स्त्रीलिंग	_____	_____	_____	_____
पुल्लिंग	_____	_____	_____	_____

3. पढ़िए और समझिए

(क) अनूठी, अनोखी, विचित्र।

(ख) विषधर, सर्प, भुजंग।

(ग) प्रेम, प्यार, स्नेह।

(घ) शांति, चुप्पी, खामोशी।

4. 'ता' प्रत्यय जोड़कर लिखिए

(क) मानव ___मानवता___ (ख) निज ________

(ग) सफल ________ (घ) व्यर्थ ________

(ङ) दानव ________ (च) मम ________

रचना के क्षण

- **भाव-भूमि–** कविता पढ़कर आपके मन में क्या भावनाएँ उभरीं, व्यक्त कीजिए।

कल्पना व चिंतन

- कल्पना कीजिए, यदि संपूर्ण विश्व मैत्री और अपनत्व से परिपूर्ण हो, तो कैसा प्रतीत होगा?

क्रिया-कलाप

- प्रेम और मैत्री भाव पर आधारित कुछ सूक्तियाँ लिखिए।
- प्रेम भाव के विस्तार के लिए जिन संतों ने अथक प्रयास किए हैं, उनमें से कुछ का संक्षिप्त विवरण दीजिए।
- दिए गए दोहों को बड़े-बड़े अक्षरों में लिखकर कक्षा में टाँगिए–

(क) *पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ पंडित भया न कोइ।*
ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होइ।।

(ख) *रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।*
टूटे से फिर न जुरै, जुरै गाँठ पड़ जाय।।

(ग) *लगन महूरत झूठ सब, झूठ तिथि-त्योहार।*
प्रेम मगन जब मन भया, तो कौन गिनै तिथि-वार।।

अध्याय

2.

जब मैं मर गया

लेखक ने अपनी बीमारी में होने वाले अनुभवों को बड़े ही रोचक और हास्यप्रद रीति से प्रकट करते हुए यह व्यंग्य-लेख लिखा है।

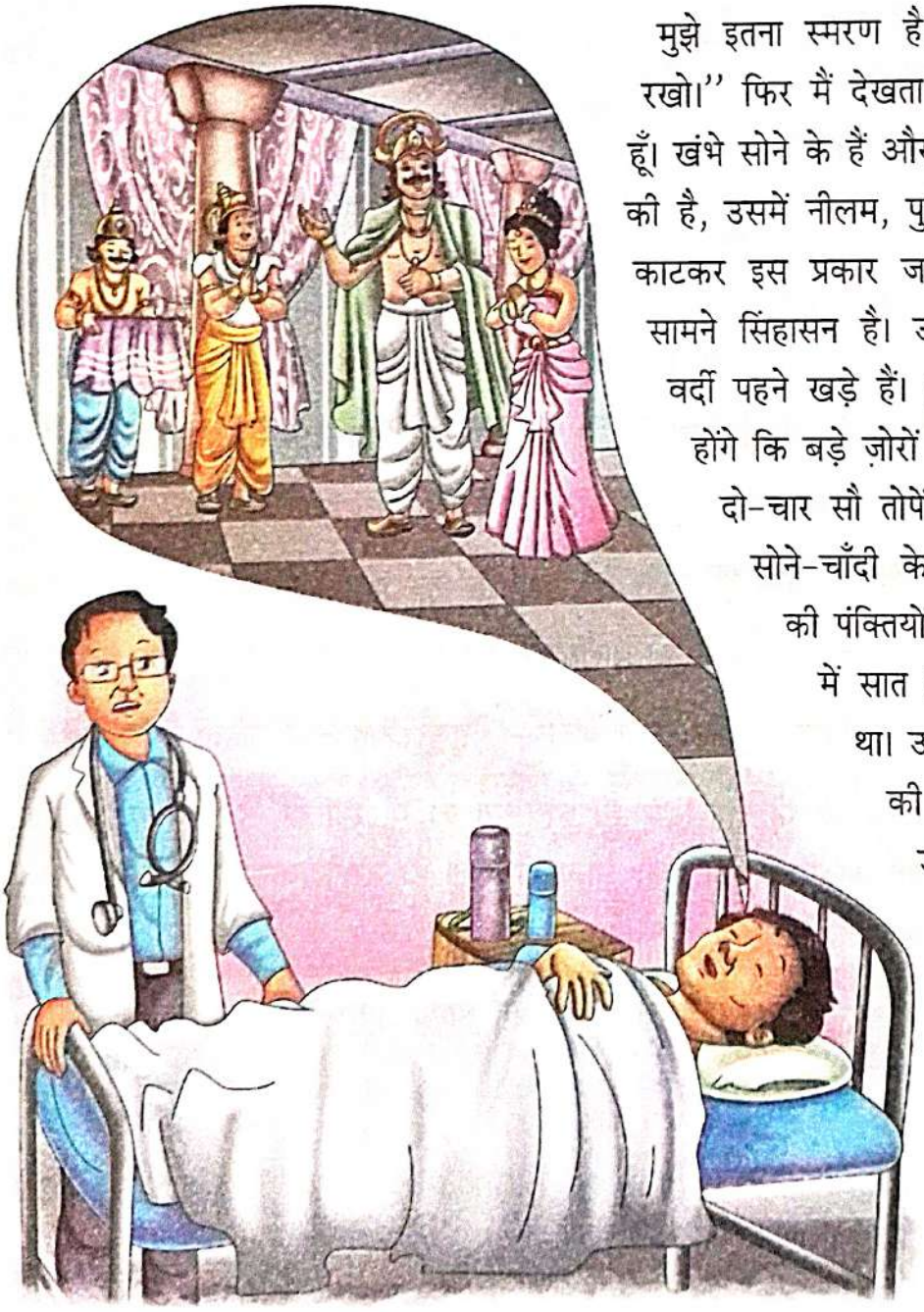

मुझे इतना स्मरण है, डॉक्टर ने कहा- "सिर पर बरफ़ रखो।" फिर मैं देखता हूँ कि मैं एक विशाल हॉल में खड़ा हूँ। खंभे सोने के हैं और फ़र्श गुलाबी संगमरमर का। छत सोने की है, उसमें नीलम, पुखराज, तथा माणिक के टुकड़े काट-काटकर इस प्रकार जड़े हैं कि जैसे चित्र बनाए गए हों। सामने सिंहासन है। उसके पीछे अनेक परिचारक सुनहली वर्दी पहने खड़े हैं। मुझे खड़े हुए पाँच मिनट भी न बीते होंगे कि बड़े ज़ोरों का बाजा बजा। पहले ऐसा जान पड़ा, दो-चार सौ तोपें एक साथ छूट रही हैं। बाहर सैनिक सोने-चाँदी के काम सहित वर्दियों पहने तीन-तीन की पंक्तियों में थे और उनके पीछे राजसी पहनावे में सात फुट से अधिक लंबा व्यक्ति आ रहा था। उसकी दो-दो इंच लंबी आँखें, छह इंच की घनी मूँछें तथा विशाल माथा था। उसके प्रवेश करते ही सिपाहियों ने तलवारें निकालकर ऐसे खड़ी कर लीं, जैसे पेड़ की डालियाँ खड़ी होती हैं। उन महापुरुष के पीछे एक सज्जन थे, जो चिकन की शेरवानी पहने हुए थे, आँखों पर ऐनक, मूँछ छँटी, रंग गोरा और सिर पर टोपी थी। उनके पीछे कई

चपरासी मोटी-मोटी ज़िल्ददार पुस्तकें लिए थे। पुस्तकें कहना उन्हें उचित न होगा। स्टेट बैंक के 'करंट एकाउंट' का रजिस्टर कहना अधिक उपयुक्त होगा।

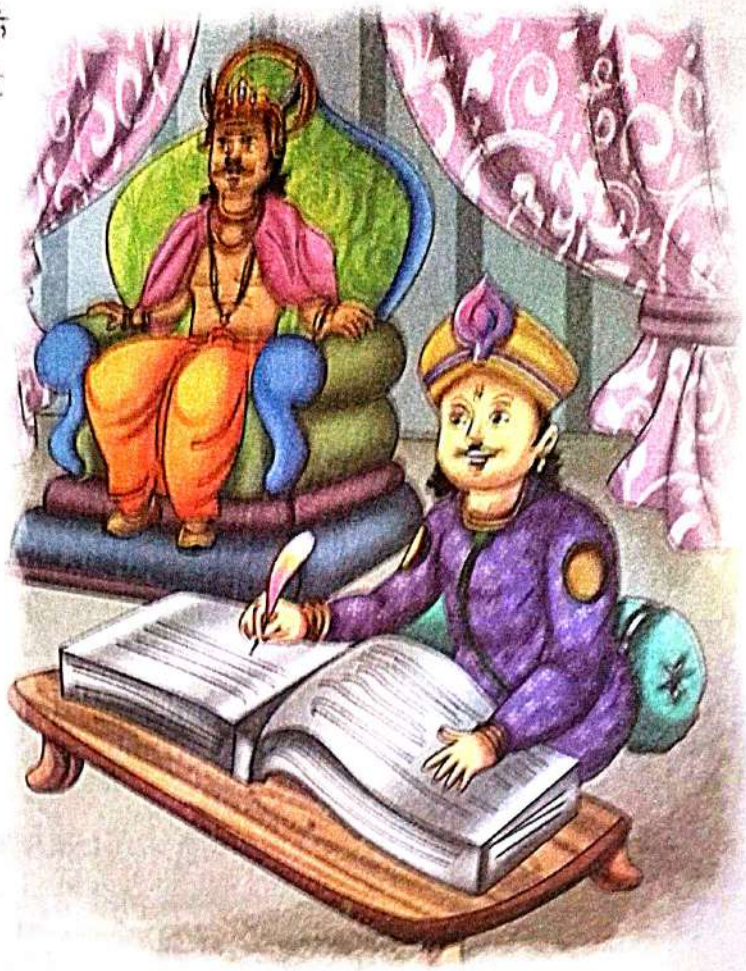

महापुरुष ने सिंहासन पर आसन जमाया और बोले- "चित्रगुप्त जी, आज जो लोग आए हैं, उनका विवरण उपस्थित कीजिए।"

पहले जो सज्जन उपस्थित हुए, वे अमेरिका के शराब के करोड़पति व्यापारी थे। चित्रगुप्त महाराज ने बताया कि इन्होंने करोड़ों बोतलें शराब की बनवाईं और बेचीं। यमराज ने बड़े गंभीर स्वर में कहा— "बड़ा अपराध है! तुमने जो अपराध किया है, उसके लिए पाँच हज़ार वर्ष से कम क्या नरक हो सकता है! तुम्हें कुछ कहना है?"

अमेरिका के व्यापारी ने कहा— "श्रीमान! हमारे देश में तो यह पाप नहीं माना जाता।"

यमराज बोले — "यहाँ अलग-अलग देश के लिए अलग-अलग नियम नहीं हैं।"

अमेरिकी बोला — श्रीमान! मैंने छह सौ स्कूलों और गिरिजाघरों को एक करोड़ डॉलर दान में दिए हैं। गरीब देश भारत में आधे दाम पर शराब भेजी थी।

यमराज ने चित्रगुप्त की ओर देखा और पूछा— "क्या यह ठीक है?"

चित्रगुप्त ने एक चपरासी की ओर देखकर कहा — "अमेरिका वाली बही लाओ।"

चपरासी ने एक रजिस्टर उपस्थित किया। कुछ उलट-पुलटकर वे बोले — "हुज़ूर, यह ठीक कहता है।"

यमराज ने कहा — "इसने धार्मिक संस्थाओं को भी दान दिया है। व्यवसाय जो भी रहा हो, है पुण्यात्मा! अच्छा, इसे एक दिन का नरक और दो हज़ार वर्ष का स्वर्ग भोगने की आज्ञा दी जाती है। उसके बाद इसे पृथ्वी पर भेजा जाए। ऐसी पुण्यात्माओं की वहाँ आवश्यकता है।"

इसके पश्चात् कई सज्जन उपस्थित किए गए और उन्हें यमराज ने दंडित किया। फिर मेरा नाम पुकारा गया। मैं चित्रगुप्त महाराज की बगल में खड़ा हो गया।

यमराज ने पूछा — "यह कौन है?"

चित्रगुप्त ने बही निकालते हुए कहा — "यह वाराणसी का रहने वाला है।"

मैं तो काँप रहा था। फिर भी साहस बटोरकर चित्रगुप्त के कान में धीरे-से मैंने कहा—"बिरादरी का ख्याल रखिएगा।" चित्रगुप्त जी बोले—"वाराणसी में रहने वालों को तो कोई दंड मिलता नहीं हुज़ूर। वहाँ के तो मच्छर और कीट-पतंगें भी स्वर्ग में जाते हैं।"

यमराज ने कहा—"हाँ, इसलिए अब स्वर्ग में स्थान नहीं मिलता। वहाँ के मच्छर और कीड़े-मकोड़े आधे स्वर्ग में बस गए हैं। किंतु यह करता क्या था?"

चित्रगुप्त ने एकाध पन्ना और पढ़कर कहा—"कविता करता था।"

यमराज की भौंहें तन गईं। बोले— "यह तो बड़ा अपराध है।" मुझसे पूछा, "किस भाषा में कविता करते हो?"

मैंने बड़े गर्व से कहा — "हिंदी में।"

यमराज मुँह बनाकर बोले — "हिंदी में! किसने तुम्हें हिंदी में कविता करने को कहा? तुम्हारे देश की सरकार इसके लिए तुम्हें दंड नहीं देती? चित्रगुप्त जी, इनका मामला कल देखा जाएगा। आज का कार्य समाप्त होता है।"

यमराज जी उठकर चले गए। चित्रगुप्त जी ने एक व्यक्ति से कहा — "ये तुम्हारे सुपुर्द हैं। इन्हें वहाँ ले जाओ, जहाँ विचाराधीन लोग रहते हैं।"

वह व्यक्ति मुझे एक विशाल प्रासाद में ले गया। जिस कमरे में मुझे स्थान दिया गया, वह सोने-चाँदी का बना था। मसहरी तथा कुर्सी के गद्दे मक्खन से भी कोमल थे। सोने के गिलास में एक पेय आया, जो जान पड़ता था, अंगूर, संतरे और केसर के रस का मिश्रण है। जिस व्यक्ति के सुपुर्द मैं रखा गया था, उसने कहा — "आपका निर्णय तो कल होगा। तब तक आप यहाँ की सैर कर लें। यहाँ नित्य संध्या को कोई न कोई खेल या आमोद-प्रमोद होता रहता है। आज कुश्ती है। किसी से मिलना हो, तो मिल सकते हैं।"

मैंने कहा — "महात्मा गांधी तथा तुलसीदास जी के दर्शन करना चाहता हूँ।"

उसने बताया — "वे लोग यहाँ नहीं हैं। यहाँ तो वही लोग रहते हैं, जिनका निर्णय नहीं हुआ या जो स्वर्ग और नरक भेजे जाने से पहले कुछ दिनों के लिए रोक लिए जाते हैं।"

मैं उसके साथ हो लिया। वह आगे-आगे, मैं पीछे-पीछे चला। उसने ताकीद कर दी थी कि आप किसी से बात नहीं कर सकते। देखा कि सुसज्जित दालान में रत्नाकर जी मकरध्वज घोंट रहे हैं। उन्हीं की बगल में प्रसिद्ध कवि शैली एक दालान में रो रहे हैं। उनकी आँखों से निरंतर आँसुओं की धारा बह रही है और वे तौलिए से पोंछ रहे हैं। अनेक लोग दिखाई दिए। किसी न किसी काम में सब लगे थे।

हम लोग अखाड़े की ओर पहुँचे। एक अखाड़े में लेनिन और मार्क्स लड़ रहे थे, एक में शेक्सपियर और ब्रैडले। यह देखकर मुझसे रहा न गया । मैं "हा-हा" करने लगा कि मैंने सुना — "अब टेंपरेचर उतर गया है, कोई भय नहीं।"

सामने डॉक्टर और मेरी पत्नी दिखाई पड़े।

—बेढब बनारसी

अध्यापन संकेत अध्यापक बच्चों को बेढब बनारसी के बारे में बताएँ कि वे किस प्रकार अपने हास्य से व्यंग्य करते थे और सबका मनोरंजन करते थे।

शब्दार्थ

नीलम - नीले रंग का रत्न; पुखराज - पीले रंग का रत्न; माणिक - गुलाबी रंग का रत्न; परिचारक - सेवक; सुपुर्द - सौंपना; विचाराधीन - जिस पर विचार होना है; प्रासाद - महल; ताकीद - निर्देश; शैली - एक अंग्रेज़ कवि; लेनिन, मार्क्स - पश्चिमी विचारकों के नाम।

अभ्यास

पाठ से

मौखिक प्रश्न

(क) लेखक को क्या बात स्मरण थी?

(ख) चपरासी के हाथों में क्या था?

(ग) क्या सुनकर यमराज जी की भौंहें तन गईं?

(घ) सोने के गिलास में लेखक के लिए क्या आया?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) लेखक ने जो विशाल हॉल देखा, उसका फर्श था–

(अ) सफ़ेद संगमरमर का ☐ (ब) लाल ईंटों का ☐

(स) गुलाबी संगमरमर का ☐ (द) काले पत्थर का ☐

(ख) लेखक ने फरमाइश की–

(अ) शेक्सपियर से मिलने की ☐ (ब) महात्मा गांधी तथा तुलसीदास से मिलने की ☐

(स) कार्ल मार्क्स से मिलने की ☐ (द) यमराज से मिलने की ☐

(ग) सुसज्जित दालान में मकरध्वज घोंटने वाले थे–

(अ) रहीमदास ☐ (ब) नरोत्तमदास ☐

(ब) रत्नाकर ☐ (द) जयशंकर प्रसाद ☐

(घ) अखाड़े में लड़ रहे थे -

(अ) कीट्स और शैली

(ब) लेनिन और मार्क्स

(स) पंत और निराला

(द) प्रेमचंद और रामचंद्र शुक्ल

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) लेखक ने सोने की छत में क्या-क्या जड़ा देखा?

(ख) अमेरिकी व्यक्ति ने क्या-क्या दान किया था?

(ग) दालान में कौन रो रहे थे?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) पाठ में लेखक ने लेखकों और कवियों की हालत पर क्या व्यंग्य किया है?

(ख) लेखक की चेतना लौटी तो उसे किस सच का पता चला?

भाषा-ज्ञान

1. पढ़िए और समझिए

(क) संध्या, शाम, साँझ।

(ख) विशाल, बड़ा, विस्तृत।

(ग) प्रसिद्ध, मशहूर, विख्यात

(घ) निर्णय, फैसला, नतीजा

2. सुमेल कीजिए

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) आमोद	(i) पदार्थ
(ख) पेय	(ii) लोग
(ग) सैर	(iii) प्रमोद
(घ) उपस्थित	(iv) सपाटा

3. समझकर लिखिए

(क) महान है जो पुरुष — महापुरुष

(ख) विशाल काया वाला _____

(ग) सेवा का भाव रखने वाला _____

(घ) नरक में रहने वाला _____

रचना के क्षण

- **भाव-भूमि–** आप यदि एक अनजान जगह पर अपरिचितों के बीच सहसा पहुँच जाए, तो कैसा अनुभव करेंगे? यदि ऐसा हुआ है, तो उसका वर्णन कीजिए।

कल्पना व चिंतन

- मृत्यु के बाद मिलने वाले, स्वर्ग-नरक, यमराज, चित्रगुप्त आदि के विषय में आपकी क्या कल्पनाएँ व धारणाएँ हैं? स्प कीजिए।

क्रिया-कलाप

- क्या कभी आपको भी तेज़ ज्वर आदि की स्थिति में काल्पनिक रंग, स्थान व लोगों से मिलने का भ्रम हुआ है? यदि ह तो उसके बारे में बताइए। इसी प्रकार के कुछ अन्य हास्य-व्यंग्य ढूँढ़कर पढ़िए।
- 'हँसी का महत्व' विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

- 'जब मैं खूब हँसा/हँसी' इस विषय पर अपना कोई अनुभव कक्षा में सुनाइए।

अध्याय

3. माँ तुझे प्रणाम

माँ और संतान का संबंध संसार का सबसे अधिक प्रेमपूर्ण संबंध माना जाता है। माँ अपनी संतान के लिए बहुत से त्याग करती है; संतान का भी माता के प्रति गहन दायित्व है। यहाँ उसी की चर्चा की गई है-

पुत्र सुपुत्र था। उसने माँ को चारों धामों की यात्रा करवाई। माँ का निधन हुआ, तो उसने विधि-विधान से अंतिम संस्कार किया। गया में पिंडदान करने के बाद उसने आश्वस्त भाव से पुरोहित से कहा- "पंडित जी, आज मैं माँ के संपूर्ण ऋण से उऋण हो गया।"

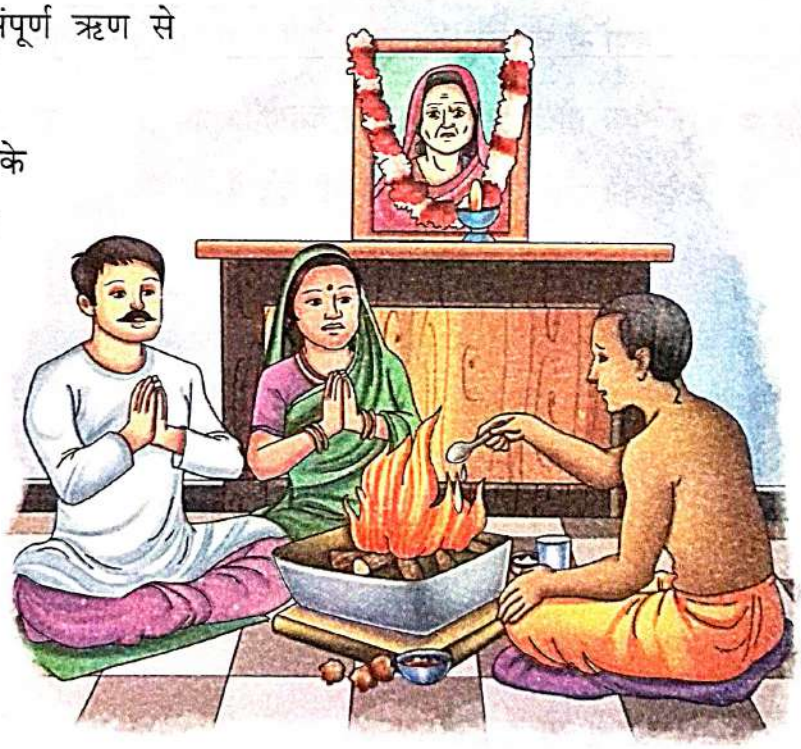

पुरोहित ने मुस्कराते हुए कहा, "यजमान, आप माँ के संपूर्ण ऋण से नहीं, बल्कि, उसके एक लक्षांश मात्र से उऋण हुए हैं।"

"क्या कह रहे हैं पंडित जी? लक्षांश मात्र, यानी सिर्फ एक लाखवाँ हिस्सा?"

"जी हाँ, सिर्फ एक लाखवाँ हिस्सा। जब तुम सिर्फ एक सप्ताह के थे, माघ की कँपकँपाती ठंड की एक रात में तुमने बिस्तर गीला कर दिया था। माँ को बुखार था वह खुद ठंड से काँप रही थी लेकिन उसने तुम्हें गीली जगह से खिसकाकर सूखी जगह पर लिटा दिया और खुद उस गीली जगह पर लेट गई। आज तुम सिर्फ उस एक कर्ज से मुक्त हुए हो।"

पुत्र उदास हो गया। उसे लगा कि माँ की सेवा, उसे तीर्थ-व्रत कराना, उसका अंतिम संस्कार, पिंडदान सब व्यर्थ गया।

पुरोहित ने यजमान की हताशा भाँप ली और कहा, "यजमान, सच तो यह है कि दुनिया में कोई भी संतान माँ के कर्ज से मुक्त हो ही नहीं सकती है। कोई अगर उसके ऋण का लक्षांश भी चुका दे तो वह धन्य हो जाता है।"

सच में कोई भी माँ के ऋण से उऋण नहीं हो सकता। मनुष्य तो छोड़िए, इतिहास और मिथिहास भी माँ के क
से मुक्त नहीं हो सकते हैं। दुनिया की अनेक माँओं ने धीर, वीर, संत, क्रांतिकारी सुपुत्रों को जन्म देकर समय
अपना ऋणी बना दिया है। आइए, कुछ ऐसी ही माँओं के बहाने संपूर्ण मातृसत्ता को प्रणाम करते हैं।

भारतीय महाकाव्यों के सर्वोच्च महानायक थे मर्यादा पुरुषोत्तम राम। उनकी माँ कौशल्या ने राम के रूप में दुनि
को एक ऐसा रत्न दिया, जिनकी चमक आज भी दुनिया को नीति और मर्यादा की राह दिखाती है। कौशल्या ने
दुनिया को उसके दुख दूर करने वाला पुत्र दिया, पर उनके लिए सबसे बड़ा सुख क्या था? सबसे बड़ा सुख
राम की शिशु लीला का साथी बनना।

जब रामचंद्र प्रकट होते हैं तो वे कहती हैं-

"कीजै सिसु लीला, अति प्रिय सीला यह सुख परम अनूपा"

राम भी उनके आग्रह को तुरंत मान लेते है और शिशु बनकर रोना शुरू कर देते हैं-

"सुनि वचन सुजाना रोदन ठाना होई बालक सुरभूपा।"

माँ को यही परम सुख देने के लिए कृष्ण भी यशोदा से जिद करते हैं-

"मैया मैं तो चंद्र खिलौना लैहों" हो या फिर सफाई देते हैं-

"मैया मोरी मैं नहिं माखन खायो"

और वे अपने छोटे होने का तर्क भी देते हैं-

"छींको केहि विधि पायो।"

पुत्र सुपुत्र हो जाए, तो उसका होना ही माँ के जीवन की सफलता है। हर माँ की आकांक्षा होती है कि उसका
यशस्वी हो और हर स्त्री ऐसी माँ को हसरत भरी निगाहों से देखती है। तभी तो महाकवि तुलसीदास की माँ हुल
के लिए कहा गया है-

सुरतिय, नरतिय, नागतिय,
सब चाहत अस होय।
गोद लिए हुलसी फिरें,
तुलसी सो सुत होय।

माँ की शुभ दृष्टि पुत्र के इरादों को वज्र बना देती है। गांधारी का उदाहरण हमारे सामने है। गांधारी ने ताउम्र अपनी आँखों पर पट्टी बाँध रखी थी। केवल एक बार ही आँख से पट्टी खोली थी दुर्योधन को आँख भर शुभाशीष देने के लिए। वह दुर्योधन को निर्वसन अपने पास बुलाती है। कृष्ण इस बात को समझ जाते हैं कि अगर गांधारी की आशीष दृष्टि दुर्योधन के शरीर पर पड़ गई, तो उसका पूरा शरीर

फौलादी हो जाएगा और फिर उसे मारना मुश्किल हो जाएगा। उन्होंने दुर्योधन को सलाह दी कि इस तरह माँ के सामने जाने में तुम्हें शर्म नहीं आती। कम-से-कम एक लँगोटी तो पहन लो। दुर्योधन ने माँ की आज्ञा की अवहेलना की और लँगोटी पहनकर उनके पास पहुँचा। गांधारी की दृष्टि उसके शरीर के जितने हिस्से पर पड़ी वह वज्र का हो गया, लेकिन जितना हिस्सा लँगोटी से ढका हुआ था, उस पर माँ की कृपादृष्टि नहीं पड़ सकी। अंततः जाँघ के उसी हिस्से पर गदा का प्रहार कर भीम ने दुर्योधन का अंत किया।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के व्यक्तित्व निर्माण में उनकी माँ पुतलीबाई की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रही है। पुतलीबाई ने बचपन में ही उनके अंदर ऐसे संस्कार रोप दिए थे, जिससे आगे चलकर वे एक सत्याग्रही महात्मा बन सके और देश को आज़ाद कराने की अहिंसक लड़ाई लड़ सके। जीजाबाई न होती, तो क्या शिवाजी का व्यक्तित्व वैसा ही होता, जैसा वह था। जीजाबाई ने जहाँ उन्हें स्वराज्य स्थापना का स्वप्न और अन्याय तथा अत्याचार के खिलाफ लड़ने का संबल दिया, वहीं उन्हें स्त्री का सम्मान करने की सीख भी दी। शिवाजी माँ के आशीर्वाद से ही एक के बाद एक किला फतह करते गए और स्वराज्य की स्थापना की। जीजाबाई ने जहाँ पुत्र को अपने आदर्शों के अनुसार ढाला, वहीं मैक्सिम गोंकी के उपन्यास 'माँ' की नायिका माँ निलावना अपने क्रांतिकारी पुत्र पावेल के विचारों के अनुसार खुद को ढालती है। एक अनपढ़ धर्मभीरु महिला का इस तरह रूपांतरण होना आसान काम नहीं था। लेकिन जब कोई माँ अपने बेटे के लक्ष्य को अपना लक्ष्य बना ले तो उसके लिए कुछ भी मुश्किल नहीं होता।

आइए मातृसत्ता के इस स्वरूप को नमन करते हुए अपनी माँ, मातृभूमि और मातृभाषा के प्रति अपने कर्तव्य को पुनः-पुनः याद करें।

—अमर्त्य प्रकाश

विद्यार्थियों को माता द्वारा किए जाने वाले त्याग की चर्चा करते हुए माता के प्रति उनके दायित्व का स्मरण कराएँ।

शब्दार्थ

यशस्वी - सुप्रसिद्ध; आश्वस्त - निश्चित; लक्षांश - लाखवाँ हिस्सा; रूपांतरण - रूप बदलना; सुरभूपा - देवताओं के राजा; अवहेलना - उपेक्षा; ऋण - कर्ज से रहित; संबल - सहारा; कृपादृष्टि - कृपा से भरी नजर।

अभ्यास

पाठ से

मौखिक प्रश्न

(क) माँ के प्रति पुत्र ने क्या-क्या कर्तव्य किए?

(ख) पुत्र उदास क्यों हो गया?

(ग) माँओं ने इतिहास को अपना ऋणी कैसे बनाया है?

(घ) भारतीय महाकाव्यों के सर्वोच्च नायक किसे कहा गया है?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) लेखक ने प्रणाम किया है-

(अ) देवों को (ब) ऋषियों को

(स) मातृसत्ता को (द) पितृसत्ता को

(ख) दुनिया को नीति और मर्यादा का पाठ पढ़ाने के लिए कौशल्या ने दिया-

(अ) राम को (ब) भाषण को

(स) राजपाट को (द) दान को

(ग) हर माँ की आकांक्षा होती है कि उसका पुत्र-

(अ) राजनेता हो (ब) राजा हो

(स) ज्ञानी हो (द) यशस्वी हो

(घ) माँ की शुभदृष्टि पुत्र के इरादों को बनाती है-

(अ) मोम (ब) वज्र

(स) कमजोर (द) ठंडा

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) शिवाजी का महान व्यक्तित्व किसकी देन है?

(ख) पुतलीबाई जी के किस कार्य का उल्लेख यहाँ किया गया है?

(ग) कौशल्या के लिए सबसे बड़ा सुख क्या था?

(घ) कृष्ण ने दुर्योधन को क्या सलाह दी और क्यों?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) पाठ में किस स्त्री की चर्चा की गई है, जिसने स्वयं को अपने पुत्र के अनुसार ढाला?

(ख) पाठ के अंत में लेखक ने क्या करने को कहा है?

(ग) पुरोहित ने यजमान को कौन-सा सत्य समझाया?

भाषा-ज्ञान

शब्दों को अलग-अलग करके लिखिए

(क) शुभाशीष = _____ + _____

(ख) निर्वसन = _____ + _____

(ग) धर्मभीरु = _____ + _____

(घ) मातृसत्ता = _____ + _____

2. नीचे दिए गए शब्दों को उचित शीर्षक में लिखिए

क्रांति, सत्याग्रह, अहिंसा, विचार, दुनिया, नीति, मर्यादा, संत, ऋण, संस्कार, खिलौना, चंद्र

स्त्रीलिंग _____ _____ _____ _____

_____ _____ _____ _____

पुल्लिंग _____ _____ _____ _____

_____ _____ _____ _____

3. नीचे दिए गए वाक्यों में उचित कारक चिह्न भरकर उनके भेद लिखिए-

(क) माँ _____ प्रणाम करो। (_____)

(ख) माँ की दृष्टि _____ आशीर्वाद छुपा रहता है। (_____)

(ग) माँ की अवहेलना करने _____ बड़ी कोई धृष्टता नहीं है। (_____)

(घ) माँ पुत्र _____ दोषों _____ दूर करना चाहती है। (_____)

रचना के क्षण

- **भाव-भूमि–** यदि आपको माँ का प्रेम नहीं प्राप्त होता, तो आज आपका व्यक्तित्व कैसा होता? अपने भाव व्यक्त कीजिए।

कल्पना व चिंतन

- हमारी माँ हमसे क्या आशा रखती होंगी? क्या हम उसे जानते हैं और पूरा करने का प्रयास करते हैं? विचार कीजिए।

क्रिया-कलाप

- प्रतिदिन माँ के चरण-स्पर्श कीजिए और उनके प्रत्येक कार्य में सहयोग देने की चेष्टा करते हुए, उचित समय पर उनको धन्यवाद देते रहें।

अध्याय

4.

शिक्षा की आवश्यकता

मनुष्य का गौरव शिक्षा से है, शिक्षा ही मनुष्य को श्रेष्ठ कहलाने का अधिकारी बनाती है कैसे? आइए जानें-

जगत के रचयिता ने तुम्हें शिक्षा पाने के योग्य बनाया है, इसलिए तुम्हारा यह परम कर्त्तव्य है कि तुम जहाँ तक भी तुम्हारी शक्ति में है, वहाँ तक अपने को शिक्षित बनाओ।

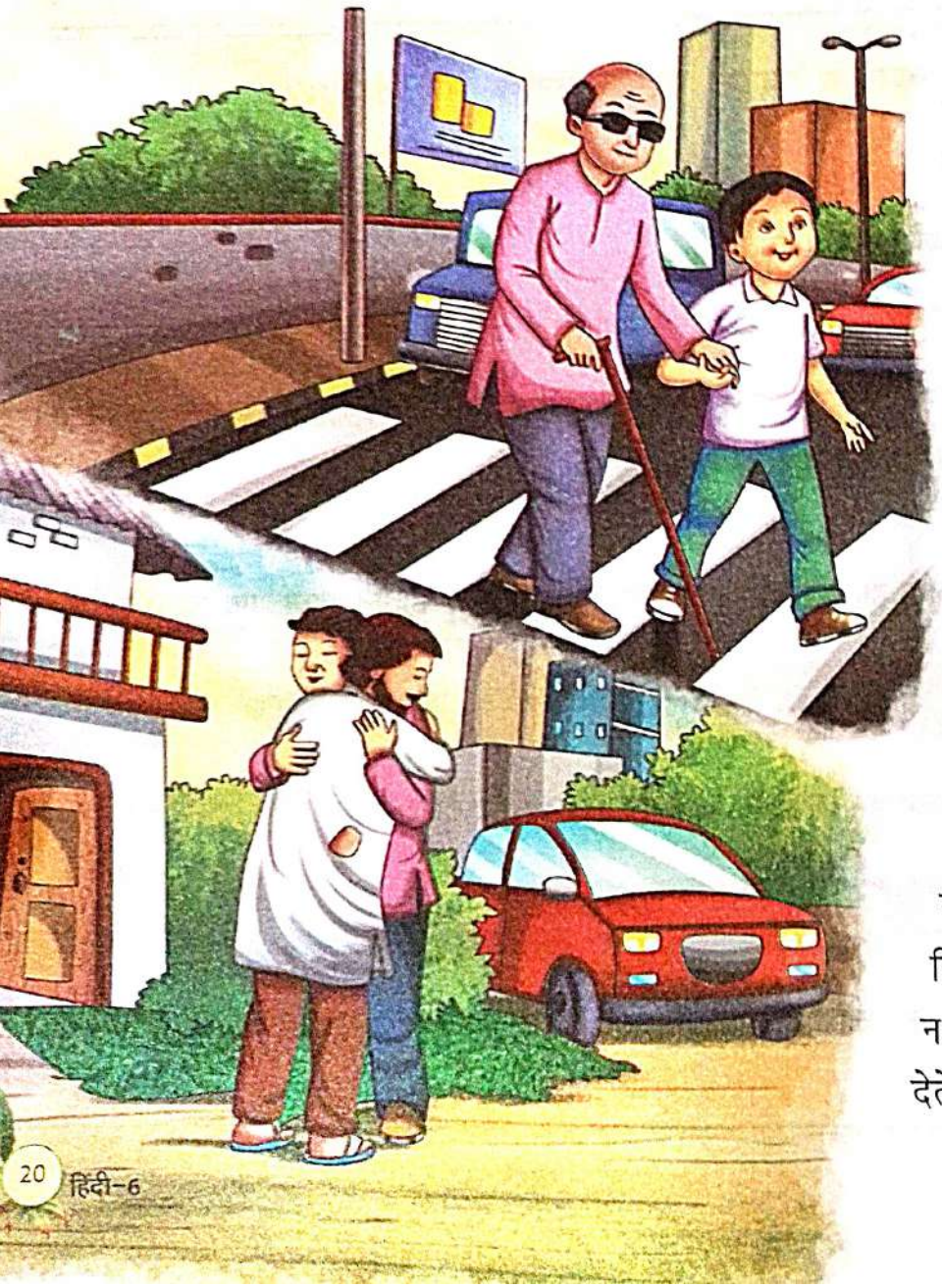

बिना शिक्षा के तुम भलाई तथा बुराई में ठीक-ठीक भेद करने में असमर्थ हो। तुम्हें अपने अधिकारों का ठीक-ठीक बोध नहीं हो सकता। शिक्षा तुम्हारी आत्मा का आहार है। बिना शिक्षा के तुम्हारी शक्तियाँ ठीक उसी प्रकार दबी हुई तथा निष्फल पड़ी रहती हैं, जिस प्रकार जागरूक किसान के परिश्रम के बिना, जल से रहित तथा बिना जोती हुई भूमि में पड़े हुए बीज की उत्पादक शक्ति।

शिक्षा का अर्थ अक्षर ज्ञान नहीं, अपितु सच्ची शिक्षा वह है, जो व्यक्ति को अच्छा इंसान बनाती हो, दूसरों के दुख-दर्द समझने की संवेदना विकसित करती हो। हम जिस समाज से, जिस देश से, दिन-रात कुछ न कुछ लेते रहते हैं, उसे बदले में हम क्या देते हैं?

हम अच्छे इंसान बन भी सके हैं या नहीं। केवल खाने-पीने और पैसा कमाकर मोटर, बंगले खरीदने में अपने जीवन को धन्य मान रहे हैं या किसी बेसहारे को भी कभी सहारा दिया है, कभी किसी लाचार, मजबूर आदमी के आँसू पोंछे हैं? अपने आस-पास के लोगों का दुख-दर्द भी क्या कभी हमें छूता है या नहीं?

यदि केवल पैसा कमाने और अपना उच्च स्तर बनाने में हम जीवन बिता रहे हैं, तो हम केवल साक्षर हैं, पर यदि मानव मात्र की सेवा में अहंकार और स्वार्थरहित होकर अपने जीवन के चाहे कुछ ही पल बिता रहे हों, तो हम शिक्षित हैं। यदि हम सुगंध बनकर फैल सकते हैं, तो हम शिक्षित हैं। यदि सूर्य की भाँति स्वयं तपकर दूसरों को प्रकाश और ऊर्जा देते हैं, तो हम शिक्षित हैं; यदि वृक्षों की भाँति खुद धूप में तपकर औरों को छाया और पत्थर खाकर मीठे फल दे सकते हैं, तो हम शिक्षित हैं।

शिक्षित मनुष्य निज शक्ति के अनुसार राष्ट्र को भी उन्नति की ओर ही खींचता है। स्मरण रखो कि बिना कष्ट सहन तथा स्वार्थ त्याग के संसार का कोई भी महान कार्य सिद्ध नहीं हो सकता। हमारे देश के जो धनाढ्य लोग परोपकार के कामों में अपना धन व्यय करना चाहते हैं, उनके लिए देश के बालक-बालिकाओं के लिए स्कूल तथा कॉलेज खोलने से बढ़कर देशोपकार का और कोई कार्य नहीं हो सकता। जो लोग सार्वजनिक सेवा में अपना समय लगाना चाहते हैं, उनके सामने शिक्षा प्रचार के कार्य से अधिक पवित्र कार्य नहीं हो सकता। यदि देश का प्रत्येक शिक्षित युवक ऊँच-नीच के घृणित विचारों को छोड़कर अपने आस-पास के रहने वाले चार बच्चों को भी प्रतिवर्ष अशिक्षित से शिक्षित बना देने का संकल्प कर लें, तो परिणाम अत्यंत उत्साहवर्धक हो।

जापान का शिक्षा संबंधी इतिहास अत्यंत शिक्षाप्रद तथा उत्साहवर्धक है। जापान में देश का प्रत्येक नागरिक अपनी शक्ति के अनुसार देश के एक, दो व अधिक बच्चों को अपने घर में रखकर उन्हें भोजन, वस्त्रादि एवं शिक्षा देना अपना कर्तव्य समझता था। छोटे से छोटा जापानी अपनी शक्ति के अनुसार इस महान राष्ट्रीय यज्ञ में थोड़ा बहुत भाग अवश्य लेता था। जापानी स्कूलों के अध्यापकों को सदा से बहुत कम वेतन मिलता रहा है, फिर भी ये लोग प्राय: देश के रिवाज़ अनुसार एक-दो विद्यार्थियों को अपने साथ भोजन अवश्य कराते थे। नि:संदेह इस प्रकार के

अद्भुत नि:स्वार्थ व त्याग का ही परिणाम था कि वह देश आज राष्ट्रों की अग्रतम श्रेणी में है। जापान में आ
कहीं भी अशिक्षित पुरुष तथा अशिक्षित स्त्री के दर्शन नहीं होते। हमें विश्वास है कि यह देदीप्यमान उदाहर
हमारे देशभक्त युवकों के लिए कदापि निष्फल नहीं होगा।

एक विशेष बात जो हम कहना चाहते हैं, वह यह है कि हमें शिक्षा संबंधी संस्थाओं में कम व्यय तथा अधि
काम का विचार रखना चाहिए। करोड़ों रुपयों से दो-चार हज़ार विद्यार्थियों को शिक्षा देना भारत देश के लि
बुद्धिमत्ता का कार्य नहीं कहा जा सकता। विशेषकर शानदार बड़ी-बड़ी इमारतों आदि पर धन नाश करने
प्रलोभन हमारे लिए एक अत्यंत हानिकारक प्रलोभन है। जापान में 1900 ई० तक वहाँ के अनेक स्कूल साधार
खपरैल के कच्चे मकानों तथा कहीं-कहीं वृक्षों के नीचे लगते रहे। हमारी शिक्षा जहाँ तक संभव हो, उदार त
सस्ती होनी चाहिए। वस्तुत: वही शिक्षा कहलाने योग्य है, जो हमें उदार तथा मनस्वी बनाती है। हमारे हृदयों
देश-प्रेम, ऐक्य तथा स्वार्थ त्याग का संचार करती हो। यही शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य है।

—गणेश शंकर विद्या

अध्यापन संकेत पाठ के माध्यम से विद्यार्थियों में मानवता व सत्संकारों के बीज उत्पन्न करने की चेष्टा करें।

शब्दार्थ

रचयिता - रचना करने वाला; शिक्षित - पढ़ा-लिखा; असमर्थ - अयोग्य; बोध - ज्ञान; आहार - भोजन; निष्फल - बिना फल के; जागरूक - सजग, सावधान; उत्पादक - उत्पन्न करने की; सुगंध - खुशबू; ऊर्जा - शक्ति; धनाढ्य - धनवान; व्यय - खर्च; घृणित - घृणा करने के योग्य; संकल्प - दृढ़ निश्चय; उत्साहवर्धक - उत्साह बढ़ाने वाला; शिक्षाप्रद - शिक्षा प्रदान करने वाला; अद्भुत - अनोखा; प्रलोभन - लालच; ऐक्य - एकता; वास्तविक - सच्चा; उद्देश्य - लक्ष्य।

अभ्यास

पाठ से

मौखिक प्रश्न

(क) लेखक ने आत्मा का आहार किसे कहा है?

(ख) शिक्षा का क्या अर्थ है?

(ग) किसके बिना कोई महान कार्य सिद्ध नहीं हो सकता?

(घ) किस देश का शिक्षा संबंधी इतिहास अत्यंत शिक्षाप्रद है?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) इस पाठ के लेखक हैं–

(अ) महात्मा गांधी ⬡ (ब) गणेश शंकर विद्यार्थी ⬡

(स) विनोबा भावे ⬡ (द) टालस्टॉय ⬡

(ख) लेखक के अनुसार शिक्षण संस्थान होने चाहिए–

(अ) खर्चीले ⬡ (ब) अति आधुनिक ⬡

(स) सादे ⬡ (द) अमेरिका जैसे ⬡

(ग) शिक्षा का उद्देश्य है–

(अ) धन कमाना ⬡ (ब) यश कमाना ⬡

(स) उदार भावों को भरना ⬡ (द) चतुर बनाना ⬡

(घ) राष्ट्र को उन्नति की ओर खींचता है-

(अ) बल ⬡ (ब) धन ⬡

(स) लघु उद्योग ⬡ (द) शिक्षित मनुष्य ⬡

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) व्यक्ति का परम कर्तव्य क्या है?

(ख) बिना शिक्षा के शक्ति कैसी होती है?

(ग) धनाढ्य परोपकारी व्यक्तियों को लेखक ने क्या परामर्श दिया है?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) आशय स्पष्ट कीजिए– यदि हम सुगंध बनकर फैल सकते हैं, तो हम शिक्षित हैं; यदि सूर्य की भाँति स्वयं तपकर दूसरों को प्रकाश और ऊर्जा देते हैं, तो शिक्षित हैं।

(ख) लेखक के अनुसार शिंक्षा का क्या उद्देश्य है? स्पष्ट कीजिए।

(ग) जापान के किस कार्य को लेखक ने राष्ट्रीय यज्ञ कहा है?

भाषा-ज्ञान

1. पाठ में आए शब्द-युग्मों को ढूँढ़कर लिखिए

_____ _____ _____ _____

_____ _____ _____ _____

2. निम्नलिखित शब्दों का उनके विलोम शब्दों से सुमेल कीजिए

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) निष्फल	(i) भोग
(ख) उदार	(ii) परमार्थ
(ग) उन्नति	(iii) निरक्षर
(घ) साक्षर	(iv) संकीर्ण
(ङ) स्वार्थ	(v) अवनति
(च) त्याग	(vi) सफल

3. निम्नलिखित शब्दों को खोलकर (वर्ण-विच्छेद करके) लिखिए

(क) देशोपकार _____

(ख) प्रतिवर्ष _____

(ग) शिक्षाप्रद _____

(घ) अशिक्षित _____

(ङ) निष्फल _____

रचना के क्षण

- **भाव-भूमि–** किसी उच्च शिक्षित पदाधिकारी को जब आप उसके कर्मचारियों को डाँटते देखते हैं, तो आपके मन में क्या भाव उठते हैं? क्या तब आप उसे वास्तव में सभ्य व भला समझते हैं? बताइए।

कल्पना व चिंतन

- वर्तमान में हमारे देश की जो अवस्था है, उस पर चिंतन कीजिए और इसमें सुधार के पश्चात् इसकी क्या स्थिति होगी, इसकी कल्पना कीजिए।

क्रिया-कलाप

- प्रसिद्ध विचारकों के विचार पढ़िए, जैसे–श्री अरविंदो, विनोबा भावे, महात्मा गांधी, टालस्टॉय, बर्नार्ड शा, सुकरात आदि।
- 'वर्तमान की शिक्षा पद्धति' विषय पर एक वार्ता का आयोजन कीजिए। उसमें अपने साथियों के विचार जानिए।

अध्याय

5.

यह मेरा : यह मीत का

प्रस्तुत संस्मरण में लेखक ने अपने बचपन के उन दिनों को याद किया है, जब उन्हें एक कठिन अभ्यास कराने वाले शिक्षक अनूठे ढंग से शिक्षा दिया करते थे।

हमारे शिक्षक उन शिक्षकों में से थे, जिन्हें 'हार्ड टास्क-मास्टर' कहा जाता है। उनके डर से हम लोग रोज़ का पाठ रोज़ तैयार कर लेते थे। फिर भी दो-तीन बालक ऐसे थे, जो न कुछ याद कर पाते थे, न बताई हुई विद्या को स्मरण रख पाते थे, यद्यपि लिखने का काम वे गलत-सही पूरा कर लेते थे। अध्यापक ने उनके लिए एक युक्ति निकाली! और वह भी एक कहानी, जिसे मैं अब तक भूल नहीं पाया और न ही कभी भूल पाऊँगा।

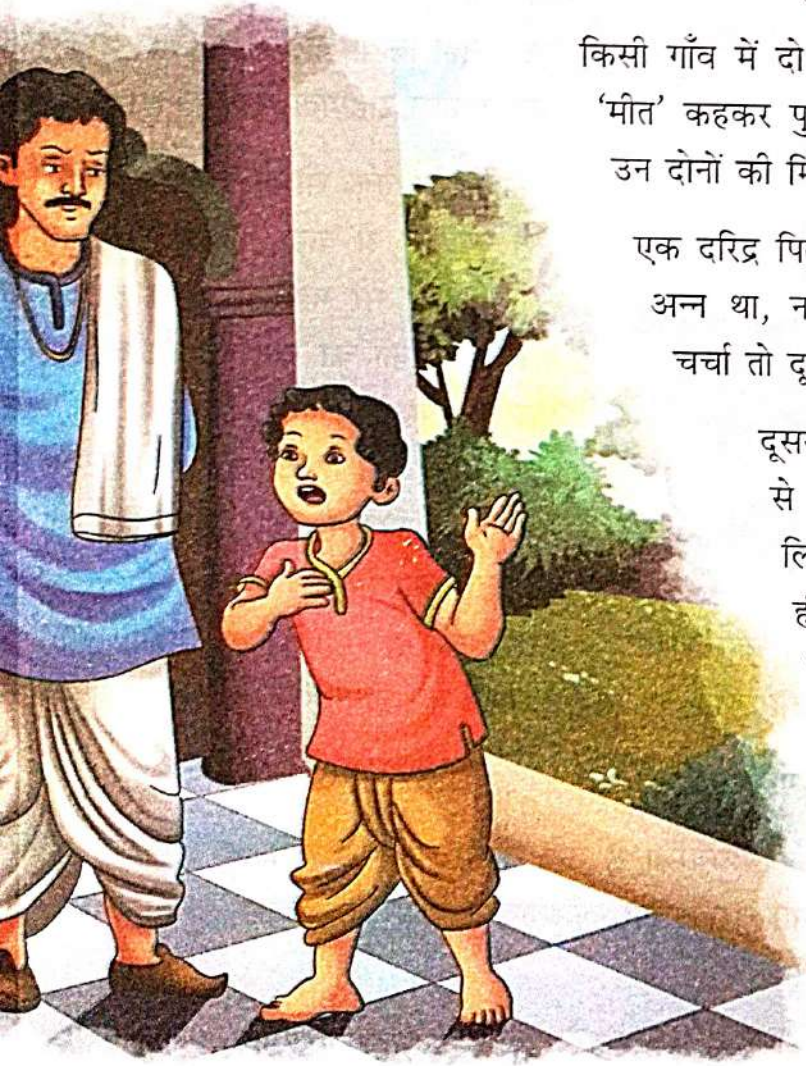

किसी गाँव में दो बालकों में गहरी मित्रता थी। दोनों एक-दूसरे को 'मीत' कहकर पुकारते थे और एक ही गुरु के पास पढ़ने जाते थे। उन दोनों की मित्रता देखकर लोग हैरान थे।

एक दरिद्र पिता का पुत्र था। उसके पास न खाने के लिए पर्याप्त अन्न था, न पहनने के लिए कपड़े। किताब-कॉपी आदि की चर्चा तो दूर की बात थी।

दूसरा धनी व्यापारी का पुत्र था। उसका घर सब तरह से भरा-पूरा था, साथ ही उसके पास अपने मीत के लिए एक हृदय भी था और इस हृदय की प्रेरणा से ही एक दिन वह अपने पिता के सामने अकड़ गया, "यदि दरिद्रता के कारण मेरा मीत पढ़-लिख नहीं सकता, तो मैं भी नहीं पढ़ूँगा। उसकी तरह मैं भी अनपढ़ और दरिद्र ही रहूँगा।"

इस प्रकार उसने अपने मीत के खाने-पहनने और पढ़ाई-लिखाई के सारे खर्च की व्यवस्था अपने पिता से करा ली।

कुछ वर्षों तक पढ़-लिखकर दूसरा बालक व्यवसाय में अपने पिता का हाथ बँटाने लगा, लेकिन अपने मीत के वह सारे खर्च दिलाता रहा, जिससे वह निरंतर प्रगति करता गया। आगे चलकर वह राजनीति, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, इतिहास, साहित्य, ज्योतिष आदि नाना विद्याओं के प्रकांड विद्वान के रूप में प्रतिष्ठित हुआ। उसकी ख्याति सुनकर उस राज्य के राजा ने अपने दरबार में उसका स्वागत किया और उसकी विद्वता पर मुग्ध होकर उसे अपना मंत्री बना लिया। इधर बेचारे व्यापारी के भाग्य पर वज्रपात हो गया। अकस्मात् एक रात डाकुओं ने उसकी सारी संपत्ति लूट ली और जान बचाने के लिए जब उसके परिवार के लोग घर से बाहर निकल आए, तब डाकुओं ने उसका घर भी फूँक दिया। इसी शोक में उसके पिता स्वर्ग सिधार गए। बेचारा दाने-दाने को मुहताज हो गया। परिवार के भरण-पोषण के लिए उसके सामने भीख माँगने के सिवा कोई रास्ता नहीं रह गया था।

एक दिन राजधानी के मार्ग पर अपने पुराने मीत को फटेहाल भिक्षुक के रूप में देख, मंत्री को बहुत दुख हुआ। वह उसे घर ले गया। मीत के परिवार को भी बुलावा भेजा। कुछ दिन खिलाया-पिलाया। एक दिन व्यापारी मित्र बोला – "इस तरह हम कब तक तुम्हारे मेहमान बने रहेंगे? मुझे कुछ धन उधार दे दो, मैं फिर से व्यापार शुरू करूँगा।" राज्य का मंत्री होते हुए भी उसके मीत ने अधिक धन एकत्र नहीं किया था, जिससे वह अपने मित्र की तत्काल सहायता कर सके।

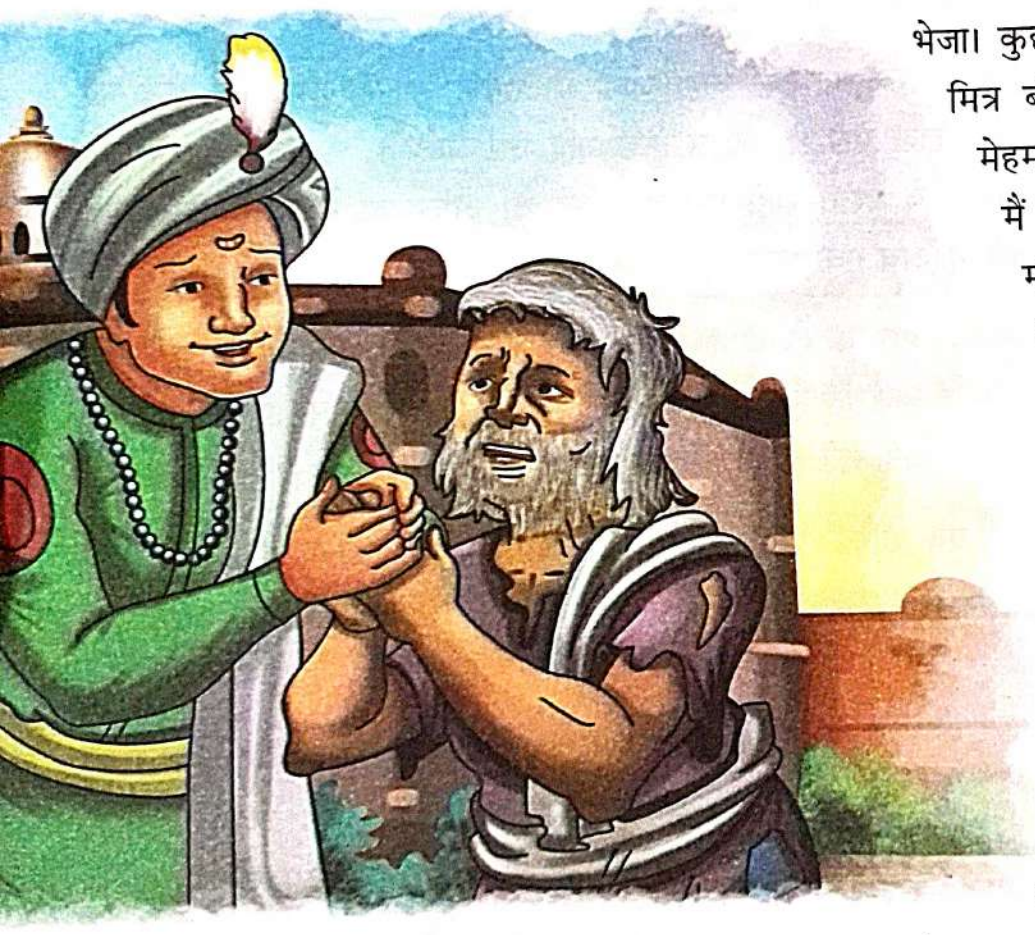

काफ़ी देर तक सोचते रहने के बाद मंत्री ने व्यापारी से कहा, "विपत्ति में घबराना नहीं मीत! मेरे महाराज प्रत्येक पूर्णिमा के दिन याचकों को दान देते हैं। जो याचक सबसे पहले सामने आता है, राजा उसे सौ मुद्राएँ देते हैं, आज से तीसरे दिन अगली पूर्णिमा है। तुम कल रात को वहाँ पहुँचकर मुझसे मिलो। मैं राजा के सामने सबसे पहले तुम्हारे पहुँचने की सारी व्यवस्था कर दूँगा। इस तरह तुम्हें सौ मुद्राएँ मिल जाएँगी। इतने में तुम्हारे परिवार का काम तो सुखपूर्वक चल जाएगा और कुछ व्यापार भी प्रारंभ कर लेना।"

व्यापारी की सूखी आशा-लता जैसे फिर से हरी हो गई।

दूसरे दिन व्यापारी निश्चित स्थान पर पहुँचा। मंत्री की व्यवस्था से उसे सौ मुद्राएँ मिल गईं। वह हँसता हुआ लौटा। अब उसका परिवार कुछ सुख से रहने लगा। उसने नगर लौटकर नए सिरे से व्यापार करने की योजना बनाई। दोनों मीत मिले और एक-दूसरे से विदा हुए।

मंत्री राजकाज में लग गया और उसका मीत अपने व्यवसाय में। अनुभवी और विपत्ति का मारा होने के कारण उसने व्यापार में अपनी पूरी शक्ति और बुद्धि लगा दी। व्यापार चमक उठा।

उधर मंत्री संपन्न था, लेकिन सुखी नहीं। कारण यह था कि उसका बेटा बहुत नालायक था। लाख उपाय करने पर भी वह कुछ पढ़-लिख नहीं पा रहा था। न वह किसी भी सिखाई हुई विद्या को याद रख पा रहा था। मंत्री को अपने मीत की याद आई। जब वह उसके नगर जाने की तैयारी कर रहा था, तो उसके बेटे ने भी साथ चलने की ज़िद पकड़ ली। इसलिए उसे भी साथ लेकर वह अपने मीत के पास पहुँचा। इस बार उसे उतना ही आश्चर्य हुआ, जितना द्वारिका से लौटने पर श्री कृष्ण के मीत सुदामा को हुआ था।

मीत सचमुच लखपति हो गया था। उसने मंत्री का भव्य स्वागत किया। लेकिन मंत्री को तो अपनी ही चिंता सता रही थी। मित्र ने तब उसकी उदासी का कारण पूछा, तो मुँह लटकाए हुए उसने कहा, "क्या कहूँ मीत! तुमसे सहायता प्राप्त कर मैं विद्वान बना, राजमंत्री भी। पर सारी सुविधाएँ होते हुए भी मेरा पुत्र कुछ भी सीख नहीं सका।"

बातचीत के दौरान व्यापारी मीत ने मंत्री-पुत्र के बारे में सारी बातें जान लीं, तो उससे कहा, "बेटे! जानते हो कि पाँच वर्ष पहले मेरा क्या हाल था?"

"हाँ, आप एक दरिद्र याचक थे।"

"शाबाश! अब यह बताओ कि मैं लखपति कैसे हो गया?"

"मुझे नहीं मालूम।"

"तो मैं बताऊँ?"

"बतलाइए।"

"देखो, तुम्हारे पिता की सहायता से मैंने सौ मुद्राएँ राजा से याचक बनकर लीं। उनसे मैंने व्यापार शुरू किया। व्यापार में मैंने शक्ति, भक्ति और बुद्धि लगाई। लाभ होने लगा। हर बार लाभ के दो भाग कर लेता और कहता, यह मेरा है, यह मेरे मीत का। मैं दोनों भागों को अलग-अलग व्यापार में लगाता। इस तरह लाभ बढ़ता गया, व्यापार बढ़ता गया। क्या समझा तुमने?"

"मैं..... मैं....." मंत्री-पुत्र हकलाने लगा। व्यापारी ने प्यार से उसे चूमते हुए कहा, "बेटे! अगर इसी तरह तुम भी एक-एक ज्ञान को, एक-एक विद्या और गुण को अपना समझ लो और अपने लिए तथा अपने मित्रों के लिए दिल और दिमाग में रखते जाओ, तो पाँच वर्षों में तुम क्या बन जाओगे?"

बालक मुस्कराते हुए बोला, "मैं ज्ञान और गुण का लखपति हो जाऊँगा।"

"शाबाश बेटे। तुम्हारी माँ, तुम्हारे पिता और मैं — सभी यहीं चाहते हैं कि तुम विद्या और गुण के लखपति बन जाओ। क्या तुम हमारी यह इच्छा पूरी करोगे?"

"अवश्य! अगली बार मैं उसी रूप में आप से मिलूँगा।" फिर बालक ने अपने पिता से कहा, "पिता जी! अ
अब राजधानी चलिए। मैं आज ही से अपनी पढ़ाई
लगूँगा। मुझे रास्ता मिल गया। अब जो कुछ
समझ में आएगा, सब याद होगा।"

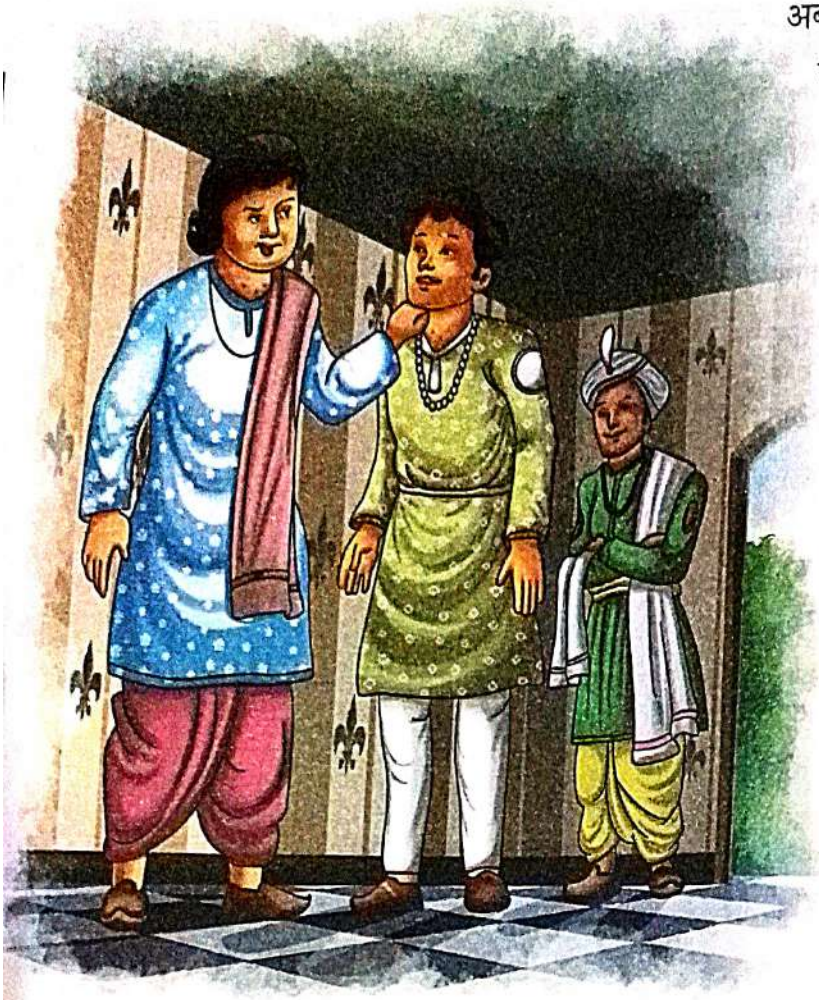

मंत्री समझ गया कि लड़के की बुद्धि खुल
है। उसने मुस्कराते हुए अपने मीत से विदा
राजधानी पहुँचकर उसका पुत्र अध्ययन
चौगुने उत्साह से लग गया। हर रोज़ वह
कुछ सीखता, मन ही मन अपने काल्पनि
मित्र को भी सिखाता। वह कहता, "यह
है, यह मेरे मीत का।" इस तरह हर
दोहराया जाता।

लड़का मन लगाकर पढ़ने लगा। वह विद्य
सीखता गया। अच्छे गुणों से संपन्न होता ग
पाँच वर्ष बाद वह भी प्रकांड पंडित बन ग
और आगे चलकर अपने पिता का उत्तराधिकार
बना।

गुरु जी यह कहानी सबको सुनाते। विशेष रूप से उन शिष्यों को जिनका मन पढ़ाई में लगता ही नहीं था। इ
सीधी-सादी कहानी का सभी शिष्यों पर बड़ा प्रभाव पड़ता। सबमें पढ़ाई-लिखाई के प्रति नया उत्साह भर जात
सब जी-जान से पढ़ने लगते। स्वयं ही नहीं पढ़ते, अपने सहपाठियों को भी पढ़ाते। मीत का भाग भी तो रखना था

—आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेद

अध्यापन संकेत विद्यार्थियों को मित्र के प्रति हमारे क्या नैतिक दायित्व होते हैं, यह समझाते हुए पाठ पढ़ाएँ। आदर्श मित्रों के उदाहरण भी दें।

शब्दार्थ

हार्ड टास्क-मास्टर - दूसरों से बहुत अधिक कार्य करवाने वाले; स्मरण - याद; युक्ति - उपाय; मीत - मित्र; दरिद्र - निर्धन; प्रेरणा - प्रोत्साहन; प्रकांड - धुरंधर; वज्रपात - भीषण अनिष्ट; मुहताज - दरिद्र, कंगाल, विशेष कामना रखने वाला; तत्काल - तुरंत, तभी; नालायक - जो किसी काम को करने के काबिल न हो; याचक - माँगने वाला।

2.

अभ्यास

पाठ से

मौखिक प्रश्न

(क) इस कहानी के लेखक कौन हैं?

(ख) पढ़ाई में मन न लगाने वाले विद्यार्थियों को अध्यापक जी ने किस प्रकार समझाया?

(ग) गाँव के दो मित्र बालक एक-दूसरे को क्या कहकर पुकारते थे?

(घ) धनी व्यक्ति के पुत्र ने अपने पिता से क्या आग्रह किया?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) लेखक अपने बाल्यकाल में कक्षा में पढ़ाया गया पाठ–

(अ) भूल जाते थे ⬡ (ब) याद रखते थे ⬡

(स) कंठस्थ करते थे ⬡ (द) पर कुछ ध्यान नहीं देते थे ⬡

(ख) पाठ में दी गई कहानी सुनाई–

(अ) लेखक ने ⬡ (ब) लेखक की माँ ने ⬡

(स) लेखक के शिक्षक ने ⬡ (द) लेखक के मित्र ने ⬡

(ग) व्यापारी की संपत्ति लूट ली–

(अ) लोगों ने ⬡ (ब) सैनिकों ने ⬡

(स) शत्रुओं ने ⬡ (द) डाकुओं ने ⬡

(घ) गुरु जी द्वारा सुनाई गई कहानी का प्रभाव पड़ता–

(अ) सब पर ⬡ (ब) केवल मेधावी छात्रों पर ⬡

(स) न के बराबर ⬡ (द) परीक्षा देने वालों पर ⬡

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) धनी व्यापारी का पुत्र अपने पिता से क्या चाहता था?

(ख) धनी व्यापारी के पुत्र का मित्र किन विद्याओं का विद्वान बना?

(ग) राजा ने किसे अपना मंत्री बनाया और क्यों?

(घ) मंत्री को क्या देखकर बहुत दुख हुआ?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) मंत्री ने अपने मीत को क्या चिंता बताई?

(ख) व्यापारी ने मंत्री पुत्र को किस प्रकार समझाया?

(ग) व्यापारी की बात सुनकर मंत्री पुत्र ने क्या वायदा किया?

(घ) मंत्री पुत्र पाठ किस प्रकार दोहराता था?

भाषा-ज्ञान

1. विशेषण और विशेष्य अलग-अलग करके लिखिए

चौगुना उत्साह, मंद बुद्धि, तीव्र प्रेरणा, नई चेतना

विशेषण	_____	_____	_____	_____
विशेष्य	_____	_____	_____	_____

2. नीचे दिए गए शब्दांशों और मुहावरों का प्रयोग अपने वाक्यों में कीजिए

(क) दाने-दाने को मुहताज _____

_____

(ख) स्वर्ग सिधारना _____

_____

(ग) आशा-लता _____

_____

(घ) मुँह लटकाना _____

_____

3. निम्नलिखित शब्दों में सही स्थान पर अनुस्वार या अनुनासिक लगाइए

(क) मत्री _____ (ख) सदेश _____

(ग) झाक _____ (घ) फाद _____

4.. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए

(क) राजा _____ (ख) मित्र _____

(ग) दरिद्र _____ (घ) याचक _____

निम्नलिखित तत्सम-तद्भव शब्दों को सुमेल कीजिए

तत्सम	तद्भव
(क) मित्र	(i) पन्ना
(ख) पृष्ठ	(i) दूध
(ग) दुग्ध	(i) घी
(घ) घृत	(i) मीत

रचना के क्षण

भाव-भूमि– इस पाठ का मुख्य भाव क्या है अथवा इसमें किस तथ्य पर यहाँ बल दिया गया है? बताइए।

कल्पना व चिंतन

कल्पना कीजिए, यदि दोनों मित्र एक-दूसरे की सहायता न करते, तो क्या हुआ होता?

क्रिया-कलाप

संस्मरण किसे कहते हैं? पता लगाइए। हिंदी के कुछ प्रमुख संस्मरण लेखकों के नाम लिखिए।

'सच्चे मित्र का जीवन में स्थान' इस विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

अध्याय

6. ज़िंदगी कैसे चलेगी

प्रस्तुत कविता में कवि बता रहे हैं कि पेड़ों के बिना हमारा जीवन नहीं चल सकता। पेड़ हमें बहुत-सी उपयोगी वस्तुएँ प्रदान करते हैं, जिनमें सर्वप्रमुख प्राणवायु ऑक्सीजन है।

पेड़ सहकर धूप ख़ुद,
देते सभी को छाँव अपनी।
मदद करने को बढ़ाते,
डालियों-सी बाँह अपनी।

खींचते रहते निरंतर,
ये हवा गंदी हमारी।
है हमें मिलती इन्हीं से,
प्राणवायु विशुद्ध सारी।

सींचते धरती हमारी,
बादलों को भी बुलाते।
जब बरसता खेत, उपवन,
वन सभी हैं लहलहाते।

जाएँ उनको काटते ही,
तो मिलेगी छाँह कैसे?
मदद करने को बढ़ेगी
डालियों की बाँह कैसे?

और लेते साँस भी फिर
प्राणवायु कहाँ मिलेगी?
प्राणवायु नहीं मिली तो
ज़िंदगी कैसे चलेगी?

—द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

अध्यापन संकेत

बच्चों को पेड़ों का महत्व बताएँ कि वे हमारे लिए किस प्रकार उपयोगी हैं। पेड़ों को काटने से होने वाली हानियों के बारे में भी बताएँ।

शब्दार्थ

छाँव - छाया; मदद - सहायता; प्राणवायु - ऑक्सीजन; उपवन - बाग; ज़िंदगी - जीवन; साँस - श्वास।

अभ्यास

कविता से

मौखिक प्रश्न

(क) पेड़ सभी को अपनी क्या देते हैं?

(ख) पेड़ किस प्रकार प्राणवायु को शुद्ध करते हैं?

(ग) प्रस्तुत कविता में कवि क्या कहना चाहते हैं?

(घ) इस कविता के रचयिता कौन हैं?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) पेड़ों की डालियों को कैसा बताया गया है?

(अ) हृदय जैसा ⬡ (ब) टाँग जैसा ⬡

(स) बाँह जैसा ⬡ (द) रस्सी जैसा ⬡

(ख) पेड़ क्या खींचते रहते हैं-

(अ) गंदी हवा ⬡ (ब) साफ़ हवा ⬡

(स) दोनों ⬡ (द) इनमें से कोई नहीं ⬡

(ग) पेड़ धरती को सींचने के लिए बुलाते हैं-

(अ) चिड़ियाओं को ⬡ (ब) बादलों को ⬡

(स) किसानों को ⬡ (द) मालियों को ⬡

(घ) प्राणवायु नहीं मिली, तो क्या होगा?

(अ) हम मर जाएँगे

(ब) हम बीमार हो जाएँगे

(स) हम जी जाएँगे

(द) इनमें से कोई नहीं

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

इन पंक्तियों के अर्थ स्पष्ट कीजिए–

(क) जब बरसता – खेत, उपवन, वन सभी हैं लहलहाते।

(ख) प्राणवायु नहीं मिली, तो ज़िंदगी कैसे चलेगी?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) हमें शुद्ध प्राणवायु (ऑक्सीजन) कैसे मिलती है?

(ख) पेड़ों को काटने पर क्या होगा?

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों को उनके विलोम शब्दों से सुमेल कीजिए

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) धूप	(i) पराई
(ख) अपनी	(ii) मौत
(ग) निरंतर	(iii) दूषित
(घ) विशुद्ध	(iv) छाँव
(ङ) ज़िंदगी	(v) कभी-कभी

2. पढ़िए और समझिए

(क) पेड़,	वृक्ष,	तरु,	विटप
(ख) हवा,	वायु,	पवन,	समीर
(ग) बादल,	मेघ,	घन,	जलधर
(घ) धरती,	धरा,	वसुधा,	अचला

3. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए

(क) पेड़ सभी को अपना छाया देती हैं।

(ख) पेड़ों से हमेशा शुद्ध वायु मिलता है।

(ग) वर्षा होने पर सभी लहलहाता हैं। _____

(घ) प्राणवायु नहीं मिला तो ज़िंदगी कैसे चलेगा? _____

रचना के क्षण

- **भाव-भूमि–** कविता पढ़कर पेड़ों के लिए आपके मन में जो भाव उभरें, उन्हें व्यक्त कीजिए।

कल्पना व चिंतन

- कल्पना कीजिए, यदि संपूर्ण विश्व के पेड़ काट दिए जाएँ, तो क्या होगा।

क्रिया-कलाप

- पेड़ों को बचाने के लिए अपनी कक्षा में एक पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित कीजिए।
- 'पेड़ों का महत्व' विषय पर निबंध लिखिए।

अध्याय

7.

ऐसे थे प्रेमचंद

प्रेमचंद एक महान साहित्यकार थे। उनके साथ बिताए गए कुछ समय का चित्रण यहाँ लेखक ने किया है, जिससे प्रेमचंद जी के उदार चरित्र का पता चलता है।

प्रेमचंद से मेरी मुलाकात सन् 1929 में हुई। जाड़ों के दिन थे। कुंभ का मेला पूरा हुआ ही था; बनारस से गाड़ी लखनऊ स्टेशन पर कोई चार बजे आ लगी थी। तड़का फूटते मैं उनके लाल मकान पर पहुँचा, लेकिन वहाँ पहुँचना आसान न हुआ। सोचता था कि नामवर आदमी है, लाल मकान का पता अपने पास है ही, एक बच्चा भी वह जगह बता देगा। पर बात उतनी सीधी न निकली। एक-डेढ़ घंटा मुझे लगा अमीनाबाद के पास के मकान को पाने में, और मालूम हुआ कि आत्मा, हृदय और दिमाग की ऊँचाई तथा दुनियादारी की बड़ाई एक चीज़ नहीं है।

मकान के नीचे ज़ीने से आवाज़ देने पर ऊपर प्रेमचंद प्रकट हुए, तो सहसा मन को धक्का लगा। वे देवोपम नहीं मालूम हुए और मैं कुछ वैसी ही आस बाँधे था। आगे बालों से माथा ढका हुआ घनी बड़ी मूँछें; करीब घुटनों तक बँधी धोती, कंधों पर लाल किनारी की घिसी-पिटी चादर - कुल मिलाकर जो दृश्य आँखों के सामने पड़ा निश्चय ही मनोहारी न था। लेकिन देखते-देखते वह व्यक्ति लपककर ज़ीने से नीचे आया। फौरन मेरे हाथ से सामान की छोटी-मोटी चीज़ें छीनीं, और मुझे इस तरह ऊपर ले चला कि मैं समझ ही न सका कि मैं यहाँ अजनबी हूँ या क्या। ऊपर दालान में एक तरफ़ मिट्टी का ढेर था, पानी की एक मोटी लकीर बनाती हुई इस कोने से उस कोने को मिला रही थी। सहन के बराबर वाले कमरे में, जिसमें हम दाख़िल हुए उसमें किताबें-कॉपियाँ, मेज़-मूढ़ों पर बेतरतीब खड़ी और पड़ी थीं, और स्याही के धब्बे भी वहाँ होने के लिए हर प्रकार

से स्वतंत्र थे। किताबों को झट इधर-उधर सरकाकर मेरे लिए मूढ़े पर जगह हुई, और हम लोग गप करने बैठ गए,

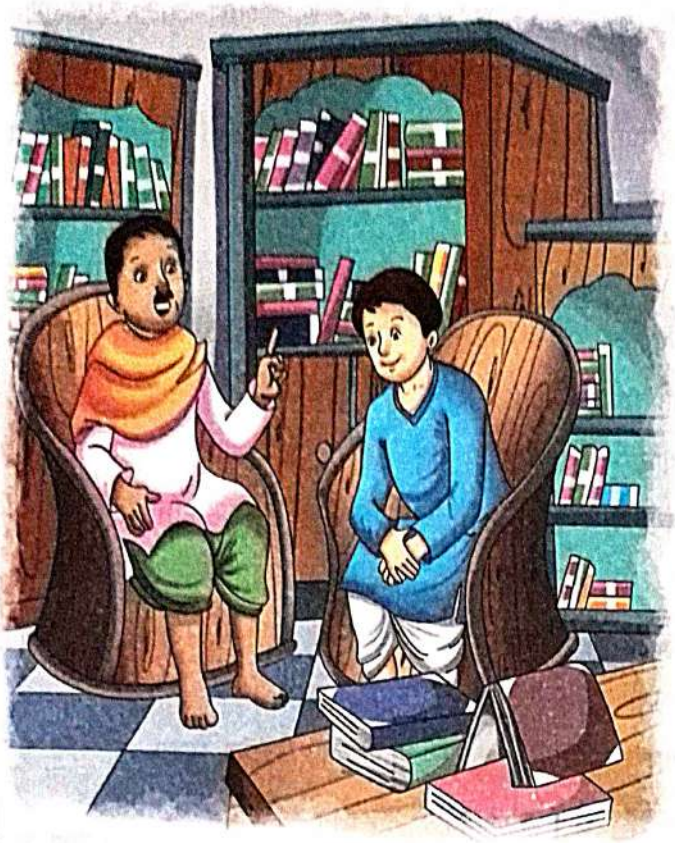

ऐसे कि न जाने कब के दोस्त हैं। मैं कच्ची उम्र का अनाड़ी लड़का, वे एक पहुँचे हुए बुज़ुर्ग। वे साहित्य के सम्राट, उसी के तट पर आदर-झिझक के साथ झाँकने वाला उत्सुक मैं प्रार्थी। पर प्रेमचंद की सहृदयता काल-पात्र का यह फ़र्क न डाल सकी। मैं तक अपनी हीनता भूल गया और असंभव नहीं कि उस समय चर्चा में कुछ अनधिकृत बात तक मैं कह गया होऊँ।

कब नौ बज गए, पता न चला। आख़िर अंदर से ताकीद आई कि दिन चढ़ गया, दवा नहीं लाकर दी जाएगी? तब वे दुनिया की तरफ़ जागे और जल्दी से पैर में स्लीपर डाल, तकिए से शीशी खींच, नुस्खा तलाश कर दवा लेने दौड़े। कहा, "तुम हाथ-मुँह धोओ, मैं अभी आया।"

प्रेमचंद का रूप यह था और सब जगह, सब समय शायद यही रहता था। दुनिया में कुछ कृत्रिमता भी चाहिए, ज़्यादा खुले और हार्दिक रहने का यहाँ क़ायदा नहीं है। जान पड़ता है, प्रेमचंद को दुनिया के इस ज़रूरी क़ायदे का ख़्याल दिमाग़ी तौर पर अगर था, तो अमल में उसे साथ नहीं रख पाते थे।

खा-पीकर बोले, "चलो जैनेंद्र दफ़्तर चलें।" मकान से उतरकर मैंने देखा कि हज़रत ने अमीनाबाद से ताँगा नहीं, इक्का लिया। मैं एक अच्छे से ताँगे को देखकर उससे बातचीत करना चाहता था, पर वे बोले, "नहीं, इक्के से चलेंगे। ताँगा हमें खींचता है, इक्के पर हम सवार होते हैं। वही बात हुई कि मुँह हमारा इधर है और खिंच हम पीठ की तरफ़ रहे हैं।"

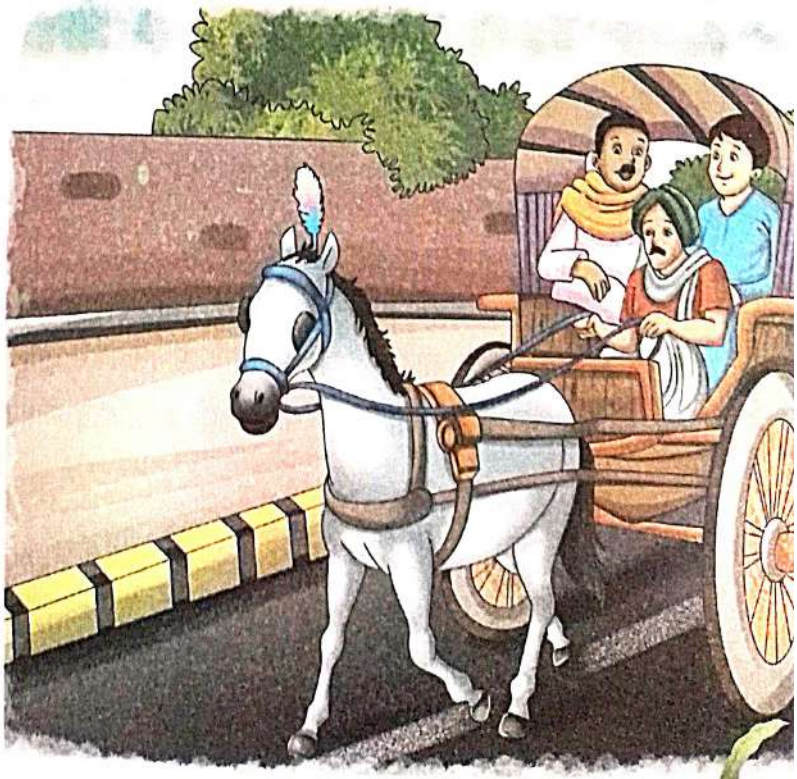

"अपनी चीज तो इक्का है", कहकर कहकहा लगाया, और एक इक्के वाले से इस तरह संबोधन किया, मानो वह इनका कोई जिगरी दोस्त हो। दफ़्तर में पहुँचकर और बैठकर भी कोई दफ़्तरीपन उन पर मैंने चढ़ा नहीं देखा। काम भी हो सकता था और हँसी-ठट्ठा भी।

उस वक्त तो एक ही दिन मैं उनके साथ ठहर सका और उसी रात वहाँ से चला आया। लेकिन उन चंद घंटों
हमेशा के लिए मुझे प्रेमचंद का बना दिया। तब 'हंस' निकालने का ख़्याल चल रहा था। ईश्वरी प्रसाद उसके लि
चरित्र तैयार करके लाए थे, और उसी दिन टॉलस्टाय के ग्रंथों का अनुवाद लेकर रूद्रनारायण वहाँ आए थे। दोन
के प्रति उनका व्यवहार देखकर मुझे अचंभा हुआ। याद पड़ता है, पहले ही मौके पर मैं उनसे पूछ बैठा कि
अख़बार की नौकरी में पड़ने की ऐसी क्या मजबूरी उन्हें होनी चाहिए थी? छोड़िए; छुट्टी लीजिए।

आपकी कलम क्या आपके लिए सब कुछ नहीं हो सकती? इस सवाल पर वे ताज़्जुब से मेरी तरफ़ गए। समझ
गए कि मैं अनुभव से कोरा हूँ, पर नाराज़ नहीं हुए। ज़िंदगी की अपनी लंबी दास्तान ले बैठे। बताया कि कैसे एक
नौकरी से दूसरी नौकरी में गए, इस मुदर्रिसी से वह मास्टरी की। आख़िर प्रेस खोला, प्रेस से तंग आकर उसे
ताला डाल घर बैठे। बोले, "सुनो, एक जगह से पाँच सौ रुपये आने वाले थे, पर दिन इंतज़ार दिखा जाते थे
आख़िर एक दिन ढाई सौ पहुँच ही गए। सब नोट ज्यों के त्यों मैंने श्रीमती जी हाथ में दिए। उन्होंने पूछा—कित
हैं? मैंने कहा—ढाई सौ। झल्लाकर बोलीं, ढाई सौ, और ज़ोर से हाथ को झटककर उन्होंने सारे नोट दालान
फेंक दिए, और मुझे उस वक्त वह-वह सुननी पड़ी कि क्या बताऊँ। तंगी में दिन गुज़र रहे थे, सो तो था, लेकि
तब आस तो लगी थी पाँच सौ की रकम पर। उसकी जगह जो आए ढाई सौ, तो पत्नी का धीरज छूट गय
पब्लिशर को तो क्या, सब कुछ मुझको सुनना पड़ा। उसके बाद जो इस जगह का ऑफ़र मिला, तो मैंने इ
कबूल कर लिया। बताओ, क्या तुम नहीं करते? अब रोज़-रोज़ का तो रोना नहीं है।"

दिल्ली से लौटने के बाद फिर ख़तों-किताबत का सिलसिला शुरू हो गया। दूसरी मर्तबा मिलना हुआ, तो कु
बड़ी मज़ेदार बातें हुई। उस समय उन्होंने मकान बदल लिया था। एक दूसरे मित्र भी लखनऊ में रहते थे, उन
बात हुई कि चलो, प्रेमचंद के यहाँ चलें। नौकर को हुक्म हुआ कि सवारी लाए। उसने इक्का लाकर खड़ा कि
मित्र की रुचि के लायक वह भी नहीं निकला। आखिर एक फैंसी रईसी बग्घी लाई गई। मित्र ने रेशमी शेरव
पहन, उसकी जोड़ का चुस्त पज़ामा, बढ़िया पॉलिश की शू और सफ़ेद झकझकी टोपी बाँकी करके लगाई, पह
प्रेमचंद के यहाँ। वहाँ दरवाज़े के पास आते हैं कि देखते क्या हैं, कि बगल से उसी वक़्त तेज़ चाल से चले
रहे हैं प्रेमचंद। बगल में छड़ी है, दूसरे हाथ में झोला। झोले में से ताज़ा शाक-सब्ज़ी झाँक रही है। बदन पर ख़ा
कुरता, धोती उसी नमूने की ऊँची बँधी हुई है। साफ़ था कि कदमों से लंबी राह नापते आ रहे हैं। इस दृश्य के
दो विरोधी नमूने भूलते नहीं हैं।

प्रेमचंद की सबसे बड़ी ख़ूबी यह थी कि वे हर तरफ़ से साधारण थे। इस तरह वे जनता और जन प्रतिनिधि
ख़ास तो हर कोई बनना चाहता है, आम लोगों से मिलकर ख़ुद खत्म होना कोई नहीं चाहता। प्रेमचंद की
वही साधना थी और इसके लिए मेरे जैसा आदमी उनके प्रति जितना कृतज्ञ हो, थोड़ा है।

—जैनेंद्र कुम

बच्चों को प्रेमचंद की सादगी के बारे में बताएँ तथा प्रेमचंद द्वारा लिखी गई अन्य रचनाओं के बारे में भी बताएँ।

शब्दार्थ

मनोहारी - मन को मोहने वाली; प्रार्थी - प्रार्थना करने वाला; ताकीद - निर्देश; ताज़्जुब - हैरानी; मर्तबा - दोबारा; ख़तों-किताबत - चिट्ठी-पत्री; देवोपम - देवों के समान; अनधिकृत - बिना अधिकार के; कृत्रिमता - बनावटीपन; उत्सुक - जिज्ञासु; अमल - व्यवहार; हार्दिक - दिल से।

अभ्यास

पाठ से

मौखिक प्रश्न

(क) प्रेमचंद जी से लेखक की मुलाकात कब हुई थी?

(ख) लेखक को प्रेमचंद जी का मकान ढूँढ़ने में कितना समय लग गया?

(ग) प्रेमचंद जी से मिलकर लेखक क्या भूल गया?

(घ) लेखक के अनुसार दुनिया में रहने के लिए क्या व्यवहार करना पड़ता है?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) लेखक पूछ रहा था–

(अ) सोतीगंज कहाँ है?

(ब) लाल मकान कहाँ है?

(स) जवाहर चौक कहाँ है?

(द) शीशे वाली गली कहाँ है?

(ख) प्रेमचंद जी को देखकर लेखक को लगा–

(अ) धक्का

(ब) कि जैसी कल्पना थी, वह सही थी

(स) कि वे बिल्कुल अलग थे

(द) इनमें से कोई नहीं

(ग) लेखक ने प्रेमचंद को कहा है–

(अ) निर्धन दुखियारा

(ब) विदूषक

(स) साहित्य सम्राट

(द) अवसरवादी

(घ) प्रेमचंद ने लेखक को सुनाई–

(अ) एक कहानी

(ब) एक कविता

(स) एक गजल

(द) ज़िंदगी की दास्तान

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) प्रेमचंद ने अमीनाबाद से कौन सी सवारी ली?

(ख) प्रेमचंद दफ़्तर का कार्य किस प्रकार पूरा करते थे?

(ग) प्रेमचंद जी की पत्नी का धीरज कब छूट गया?

(घ) लेखक का मित्र प्रेमचंद से मिलने के लिए किस प्रकार गया?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) आशय स्पष्ट कीजिए–'खास तो हर कोई बनना चाहता है, आम लोगों से मिलकर खुद खत्म होना कोई चाहता। प्रेमचंद की जैसे वही साधना थी।'

(ख) लेखक को कौन से दो विरोधी नमूने भूलते नहीं हैं?

(ग) जब लेखक दूसरी बार प्रेमचंद जी से मिला, तो उनका हुलिया कैसा था?

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों को उनके समानार्थी शब्दों से सुमेल कीजिए

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) खूबी	(i) राशि
(ख) रकम	(ii) समय
(ग) व़क्त	(iii) अगुआ
(घ) मनोहारी	(iv) विशेषता
(ङ) प्रतिनिधि	(v) सुंदर

2. शब्दों को सही वर्ग में लिखिए–

कृतज्ञ, खास, प्रतिनिधि, दास्तान, मास्टरी, ऑफर, पब्लिशर, कबूल, फैंसी, रकम, पॉलिश

हिंदी	उर्दू	अंग्रेज़ी
_____	_____	_____
_____	_____	_____
_____	_____	_____
_____	_____	_____
_____	_____	_____

3. निम्नलिखित वाक्यांशों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए

(क) अनुभव से कोरा _____

_____

(ख) यह नापते हुए _____

_____

(ग) लंबी दास्तान _____

_____

रचना के क्षण

भाव-भूमि– क्या आपको भी प्रेमचंद जी जैसे किसी सरल व्यक्ति से मिलकर प्रसन्नता का गहरा अनुभव हुआ है? यदि हाँ, तो उस अनुभव को बताइए।

कल्पना व चिंतन

क्या अति साधारण वेशभूषा में प्रतिभाशाली व्यक्तित्व का आम जनता सही आकलन करती है, अथवा रईसी ठाठ-बाट में व्यक्ति की तुच्छ मानसिकता छुप सकती है? इस विषय पर अपनी सम्मति दें।

यदि आपको आपके मनचाहे प्रसिद्ध व्यक्ति के साथ समय बिताने का अवसर मिले, तो आप क्या करेंगे? बताइए।

क्रिया-कलाप

प्रेमचंद द्वारा रचित कुछ कृतियों के नाम लिखिए। कृति के सामने यह भी लिखिए कि वह कौन सी विधा से संबंधित है– गद्य, कहानी, उपन्यास, अथवा निबंध आदि।

प्रेमचंद जी ने मुश्किलों का सामना हँसते-हँसते किया। इस संदर्भ में यह कविता पढ़िए कि हमारा रवैया संकटों के समय कैसा होना चाहिए।

मुस्कराना धर्म है

जिन मुश्किलों में मुस्कराना हो मना,
उन मुश्किलों में मुस्कराना धर्म है!

जिस वक़्त जीना ग़ैर मुमकिन-सा लगे,
उस वक़्त जीना फ़र्ज़ है इंसान का,
है ज़रूरी लहर के संग खेलना तब,
जब हो समुंदर पर नशा तूफ़ान का,
जिस वायु का दीपक बुझाना ध्येय हो,
उस वायु में दीपक जलाना धर्म है!

जिन मुश्किलों में मुस्कराना हो मना,
उन मुश्किलों में मुस्कराना धर्म है।

हो ही नहीं मंज़िल कहीं जिस राह की,
उस राह चलना चाहिए संसार को,
जिस दर्द से सारी उमर रोते कटे,
वह दर्द पाना है ज़रूरी प्यार को,
जिस चाह का हस्ती मिटाना नाम है,
उस चाह पर हस्ती मिटाना धर्म है!

जिन मुश्किलों में मुस्कराना हो मना,
उन मुश्किलों में मुस्कराना धर्म है।

जब हाथ से टूटे न अपनी हथकड़ी,
तब माँग लो ताकत स्वयं ज़ंजीर से,
जिस दम न थमती हो नयन-सावन झड़ी,
उस दम हँसी ले लो किसी तस्वीर से,
जब गीत गाना गुनगुनाना जुर्म हो,
तब गीत गाना गुनगुनाना धर्म है!

जिन मुश्किलों में मुस्कराना हो मना,
उन मुश्किलों में मुस्कराना धर्म है।

—गोपालदास 'नी

- इसी प्रकार की कुछ अन्य प्रेरणादायक कविता की आठ-दास पंक्तियाँ यहाँ लिखिए–

अध्याय

8.

विज्ञापन युग

विज्ञापन व्यक्ति की सोच-विचार और निर्णय क्षमता को अप्रत्यक्ष रूप से गहराई से प्रभावित करते हैं। इस तथ्य को लेखक ने बड़े ही रोचक ढंग से अभिव्यक्त किया है।

मेरे पड़ोसियों की मुझ पर ऐसी कृपा है कि रात को सोने तक और सुबह उठने के साथ ही मुझे गज़लें, भजन, गीत और उनके साथ-साथ चाय, तेल और सिरदर्द की टिकियों के विज्ञापन सुनने पड़ते हैं। अब तो मुझे इन विज्ञापनों की ऐसी आदत हो गई है कि अन्यत्र भी कहीं मैं गालिब की गज़ल सुनता हूँ या सूरदास का भजन सुनता हूँ या कोई अच्छा-सा गीत सुनता हूँ, तो मेरे दिमाग में अपने आप ये शब्द गूँजने लगते हैं– 'क्या आपके सिर में दर्द रहता है'? सिरदर्द से छुटकारा पाइए! ..... की एक गोली लीजिए–सिरदर्द गायब।'

परिणाम यह है कि अब मेरे लिए कोई गज़ल, गज़ल नहीं रही, कोई गीत, गीत नहीं रहा, सब किसी न किसी चीज़ का विज्ञापन बन गए हैं। दिनभर ये गीत और विज्ञापन मेरा पीछा करते हैं। पहले बहुत मीठे गले से 'रहना नहीं देश बिराना है' की लय और उसके बाद– 'क्या आपके शरीर में खुजली होती है? खुजली का नाश करने के लिए एक ही रामबाण औषधि है.....।' कर लें, भगत कबीर क्या करते हैं? खुजली कंपनी उनकी जिस रचना पर चाहे अपनी मोहर चस्पा कर सकती है।

और बात गीतों-गज़लों तक ही सीमित नहीं है। मुझे लगता है कि मेरे चारों ओर हर चीज़ का एक नया मूल्य उभर रहा है, जो उसके आज तक के मूल्य से सर्वथा भिन्न है और जो उसके रूप को मेरे लिए बिल्कुल बदल दे रहा है। कोई चीज़ ऐसी नहीं, जो किसी न किसी रूप में किसी न किसी चीज का विज्ञापन न हो। अजंता के चित्र और एलोरा की मूर्तियाँ कभी अछूती कला का उदाहरण रही होंगी, परंतु आज उस कला को एक नई सार्थकता प्राप्त हो गई है। उन मूर्तियों का केश-सौंदर्य आज मुझे एक तेल की शीशी

की याद दिलाता है, उनकी आँखें एक फ़ार्मेसी का विज्ञापन प्रतीत होती हैं और उनका समूचा कलेवर एक पेंट कंपनी की कलाभिरुचि को प्रमाणित करता है। जिन हाथों ने उन कलाकृतियों का निर्माण किया था, वे हाथ आज एक बिस्कुट कंपनी की विकास योजना के विज्ञापन के रूप में सार्थक हो रहे हैं।

देश के कोने-कोने में बिखरे हुए जितने मंदिर हैं, जितने पुराने किले और खंडहर हैं, जितने स्तंभ और स्मारक वे सब इसलिए हैं कि लोगों में यातायात की रुचि जाग्रत हो, पर्यटन व्यवसाय को प्रोत्साहन मिले, विदेश से आकर उनकी तस्वीरें लें और अपनी प्रियतमाओं के पास भेजें। मीनाक्षी रामेश्वरम के शिखर और खजुराहो के कक्ष इस दृष्टि से भी उपयोगी कि वे एक विशेष ब्रांड के सीमेंट की मज़बूती को व्यक्त करने प्रतीक बन सकें।

कश्मीर की सारी पार्वत्य सुषमा, वहाँ की नवयुवतियों का सौंदर्य और वहाँ के कारीगरों की दिन-रात की मेहनत, ये इस बात को विज्ञापित करने के लिए हैं कि सफ़ेद रंग का शहद, जो बंद डिब्बों में मिलता है, सबसे अच्छा शहद है।

बर्नार्ड शॉ के नाटक हमें यह बताने के लिए छापे जाते हैं ब्रिटेन के किस प्रेस में छपाई सबसे अच्छी होती है, प्रशांत में अणु बम हमें इस बात की चेतावनी देने के लिए गिराए हैं कि जब तक हम अपने लिए जीवन बीमा की पॉलिसी न ले लें, तब तक हमारे बच्चों का भविष्य सुरक्षित है। भारत और पाकिस्तान में कश्मीर के लिए लड़ाई सिर्फ़ इसलिए होती है कि वहाँ के सेबों का मुरब्बा अच्छा होता है, जिसे सिर्फ़ एक ही कंपनी तैयार करती है......।

विधना ने इतनी बारीकबीनी से यह जो धरती बनाई है और मनुष्य ने विज्ञान के आश्रय से उसमें जो चार लगाए हैं; वे इसलिए कि विज्ञापन कला के लिए उपयुक्त भूमि प्रस्तुत की जा सके। उत्तरी ध्रुव से दक्षिण तक कोई कोना ऐसा न बचा होगा, जिसका किसी न किसी चीज़ के विज्ञापन के लिए उपयोग न किया ज हो। हर चीज़ हर जगह अपने अलावा किसी भी चीज़ और किसी भी जगह का विज्ञापन हो सकती है।

गेहूँ की फसल एक कपड़े की मिल का विज्ञापन है, क्योंकि नई फसल से प्राप्त हुए नए पैसे का एक ही उ है कि उससे कपड़ा खरीदा जाए। कपड़े की मिल डबल रोटी की बेकारी का विज्ञापन है, क्योंकि मिल मे करने वाले तभी काम पर जा सकते हैं, जब वे डबल रोटी खा चुकें। और बेकरी वॉटर प्रूफ जूतों का विज्ञा क्योंकि जब तक वाटर प्रूफ जूते न होंगे, तब तक बारिश में इंसान डबल-रोटी जैसा साधारण चीज़ भी प्राप्त कर सकता।

बहुत-सी चीज़ें एक-दूसरे का विज्ञापन हैं। फूल इत्र की शीशी का विज्ञापन है, इत्र की शीशी फूलों का विज्ञा पत्र लेखक का विज्ञापन है, लेखक पत्र का विज्ञापन है। सौंदर्य शृंगार-प्रसाधनों का विज्ञापन है और शृंगार-प्र सौंदर्य का विज्ञापन है। बहुत-सी चीज़ें स्वयं अपना विज्ञापन है, जैसे— उपदेशकता, आलोचकता, नेतागिरी इत्

मतलब यह कि जहाँ जाएँ, जिधर जाएँ, जहाँ रहे, जैसे रहे, इन विज्ञापनों की लपेट से बच नहीं सकते। घर में बंद होकर बैठ जाएँ, तो विज्ञापन रोशनदानों के रास्ते हवा में तैरते आते हैं– 'क्या आज आपने अपने दाँत साफ किए हैं? सवेरे उठते ही सबसे पहले क्लोरोफिल वाले टूथपेस्ट से दाँत साफ़ कीजिए। याद रखिए, दाँतों को रोगों से बचाने के लिए यही एक साधन है……।'

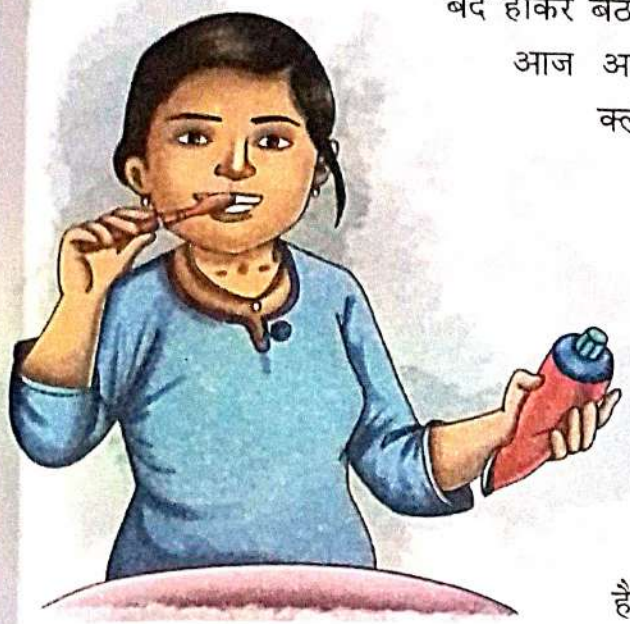

घर से निकलें, तो हर दोराहे, चौराहे और सड़क के खंभे पर विज्ञापन – खतरे से सावधान; धोखे से बचिए – इसके पढ़ने से बहुतों का भला होगा। अखबार उठाएँ, विज्ञापन। पुस्तक उठाएँ, विज्ञापन। बस में बैठे, विज्ञापन– 'क्या आपका दिल कमज़ोर है? क्या आपका जिस्म टूटता रहता है? क्या आपके सिर के बाल झड़ते हैं? क्या आपके घर में झगड़ा रहता है?' गोया कि आपकी व्यक्तिगत ज़िंदगी बिल्कुल व्यक्तिगत नहीं है, उसे केवल इन विज्ञापनदाताओं के परामर्श से ही जिया जा सकता है।

विज्ञापन कला जिस तेज़ी से उन्नति कर रही है, उससे मुझे भविष्य के लिए और भी अंदेशा है। लगता है, ऐसा युग आने वाला है, जब शिक्षा, विज्ञान, संस्कृति और साहित्य, इनका केवल विज्ञापन कला के लिए ही उपयोग रह जाएगा। वैसे तो आज भी इस कला के लिए इनका खासा उपयोग होता है। बहुत-सी शिक्षण-संस्थाएँ हैं, जो सांप्रदायिक संस्थाओं का विज्ञापन है। अपनी पीढ़ी के कई लेखकों की कृतियाँ लाला छगनलाल मगनलाल या इसी तरह के नाम के किसी और लाल की स्मारक निधि से प्रकाशित होकर लाला जी के दिवंगत आत्मा के प्रतिस्मारक होने का फर्ज़ अदा कर रही हैं। अगर आने वाले युग में वह कला, दो कदम और आगे बढ़ जाएगी। विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय के दीक्षांत महोत्सव पर जो डिग्रियाँ दी जाएँगी, उनके निचले कोने में छपा रहेगा– "आपकी शिक्षा के उपयोग का एक ही मार्ग है। आज ही आयात-निर्यात का धंधा प्रारंभ कीजिए। मुफ़्त सूचीपत्र के लिए लिखिए……।"

हर नए आविष्कार का चेहरा मुस्कराता हुआ टेलीविज़न पर आकर कुछ इस प्रकार निवेदन करेगा– 'मुझे यह कहते हुए हार्दिक प्रसन्नता है कि मेरे प्रयत्न की सफलता का सारा श्रेय रबर के टायर बनाने वाली कंपनी को है, क्योंकि उन्हीं के प्रोत्साहन और प्रेरणा से मैंने इस दिशा में कदम बढ़ाया था……।'

विष्णु के मंदिर में खड़े होंगे, जिनमें संगमरमर की सुंदर प्रतिमा के नीचे पट्टी लगी होगी– 'याद रखिए, इस मूर्ति और इस भवन के निर्माण का श्रेय लाल हाथी के निशान वाले निर्माताओं को है। वास्तुकला संबंधी अपनी सभी आवश्यकताओं के लिए लाल हाथी का निशान कभी मत भूलिए' और ऐसे-ऐसे उपन्यास हाथ में आया करेंगे, जिनकी सुंदर चमड़े की जिल्द पर एक ओर बारीक अक्षरों में छपा होगा– 'साहित्य में अभिरुचि रखने वालों को इक्का मार्का साबुन बनाने वालों की एक ओर तुच्छ भेंट।' और बात बढ़ते-बढ़ते यहाँ तक पहुँच जाएगी कि जब एक दूल्हा बड़े अरमान से दुल्हन ब्याह कर घर लाएगा और घूँघट हटाकर उसके रूप की प्रशंसा में पहला वाक्य कहेगा, तो दुल्हन मधुर भाव से आँख उठाकर हृदय का सारा दुलार शब्दों में उँड़ेलती हुई कहेगी, "बताऊँ मैं

इतनी सुंदर क्यों दिखाई देती हूँ? यह इसलिए कि मैं रोज प्रातः उठकर नौ सौ इक्यावन नंबर के साबुन से नहाती हूँ। कल से आप भी घर में नौ सौ इक्यावन नंबर का साबुन रखिए। इसकी सुमधुर गंध सारा दिन दिमाग को ताज़ा रखती है और इसके मुलायम झाग से त्वचा सुंदर, कोमल रहती है। इसकी बड़ी टिकिया खरीदने से पैसे की भी किफ़ायत होती है।'' जहाँ तक विज्ञापन के लिए जगह का सवाल है, बहुत-सी जगहें हैं, जिनका अभी तक उपयोग नहीं किया जा सका है। विज्ञापन कला की दृष्टि से सब चीज़ों का आपस में अन्योन्याश्रित संबंध है। इसलिए दवाई की शीशियों में मक्खन के डिब्बों के विज्ञापन होने चाहिए, और मक्खन के डिब्बों में दवाई की शीशियों के। चित्र-गैलरियों में चित्रों के अतिरिक्त तेल के इश्तहार टाँगे जाने चाहिए और तेल की बोतलों पर चित्रकला प्रदर्श की सूचनाएँ चिपकाई जानी चाहिए। कंबलों और दुशालों में चाय और कोको के इश्तहार बुने जा सकते हैं। और गलीचे रबरसोल के जूतों के विज्ञापन का आदर्श साधन हो सकते हैं। बैंकों की दीवारों पर लॉटरी औ

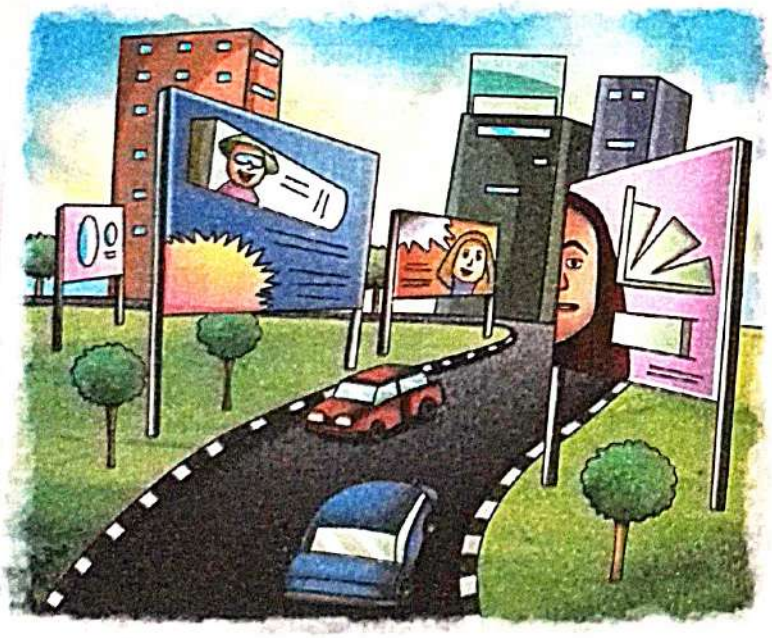

कोर्स के विज्ञापन लिखे जा सकते हैं। रेस-कोर्स में बचत स्कीमों का विज्ञापन दिया जा सकता है। रेल और हवाई ज के टिकटों पर बीमा कंपनियों का विज्ञापन हो सकता है अस्पतालों की दीवारों पर वैवाहिक विज्ञापन लगाए जा सक

यह तो आने वाले कल की बात है, पर आज भी स्थिति य कि मुझे हर जगह विज्ञापन ही विज्ञापन दिखाई देता है, विज्ञापन हो वहाँ भी और जहाँ न हो वहाँ भी। मेरा दिमा चेहरे, हर आवाज़ और हर नाम का संबंध किसी न विज्ञापन के साथ जोड़ देता है। सुबह उठकर सामने की के लड़के को चाय लाने के लिए कहता हूँ, तो चाय का लेते ही मुझे नीलगिरि की सुंदरी का ध्यान हो जाता है, जि चेहरा मैं रोज़ अखबार में देखता हूँ। नीलगिरि के नाम से मुझे तुरंत कॉफी प्रदेश की ढलानें याद आ जाती हैं. ही एक बुड्ढा राजपूत का चेहरा मेरी आँखों के सामने उभरने लगता है और मैं अनायास अपने को बुदबुदाते हूँ — 'यह अच्छी कॉफी और यह अच्छा चेहरा, दोनों भारतीय हैं।'

खैर, लड़का दो मिनट में चाय की प्याली लेकर मुस्कराता हुआ मेरे सामने आ खड़ा होता है। उसके अध होंठों के बीच उसके पतले सफ़ेद दाँतों को देखकर मुझे लगता है कि विशुद्ध क्लोरोफिल मुस्कराहट मुस्करा है। अमेरिकी मुहावरे में इसे 'मिलियन डॉलर स्माइल' कहते हैं और वह लड़का है कि रोज़ मुझे छह पैसे की

पकड़ाता हुआ यह मिलियन डॉलर की मुस्कराहट मुस्करा जाता है। मेरी कई बार इच्छा होती है कि लड़के को किसी क्लोरोफिल कंपनी के हवाले कर दूँ, जिससे उसकी मुस्कराहट का सही मूल्य दुनिया के सामने आ सके। और जब मैं यह सोच रहा होता हूँ, तो ईथर में तैरती हुई स्त्रीकंठ की सुमधुर आवाज़ सुनाई देती है—"क्या आपका लिवर ठीक काम नहीं करता? आपका लिवर ठीक रखने के लिए आज से ही लिवर-इमल्शन लीजिए....."

मुझे ठीक मालूम नहीं कि मेरा लिवर ठीक काम करता है या नहीं पर मैं जब किसी बच्चे को किलकारी मारकर हँसते देखता हूँ, तो मुझे लाल डिब्बे में बंद बेबी मिल्क की याद हो आती है, किसी सुंदर दृश्य को देखता हूँ तो उनतीस रुपये वाला कैमरा मेरी आँखों के आगे घूमने लगता है। विवाह मंडप के पास खड़े होकर मुझे राष्ट्रीय बचत प्रमाणपत्र की याद ज़रूर आती है। मोहल्ले के लाल चौधरी मिलने आते हैं, तो मुझे लगता है कि विटामिन बी कॉम्पलेक्स का विज्ञापन चला आ रहा है। दफ़्तर की नई टाइपिस्ट रोज़ी का समूचा व्यक्तित्व मुझे लाल रंग की लिपस्टिक का विज्ञापन प्रतीत होता है और किसी से कहिएगा नहीं, पर हालत यहाँ तक पहुँच गई है कि अब मैं खुद आइने के सामने खड़ा होता हूँ, तो लगता है, अपना चेहरा नहीं, लिवर-सॉल्ट का विज्ञापन देख रहा हूँ।

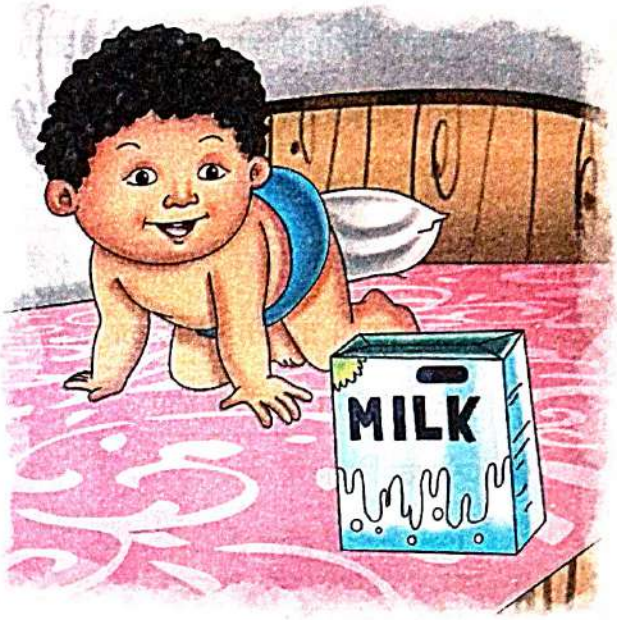

—मोहन राकेश

अध्यापन संकेत विद्यार्थियों को समझाएँ कि किस प्रकार विज्ञापन हमारी चेतना पर विपरीत प्रभाव डालते हैं। एक तरह से वे मानसिक प्रदूषण फैलाते हैं।

शब्दार्थ

बिराना - पराया; चस्पाँ - चिपका; कलेवर - बाहरी रूप; कलाभिरुचि - कला में विशेष रुचि; बारीकबीनी - बारीकी; गोया - मानो; दिवंगत - स्वर्गवासी; अन्योन्याश्रित - एक-दूसरे पर निर्भर; नमदे - कढ़ाईदार, ऊनीदरी; ईथर - इत्र, खुशबू।

अभ्यास

पाठ से

मौखिक प्रश्न

(क) किनकी कृपा से लेखक को रात-दिन विज्ञापन सुनाई देते हैं?

(ख) लेखक के लिए अब गीत-गज़ल क्या बन गए हैं?

(ग) कबीर की रचना सुनने के बाद लेखक को प्रायः किसका विज्ञापन सुनाई देता है?

(घ) अजंता-एलोरा की मूर्तियों का सौंदर्य आजकल लेखक को किसकी याद दिलाता है?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) पुरातन किलों को आजकल जोड़ा जाता है–

(अ) हमारी राष्ट्रीय भावना को बल देने के लिए
(ब) पर्यटन के विज्ञापनों से
(स) इतिहास समझाने के लिए
(द) मेहनत का परिणाम दिखाने के लिए

(ख) रामेश्वरम के शिखर दिखाए जा रहे हैं–

(अ) विशेष ब्रांड के सीमेंट की मज़बूती दिखाने के लिए
(ब) भक्ति जगाने के लिए
(स) साधना करने के लिए
(द) पर्यटन के लिए

(ग) लेखक विज्ञापनों से–

(अ) प्रसन्न होता है
(ब) प्रभावित है
(स) खिन्न है
(द) मन बहलाता है

(घ) इस हास्य-व्यंग्य के लेखक हैं–

(अ) नागार्जुन
(ब) मोहन राकेश
(स) जैनेंद्र
(द) धर्मवीर भारती

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) विज्ञापन कला की दृष्टि से सब चीज़ों का आपस में कैसा संबंध है?

(ख) लेखक का दिमाग किन-किन का संबंध विज्ञापन से जोड़ लेता है?

(ग) लेखक को किसकी मुस्कराहट मिलियन डॉलर की लगती है?

(घ) किसी बच्चे की किलकारी देखकर लेखक को क्या याद आता है?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) लेखक को दफ़्तर की नई टाइपिस्ट रोज़ी और अपनी सूरत में किस-किसका विज्ञापन दिखाई देता है?

(ख) लेखक को विटामिन बी कॉम्प्लैक्स का विज्ञापन किसमें दिखाई देता है और लेखक की चित्र गैलरियों के विषय क्या राय है?

(ग) लेखक को रोशनदानों में से तैरकर आता कौन सा विज्ञापन सुनाई देता है?

भाषा-ज्ञान

1. सही कॉलम में रखिए

चित्र, गैलरी, क्लोरोफिल, जगह, विज्ञापन, स्थिति, लिवर, चेहरा, टिकिट, रेल, वैवाहिक, दिमाग, कंपनी

हिंदी	उर्दू	अंग्रेज़ी
_____	_____	_____
_____	_____	_____
_____	_____	_____
_____	_____	_____
_____	_____	_____

2. 'हट' या 'वट' प्रत्यय जोड़कर नए शब्द बनाइए

(क) मुस्करा _____ मुस्कराहट _____

(ख) हकला _____

(ग) बना _____

(घ) घबरा _____

(ङ) कसा _____

(च) सजा _____

3. वाक्य शुद्ध कीजिए

(क) लेखक का दृष्टि सूक्ष्म है। _____

(ख) विज्ञापन बिक्री बढ़ाने की नुस्खा है। _____

(ग) हमें विज्ञापनों की प्रभाव में नहीं आ जाना चाहिए। _____

(घ) शोर से दिमाग का शक्ति खर्च हो जाती है। _____

रचना के क्षण

- भाव-भूमि– आप भी चाहे-अनचाहे अनेक विज्ञापन पढ़ते-सुनते देखते होंगे, इनका आपकी भावनाओं पर कैसा प्रभाव होता है? अपना अनुभव लिखिए।

कल्पना व चिंतन

- विचार कीजिए कि यदि विज्ञापन न होते, तो दैनिक जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है?

क्रिया-कलाप

- आप अपनी किसी मनपसंद वस्तु का पसंदीदा विज्ञापन तैयार कीजिए।

पठन हेतु

शहीद का पत्र

मेरे प्यारे देशवासियो,

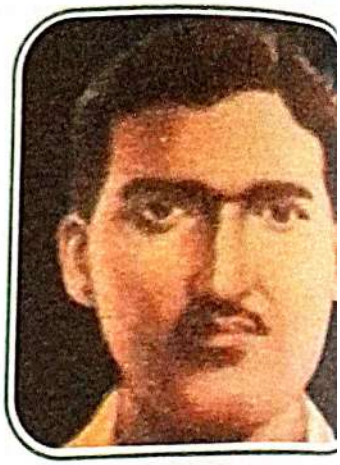

भारत माता को आज़ाद करवाने के लिए रंगमंच पर हम अपनी भूमिका अदा कर चुके हैं। गलत किया सही, हमने जो भी किया, स्वतंत्रता पाने की भावना से प्रेरित होकर किया। हमारे अपने निंदा करें या प्रशंसा, लेकिन हमारे दुश्मनों तक को हमारी हिम्मत और वीरता की प्रशंसा करनी पड़ी। कुछ लोग कहते हैं कि हमने गुलामी को न सहा और देश में आतंकवाद फैलाना चाहा, पर यह सब गलत है। हमारे कितने ही साथी आज भी आज़ाद हैं, फिर भी हमारे किसी साथी ने कभी भी किसी नुकसान पहुँचाने वाले तक पर गोली नहीं चलाई। यह हमारा उद्देश्य नहीं था। हम तो आज़ादी हासिल करने के लिए देशभर में क्रांति लाना चाहते थे।

सरकार भी अंग्रेज़ों की और जज भी अंग्रेज़ों के, फिर न्याय की माँग किससे करें। जजों ने हमें निर्दयी, बर्ब मानवता पर कलंक आदि विशेषणों से पुकारा है। हमारे शासकों की कौम के जनरल डायर ने निहत्थों गोलियाँ चलवाईं। बच्चों, बूढ़ों, स्त्री-पुरुषों सब पर दनादन गोलियाँ दागी गईं। तब इंसाफ़ के इन ठेकेदारों अपने भाई-बंधुओं को किन विशेषणों से संबोधित किया था? फिर हमारे साथ ही यह सुलूक क्यों?

हिंदुस्तानी भाईयो! आप चाहे किसी भी धर्म या संप्रदाय के मानने वाले हों, देश के काम में साथ रहो। आप में व्यर्थ न लड़ो। रास्ते चाहे अलग हो, लेकिन उद्देश्य तो सबका एक है। सभी कार्य एक ही उद्देश्य पूर्ति के साधन हैं। एक होकर देश की नौकरशाही का मुकाबला करो। अपने देश को आज़ाद कराओ।

देश के सात करोड़ मुसलमानों में मैं पहला मुसलमान हूँ, जो देश की आज़ादी के लिए फाँसी पर चढ़ रहा यह सोचकर मुझे गर्व महसूस होता है।

सभी को मेरा सलाम। हिंदुस्तान आज़ाद हो। सब खुश रहें।

आपका भाई,

—अशफ़ा

अध्याय

9.

अपूर्व अनुभव

यह एक जापानी कहानीकार की विश्व प्रसिद्ध कहानी है, जिसमें उसने बच्चों के मैत्री और प्रेमभाव की संवेदना का सुंदर चित्रण किया है।

सभागार में शिविर लगने के दो दिन बाद तोत्तो-चान के लिए एक बड़ा साहस करने का दिन आया। इस दिन उसे यासुकी-चान से मिलना था। इस भेद का पता न तो तोत्तो-चान के माता-पिता को था, न ही यासुकी-चान के। उसने यासुकी-चान को अपने पेड़ पर चढ़ने का न्योता दिया था।

तोमोए में हरेक बच्चा बाग के एक-एक पेड़ को अपने खुद के चढ़ने का पेड़ मानता था। तोत्तो-चान का पेड़ मैदान के बाहरी हिस्से से कुहोन्बुत्सु जानेवाली सड़क के पास था। बड़ा-सा पेड़ था उसका, चढ़ने जाओ तो पैर फिसल-फिसल जाते। पर, ठीक से चढ़ने पर ज़मीन से कोई छह फुट की ऊँचाई पर एक द्विशाखा तक पहुँचा जा सकता था। बिल्कुल किसी झूले-सी आरामदेह जगह थी वह। तोत्तो-चान अकसर खाने की छुट्टी के समय या स्कूल के बाद ऊपर चढ़ी मिलती। वहाँ से वह सामने दूर तक ऊपर आकाश को या नीचे सड़क पर चलते लोगों

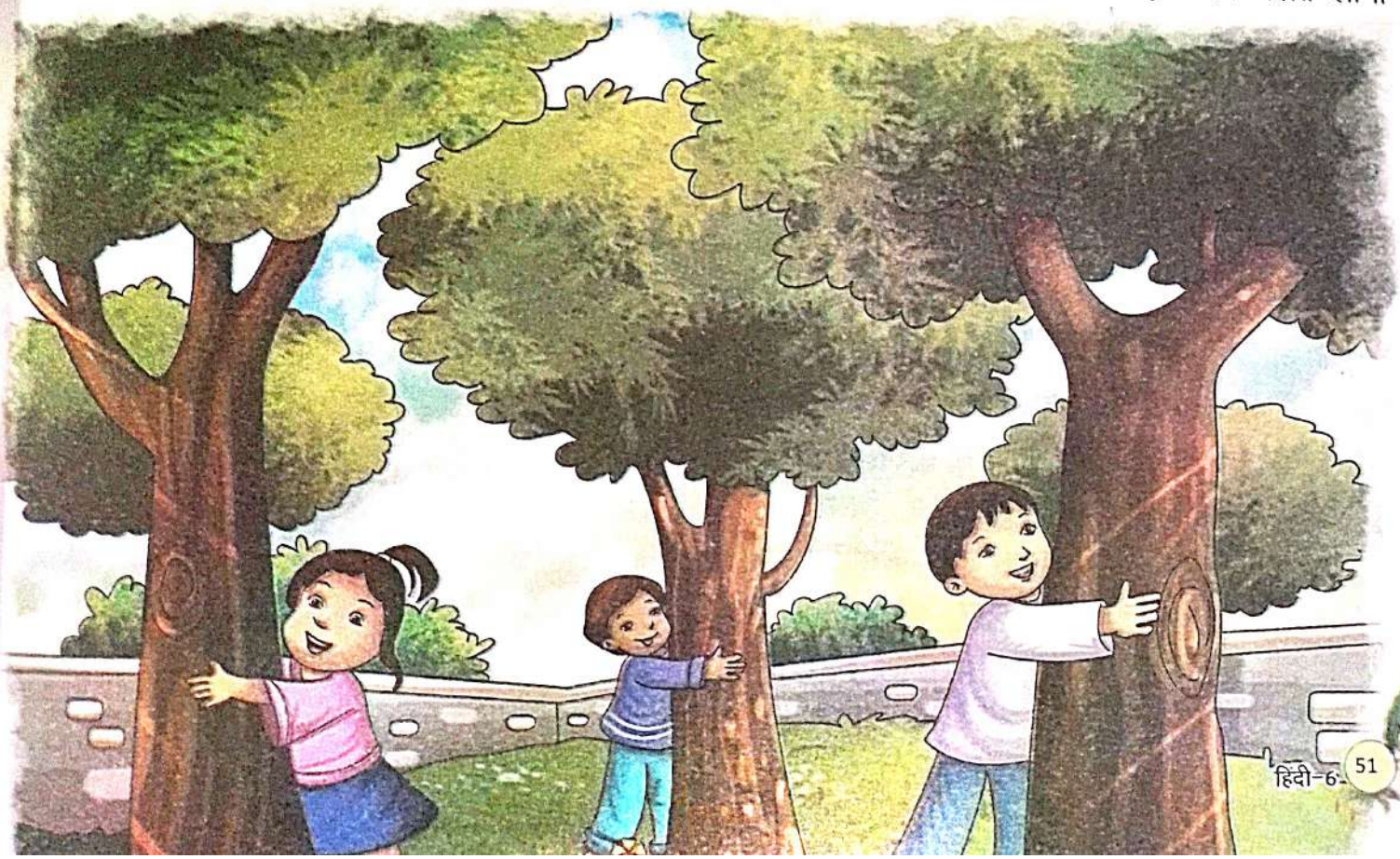

को देखा करती थी। बच्चे अपने-अपने पेड़ को अपनी निजी संपत्ति मानते थे। किसी दूसरे के पेड़ पर चढ़ना हो, तो उससे पहले पूरी शिष्टता से, 'माफ़ कीजिए, क्या मैं अंदर आ जाऊँ? पूछना पड़ता था। यासुकी-चान को पोलियो था, इसलिए वह न तो किसी पेड़ पर चढ़ पाता था और न किसी पेड़ को निजी संपत्ति मानता था। अत: तोत्तो-चान ने उसे अपने पेड़ पर आमंत्रित किया था। पर यह बात उन्होंने किसी से नहीं कही, क्योंकि अगर बड़े सुनते, तो ज़रूर डाँटते।

घर से निकलते समय तोत्तो-चान ने माँ से कहा कि वह यासुकी-चान के घर डेनेनचोफु जा रही है। चूँकि वह झूठ बोल रही थी, इसलिए उसने माँ की आँखों में नहीं झाँका। वह अपनी नज़र जूतों के फीतों पर ही गड़ाए रही। रॉकी उसके पीछे-पीछे स्टेशन तक आया। जाने से पहले उसे सच बताए बिना तोत्तो-चान से रहा नहीं गया।

"मैं यासुकी-चान को अपने पेड़ पर चढ़ने देने वाली हूँ", उसने बताया। जब तोत्तो-चान स्कूल पहुँची, तो रेल पास उसके गले के आसपास हवा में उड़ रहा था। यासुकी-चान उसे मैदान में क्यारियों के पास मिला। गरमी छुट्टियों के कारण सब सूना पड़ा था। यासुकी-चान उससे कुल जमा एक वर्ष ही बड़ा था, पर तोत्तो-चान वह उससे बहुत बड़ा लगता था। जैसे ही यासुकी-चान ने तोत्तो-चान को देखा, वह पैर घसीटता हुआ उसकी ओ बढ़ा। उसके हाथ अपनी चाल को स्थिर करने के लिए दोनों ओर फैले हुए थे। तोत्तो-चान उत्तेजित थी। वे दो आज कुछ ऐसा करने वाले थे, जिसका भेद किसी को भी पता नहीं था। वह उल्लास में ठिठियाकर हँसने लगी। यासुकी-चान भी हँसने लगा।

तोत्तो-चान, यासुकी-चान को अपने पेड़ की ओर ले गई और उसके बाद वह तुरंत चौकीदार के छप्पर की ओर भागी, जैसा उसने रात को ही तय कर लिया था। वहाँ से वह एक सीढ़ी घसीटती हुई लाई। उसे तने के सहारे से लगाया, जिससे वह द्विशाखा तक पहुँच जाए। वह कुर्सी से ऊपर चढ़ी और सीढ़ी के किनारे को पकड़ लिया, तब उसने पुकारा, "ठीक है, अब ऊपर चढ़ने की कोशिश करो।"

यासुकी-चान के हाथ-पैर इतने कमज़ोर थे कि वह पहली सीढ़ी पर भी, बिना सहारे के चढ़ नहीं पाया। इस पर तोत्तो-चान नीचे उतर आई और यासुकी-चान को पीछे से धकियाने लगी। पर तोत्तो-चान थी छोटी और नाजुक-सी, इससे अधिक सहायता क्या करती। यासुकी-चान ने अपना पैर सीढ़ी पर से हटा लिया और हताशा से सिर झुकाकर खड़ा हो गया। तोत्तो-चान को पहली बार लगा कि काम इतना आसान नहीं है, जितना वह सोचे बैठी थी। अब क्या करे वह?

यासुकी-चान उसके पेड़ पर चढ़े, यह उसकी हार्दिक इच्छा थी। यासुकी-चान के मन में भी उत्साह था। वह उसके सामने गई। उसका लटका चेहरा इतना उदास था कि तोत्तो-चान को उसे हँसाने के लिए गाल फुलाकर तरह-तरह के चेहरे बनाने पड़े। "ठहरो, एक बात सूझी है।" फिर वह चौकीदार के छप्पर की ओर दौड़ी, और हरेक चीज़ उलट-पुलटकर देखने लगी। आखिर उसे एक तिपाई-सीढ़ी मिली जिसे थामे रहना भी ज़रूरी नहीं था।

वह तिपाई-सीढ़ी को घसीट कर ले आई, तो अपनी शक्ति पर हैरान होने लगी। तिपाई की ऊपरी सीढ़ी द्विशाखा तक पहुँच रही थी।

"देखो, अब डरना मत" उसने बड़ी बहन की-सी आवाज़ में कहा, "यह डगमगाएगी नहीं।"

यासुकी-चान ने घबराकर तिपाई-सीढ़ी और पसीने से तरबतर तोत्तो-चान की ओर देखा। उसे भी काफ़ी पसीना आ रहा था। उसने पेड़ की ओर देखा और तब निश्चय के साथ पैर उठाकर पहली सीढ़ी पर रखा। उन दोनों को यह बिल्कुल भी पता न चला कि कितना समय यासुकी-चान को ऊपर तक चढ़ने में लगा। सूरज का ताप उन पर पड़ रहा था, पर दोनों का ध्यान यासुकी-चान के ऊपर तक पहुँचने में रमा था। तोत्तो-चान नीचे से उसका एक-एक पैर सीढ़ी पर रखने में मदद कर रही थी। अपने सिर से वह उसके पिछले हिस्से को भी स्थिर करती रही। यासुकी-चान अपनी पूरी शक्ति के साथ जूझ रहा था और आखिर वह ऊपर पहुँच ही गया।

"हुर्रे!" पर, उसे अचानक सारी मेहनत बेकार लगने लगी। तोत्तो-चान तो सीढ़ी पर से छलाँग लगाकर द्विशाखा पर पहुँच गई, पर यासुकी-चान को सीढ़ी से पेड़ पर लाने की हर कोशिश बेकार रही। यासुकी-चान सीढ़ी थामे तोत्तो-चान की ओर ताकने लगा। तोत्तो-चान की रुलाई छूटने को हुई। उसने चाहा कि यासुकी-चान को अपने पेड़ पर आमंत्रित कर तमाम नई-नई चीज़ें दिखाए।

पर वह रोई नहीं, उसे डर था कि उसके रोने पर यासुकी-चान भी रो पड़ेगा। उसने यासुकी-चान का पोलियो से पिचकी और अकड़ी उँगलियों वाला हाथ अपने हाथ में थाम लिया। उसके खुद के हाथ से वह बड़ा और उँगलियाँ

भी लंबी थीं। देर तक तोत्तो-चान उसके हाथ थामे रही। तब बोली, "तुम लेट जाओ, मैं तुम्हें पेड़ पर खींचने कोशिश करती हूँ।"

उस समय द्विशाखा पर खड़ी तोत्तो-चान द्वारा यासुकी-चान को पेड़ की ओर खींचते अगर कोई बड़ा देखता तो वह ज़रूर डर के मारे चीख उठता। उसे वे सच में जोखिम उठाते ही दिखाई देते। पर यासुकी-चान को तोत्तो-चान पर पूरा भरोसा था और वह भी यासुकी-चान के लिए भारी जोखिम उठा रही थी। अपने नन्हें-नन्हें हाथों से वह पूरी ताकत से यासुकी-चान को खींचने लगी। बादल का एक टुकड़ा बीच-बीच में छाया करके कड़कती धूप से बचा रहा था। ... मेहनत के बाद दोनों आमने-सामने की द्विशाखा पर थे। पसीने से तर अपने बालों को चेहरे पर से हटाते तोत्तो-चान ने सम्मान से झुककर कहा, "मेरे पेड़ पर तुम्हारा स्वागत है।"

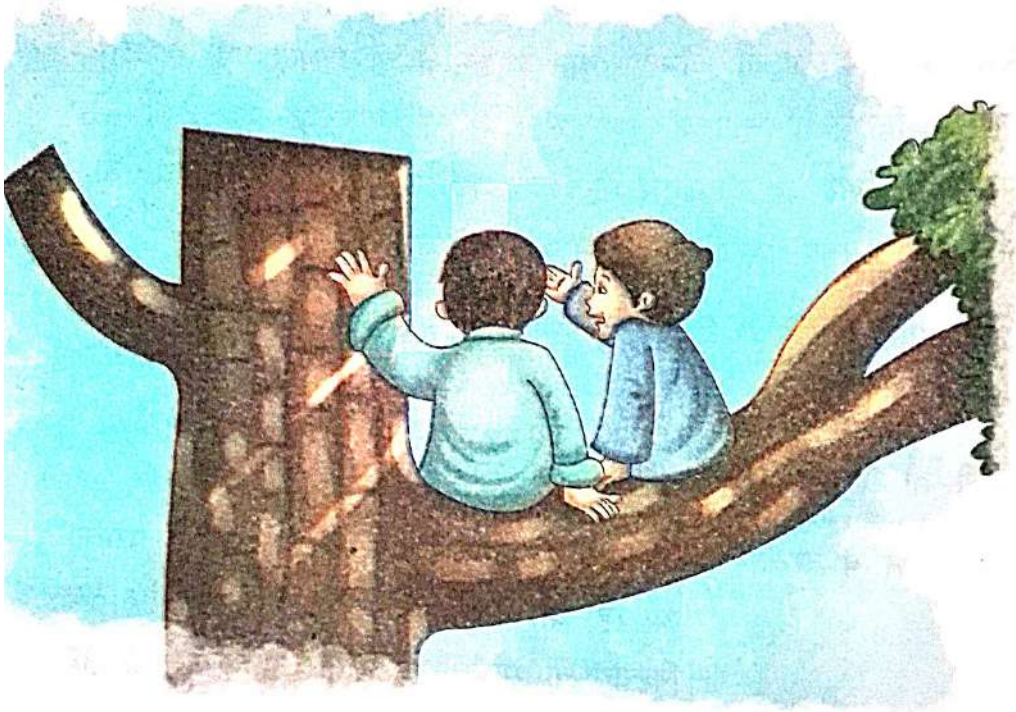

यासुकी-चान डाल के सहारे खड़ा था। कुछ झिझकता हुआ मुस्कराया और उसने पूछा "क्या मैं अंदर आ सकता हूँ?"

उस दिन यासुकी-चान ने दुनिया की एक नई झलक देखी, जिसे उसने पहले कभी न देखा था "तो ऐसा होता है पेड़ पर चढ़ना।" यासुकी-चान ने खुश होते हुए कहा। वे बड़ी देर तक पेड़ पर बैठे-बैठे इधर-उधर की गप्पें लड़ाते रहे। "मेरी बहन अमेरिका में है, उसने बताया कि वहाँ एक चीज़ होती है— टेलीविज़न।" यासुकी-चान उमंग से भरा बता रहा था, "वह कहती है कि जब वह जापान में आ जाएगा, तो हम घर बैठे-बैठे ही ... कुश्ती देख सकेंगे। वह कहती है कि टेलीविज़न एक डिब्बे जैसा होता है।"

तोत्तो-चान उस समय यह तो न समझ पाई कि यासुकी-चान के लिए, जो कहीं भी दूर तक चल नहीं सकता, घर बैठे चीज़ों को देख लेने के क्या अर्थ होंगे? वह तो यही सोचती रही कि सूमो पहलवान घर में स्थित किसी डिब्बे में कैसे समा जाएँगे? उनका आकार तो बड़ा होता है, पर बात उसे बड़ी लुभावनी लगी। उन दिनों टेलीविज़न के बारे में कोई नहीं जानता था। पहले-पहल यासुकी-चान ने ही तोत्तो-चान को उसके बारे में बताया था।

पेड़ मानो गीत गा रहे थे और दोनों बेहद खुश थे। यासुकी-चान के लिए पेड़ पर चढ़ने का यह पहला और आखिरी मौका था।

—तेत्सुको कुरियानागी

अध्यापन संकेत पाठ के माध्यम से विद्यार्थियों को जीवन की चुनौतियों का डटकर सामना करने की प्रेरणा दें।

शब्दार्थ

सभागार - बैठकें करने का बड़ा-सा कमरा; द्विशाखा - जहाँ से दो शाखाएँ निकलती हैं; आमंत्रित करना - बुलावा देना; ठिठियाकर हँसना - ज़ोर से हँसना; हार्दिक - दिल से; ताप - गर्मी।

अभ्यास

पाठ से

मौखिक प्रश्न

(क) तोत्तो-चान ने किसे अपने पेड़ पर चढ़ने का न्योता दिया था?

(ख) बच्चे किसे अपनी निजी संपत्ति मानते थे?

(ग) तोत्तो-चान ने जाते समय माँ की आँखों में क्यों नहीं झाँका?

(घ) यासुकी-चान तोत्तो-चान से उम्र में कितना बड़ा था?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) यासुकी-चान को था-

(अ) बुखार ☐ (ब) पोलियो ☐

(स) आलस्य ☐ (द) तपेदिक ☐

(ख) तोत्तो-चान ने यासुकी-चान को हँसाने के लिए-

(अ) चुटकुले सुनाए ☐ (ब) ताली बजाई ☐

(स) नकल उतारी ☐ (द) गाल फुलाए ☐

(ग) यासुकी-चान को पेड़ पर चढ़ाने के लिए-

(अ) तोत्तो-चान ने प्रार्थना की ☐ (ब) एक तिपाई घसीटी ☐

(स) सीढ़ी मँगवाई ☐ (द) लोग बुलाए ☐

(घ) तोत्तो-चान और यासुकी-चान ने पेड़ पर बैठकर-

(अ) गपशप की

(ब) तोते पकड़े

(स) शोर मचाया

(द) फोटो खिंचवाई

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) तोत्तो-चान उत्तेजित क्यों थी?

(ख) यासुकी-चान को किसने अपने पेड़ पर चढ़ने का निमंत्रण दिया?

(ग) तोत्तो-चान ने अपने बड़ों को क्यों नहीं बताया कि वह अपने मित्र को पेड़ पर चढ़ाने जा रही है?

(घ) रोना आने पर भी तोत्तो-चान क्यों नहीं रोई?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) यासुकी-चान को पेड़ पर चढ़ाने के लिए तोत्तो-चान ने सर्वप्रथम क्या प्रयास किया?

(ख) तोत्तो-चान को कब यह अनुभव हुआ कि यासुकी-चान को पेड़ पर चढ़ाने का काम आसान नहीं है?

(ग) यासुकी-चान ने कब और कैसे दुनिया की नई झलक देखी?

(घ) यासुकी-चान ने पेड़ पर चढ़ने के पश्चात् तोत्तो-चान को किसके बारे में बताया?

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों को उनके समानार्थी शब्दों से सुमेल कीजिए

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) हिस्सा	(i) इरादा
(ख) निश्चय	(ii) बल
(ग) डर	(iii) जायदाद
(घ) संपत्ति	(iv) भय
(ङ) शक्ति	(v) भाग

2. बेमेल शब्द काटिए

(क) पेड़, पौधा, बाँस, वृक्ष।

(ख) रोग, दवा, बीमारी, मर्ज़।

(ग) हिम्मत, हौसला, साहस, विजय।

(घ) हीन, श्रेष्ठ, घटिया, तुच्छ।

सही कॉलम में रखिए

पेड़, जंगल, टहनी, डर, प्रीति, अनुराग, कली, झाड़ी, बीमारी, काँटा, सलाखें

स्त्रीलिंग	_____	_____	_____	_____
	_____	_____	_____	_____
पुल्लिग	_____	_____	_____	_____
	_____	_____	_____	_____

रचना के क्षण

भाव-भूमि– पाठ में दी गई बालिका के मनोभावों के वर्णन से आपने उसके बारे में क्या अनुभव किया, एक-दो पंक्तियों में स्पष्ट कीजिए। उसकी विशेषताओं के शीर्षक आगे दिए जा रहे हैं।

सहानुभूतिशील– तोत्तो-चान सहानुभूतिशील थी। यासुकी-चान की मदद करने की उसकी इच्छा और प्रयास यह स्पष्ट करते हैं।

परिश्रमी – _____

_____

_____

दृढ़ निश्चयी – _____

_____

_____

कल्पना व चिंतन

विचार कीजिए कि यदि आपका कोई साथी या परिचित किसी दुर्बलतावश अकेला पड़ता जा रहा हो, तब आप उसकी सहायता कैसे करेंगे?

क्या शारीरिक रूप से अक्षम किसी व्यक्ति के लिए हमें केवल दया व्यक्त करनी चाहिए अथवा उसे साहसपूर्वक जीवनयापन की प्रेरणा देनी चाहिए?

क्रिया-कलाप

आगे दी गई कविता को याद करके कक्षा में सुनाइए और 'पेड़ों के महत्व पर' एक वार्ता का आयोजन कीजिए।

पठन हेतु

पेड़ का दर्द

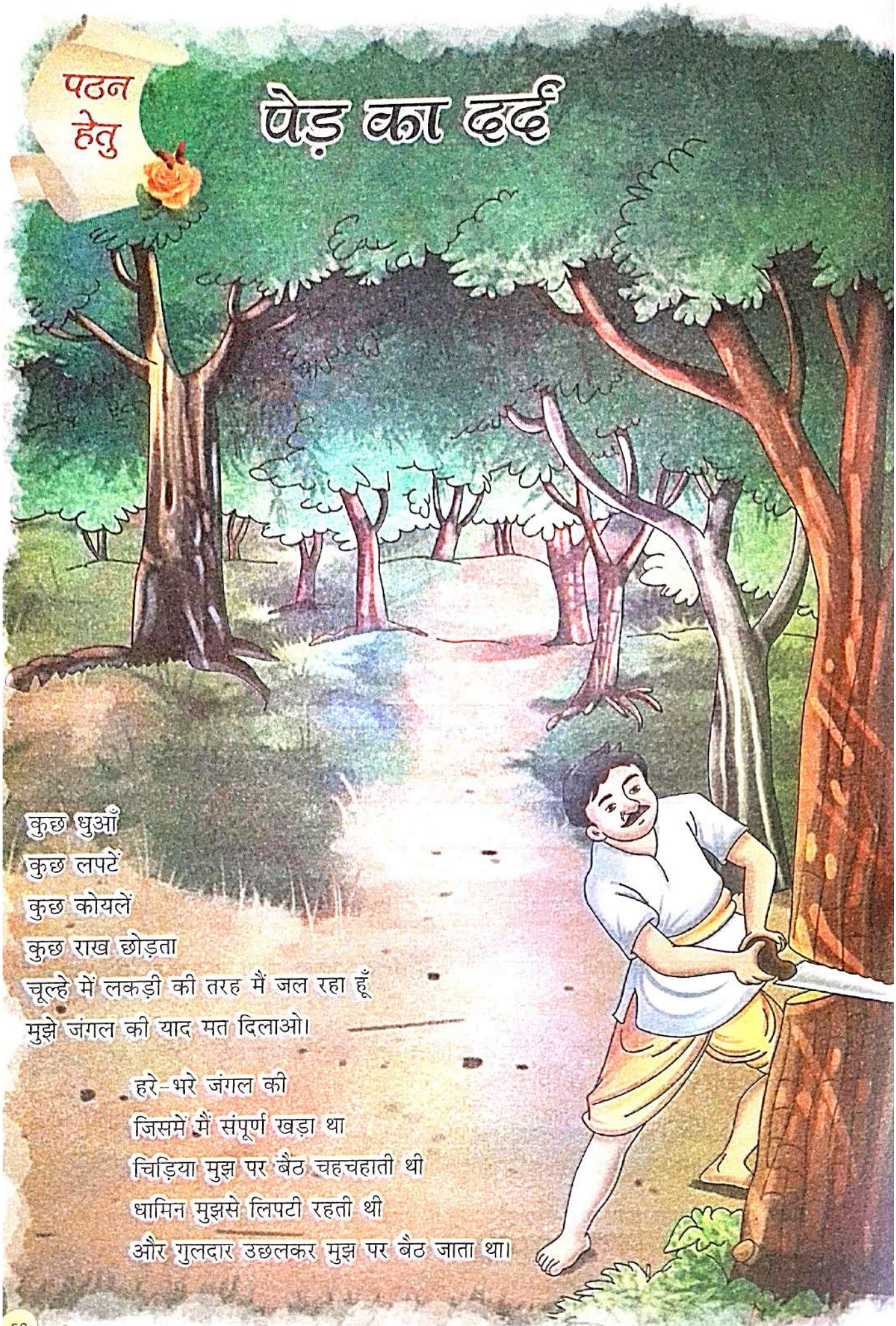

कुछ धुआँ
कुछ लपटें
कुछ कोयलें
कुछ राख छोड़ता
चूल्हे में लकड़ी की तरह मैं जल रहा हूँ
मुझे जंगल की याद मत दिलाओ।

हरे-भरे जंगल की
जिसमें मैं संपूर्ण खड़ा था
चिड़िया मुझ पर बैठ चहचहाती थी
धामिन मुझसे लिपटी रहती थी
और गुलदार उछलकर मुझ पर बैठ जाता था।

जंगल की याद
अब उन कुल्हाड़ियों की याद रह गई है
जो मुझ पर चली थी
उन आरों की जिन्होंने
मेरे टुकड़े-टुकड़े किए थे
मेरी संपूर्णता मुझसे छीन ली थी।

चूल्हे में
लकड़ी की तरह अब मैं जल रहा हूँ
बिना यह जाने कि जो हाँडी चढ़ी है
उसकी खुदबुद झूठी है।
या उससे किसी का पेट भरेगा
आत्मा तृप्त होगी।

बिना यह जाने
कि जो चेहरे मेरे सामने हैं
वे मेरी आँच से
तमतमा रहे हैं
या गुस्से से
वे मुझे उठाकर चल पड़ेंगे।
या मुझ पर पानी डाल सो जाएँगे
जंगल की याद मुझे मत दिलाओ।

एक-एक चिंगारी
झड़ती पत्तियाँ हैं
जिन्हें अब भी मैं चूम लेना चाहता हूँ
इस धरती को
जिसमें मेरी जड़ें थीं।

—सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

अध्याय

10. चेतावनी

प्रत्येक प्राणी स्वतंत्रता चाहता है और इसे प्राप्त करने के लिए भरसक प्रयत्न भी करता है किंतु फिर भ
सजगता के अभाव में उसकी आजादी छिन सकती है। इसी भाव को कवि ने यहाँ बड़े सुंदर ढंग से व्य
किया है-

है सरल आजाद होना,
पर कठिन आजाद रहना।
राष्ट्र उसे तूने कहा है
क्रोध निर्बलता हृदय की,
स्वार्थ है संताप की जड़,
शील है अनमोल गहना।
है सरल आजाद होना,
पर कठिन आजाद रहना।

यह न समझो मुक्ति पाकर,
कर चुके कर्तव्य पूरा
देश को श्री शक्ति देने
के लिए है कष्ट सहना।
है सरल आजाद होना।
पर कठिन आजाद रहना।

देश को बलयुक्त करने
यदि न संयम से चलें हम,
काल देगा दासता की
फिर हमें जंजीर पहना।
है सरल आजाद होना,
पर कठिन आजाद रहना।

ीत हो कानून से मन
ह पर आता नहीं है,
ग्रसर हो ना कुपथ पर
सना का मान कहना।
सरल आजाद होना,
कठिन आजाद रहना।

मान कर आदेश तेरा
ले अहिंसा पथ ग्रहण कर,
बंद होगा भूमि पर तब,
मानवों का रक्त बहना।
है सरल आजाद होना,
पर कठिन आजाद रहना।

—हरिकृष्ण प्रेमी

अध्यापन संकेत विद्यार्थियों को बताएँ कि हमें आजादी अत्यंत कठिनाइयों व बलिदानों के फलस्वरूप मिली है। हमें इसे बनाए रखने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहना चाहिए।

शब्दार्थ

संताप - शोक; संयम - नियंत्रण; अग्रसर - आगे बढ़ना; शील - सदाचरण; भीत - भयभीत; कुपथ - गलत राह।

अभ्यास

विता से

मौखिक प्रश्न

(क) कवि के अनुसार क्या बात कठिन है?

(ख) हृदय की निर्बलता क्या है?

(ग) शील की तुलना यहाँ किससे की गई है?

(घ) हमें राष्ट्र को क्या देने के लिए कष्ट सहना होगा?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) कवि ने यहाँ बल दिया है–

(अ) देश जीतने पर

(ब) स्वतंत्रता बनाए रखने पर

(स) भौतिक प्रगति पर

(द) वैज्ञानिक प्रगति पर

(ख) यदि हम संयम से न चले तो–

(अ) आलसी हो जाएँगे

(ब) निर्धन हो जाएँगे

(स) गुलाम हो जाएँगे

(द) मुक्त हो जाएँगे

(ग) मन राह पर नहीं आता–

(अ) भगवान से

(ब) साधना से

(स) संयम से

(द) कानून से

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) कवि ने किस काम को सरल और किसे कठिन बताया है?

(ख) संयम छोड़ देने पर काल क्या करेगा?

(ग) कुपथ पर किसका कहना मानकर हम अग्रसर होते हैं?

(घ) कवि क्या बंद करवाना चाहता है?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

व्याख्या कीजिए

(क) भीत हो कानून से मन
राह पर आता नहीं है।
अग्रसर न हो कुपथ पर
वासना का मान कहना।

(ख) क्रोध निर्बलता हृदय की
स्वार्थ है संताप की जड़।

भाषा-ज्ञान

1. पढ़िए और समझिए

(क) काल, समय, वक्त।

(ख) दासता, गुलामी, परतंत्रता।

(ग) संताप, दुख, पीड़ा।

(घ) रक्त, खून, लहू।

2. निम्नलिखित शब्दों का उनके विलोम शब्दों से सुमेल कीजिए

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) कुपथ	(i) अहिंसा
(ख) हिंसा	(ii) बंधन
(ग) दासता	(iii) परमार्थ
(घ) मुक्ति	(iv) सुपथ
(ङ) स्वार्थ	(v) स्वतंत्रता

3. निम्नलिखित शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए

(क) वासना _____

(ख) संयम _____

(ग) दासता _____

(घ) स्वार्थ _____

(ङ) कर्तव्य _____

रचना के क्षण

- भाव-भूमि– यदि हमें किसी की अधीनता झेलनी पड़े, तो हमारी मनोदशा कैसी हो जाएगी? तब जीवन में क्या असुविधा और उलझनें हो सकती हैं? अनुमान से बताइए।

कल्पना व चिंतन

- हमारे देशवासियों को आजादी पाने के लिए क्या-क्या करना पड़ा होगा? विचार कीजिए। क्या हम कठिनता से प्राप्त इस आजादी की सुरक्षा कर रहे हैं? चिंतन-मनन कीजिए।

क्रिया-कलाप

- देश के स्वतंत्रता सेनानियों के चित्रों की एक एलबम तैयार कीजिए और उसे सँभालकर रखिए।
- मनुष्य को कैद में डालकर उसे मानसिक पीड़ा देने की दुखद स्थिति ही क्यों आती है?
- 'स्वाधीनता ही सबसे बड़ा सुख है।' इस विषय पर एक वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन कीजिए। पक्ष और विपक्ष की दलीलों को सुनने के पश्चात् उसका सार-संक्षेप लिखिए।

अध्याय

11. नया नज़रिया

हम प्रायः सुनी-सुनाई बातों को ही दोहराते रहते हैं। हमें हर विषय पर स्वयं विचार करना होगा। यहाँ कुछ गहन विषयों में एक विचारक ओशो के विचार जानेंगे।

संसार

ईश्वर का वैभव है यह संसार। माना कि यह एक जाल है, पर उस प्यारे का जाल है, इसमें कौन न फँसना चाहेगा? जो संसार से ही भयभीत हैं, वो क्या ख़ाक परमात्मा को पाएँगे? जो उसकी कृति को भी न देख सके, परमात्मा को देखकर तो उसके प्राण ही निकल जाएँगे।

प्रेम

प्रेम अकेला मुक्त करता है, घृणा बाँधती है और जो प्रेम भी बाँधता हो, वह घृणा का ही एक रूप है। प्रे नहीं है। प्रेम न कहीं पर ठहरता, न कहीं पर रुकता; न किसी को रोकता, न किसी को ठहराता है। प्रेम की शर्त है, न कोई सौदा। प्रेम है, तो परम मुक्ति है। ज्ञान संग्रह करना पड़ता है और प्रेम बाँटना पड़ता है।

सत्य

सत्य की एक ख़ूबी है कि सत्य के साथ मर जाने में भी एक मज़ा है, असत्य के साथ जीने में भी मज़ा सत्य के रास्ते पर पीड़ाएँ भी मधुर हैं। असत्य के रास्ते पर सुविधाएँ भी ज़हर हैं। सत्य अमृत है और ज़हर। सत्य जीवन की परिभाषा है, जो शाश्वत है।

जीवन का लक्ष्य

व्यक्ति जो कुछ करने को पैदा हुआ है, अगर वही कर पाए, तो उसके भीतर बड़ी कृतार्थता का अनुभव जिस ज्ञान का अनुभव नहीं है, वह काम नहीं आएगा।

मरज़ी है आदमी की कि वह जो चाहे करे। शिकायत करने वाला मन धीरे-धीरे उदास हो जाता है। धन्यवाद देने वाला मन धीरे-धीरे आनंद से भर जाता है। वह प्रफुल्लता और आशा से भर जाता है। जो आशा से भरा होता है, वही आगे कदम बढ़ा सकता है।

यहाँ एक कविता दी जा रही है, जिसमें जीवन की तुलना एक खरे सिक्के के रूप में की गई है–

नज़र तुम्हारी जाली है,
सिक्का तो टकसाली है।
इस सिक्के को गढ़ा प्रकृति ने
है धरती की माटी से।
इस सिक्के को गढ़ा पुरुष ने
अपनी ही परिपाटी से।
इस सिक्के पर अंक पड़े हैं
स्वयं नियति के हाथों से।
यह सिक्का तो चलता आया
जन्म-मरण की घाटी से।
इसे बचाओ, यह गाता है
गीत खुशी के, मातम के।
इस सिक्के में दोष देखना
केवल ख़ाम-ख़याली है।
सोना-चाँदी, हीरे-मोती
कितने इसमें छले गए।
जीवन भर बटोरने वाले
ख़ाली हाथों चले गए।
जो निज को जितना दे सकता
वह उतना ही ज्ञानी है।
जो मिलता है, लेना होगा
राज़ी से, नाराज़ी से।
अरे व्यर्थ की तीन-पाँच यह
और व्यर्थ की गाली है।
नज़र तुम्हारी जाली है
सिक्का तो टकसाली है।

भारत में निर्धनता को महिमामंडित किया जाता रहा है, इसके विपरीत विचारक ने अपना मत इस प्रकार किया है—

धन का महत्व तुलनात्मक है

जब तुम्हारे पास एक निश्चित समृद्धि होती है, तब तुम ज़्यादा समृद्धि को अपनी ओर खींचने के लिए चुंबकीय स्रोत बन जाते हो। ग़रीब आदमी दूर हटाता है— ग़रीब व्यक्ति इसलिए ग़रीब है कि वह समृद्धि को अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकता — उसके पास चुंबकीय आकर्षण नहीं है। ये सीधे-साफ़ आर्थिक नियम है कि यदि तुम्हारी जेब में रुपये हो तो वे रुपये दूसरे रुपयों को तुम्हारी जेब में खींच लेंगे। जितने तुम समृद्ध होते हो उतने ही और ज़्यादा तुम समृद्ध बनते जाते हो, यही है। यदि तुम्हारे पास है, तो तुम्हें और ज़्यादा दिया जाए। यदि तुम्हारे पास है, तो जो तुम्हारे पास है, वह भी ले लिया जाएगा। यदि व्यक्ति सचमुच समृद्ध है, तो वह ऊब ही जाएगा धन से। यदि वह ऊबा नहीं है, तो दरिद्र ही है। असल में, जितना ज़्यादा धन तुम्हारे पास होता है, उतनी कम कीमत होती है धन की। धन की कीमत निर्भर करती है निर्धनता

..... तुम्हें आना पड़ता है संसार में और पीड़ा भोगनी पड़ती है, यह जानने के लिए कि तुम कौन हो। एक आवश्यक अनुभव है।

अध्यापन संकेत विद्यार्थियों को नए विषयों पर मनन-चिंतन की प्रेरणा देते हुए पाठ पढ़ाएँ।

शब्दार्थ

मुक्ति - छुटकारा; कृति - रचना; जाली - नकली; चुंबकीय - अपनी ओर आकर्षित करने वाला; वैभव - सुख-संपन्नता; कृतार्थ - संतुष्टि की भरपूर स्थिति; टकसाली - प्रमाणिक, खरा; नियति - क़िस्मत।

अभ्यास

पाठ से

मौखिक प्रश्न

(क) प्रस्तुत पाठ में किन-किन विषयों पर विचार किया गया है?

(ख) संसार को किसका वैभव कहा गया है?

(ग) भारत में किसे महिमामंडित किया जाता रहा है?

(घ) किसे एक आवश्यक अनुभव कहा गया है?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए-

(क) पाठ में दिए गए विचार हैं-

(अ) शास्त्रों के ⬡ (ब) नए ⬡

(स) विदेशी दार्शनिकों के ⬡ (द) पुराने ⬡

(ख) आगे कदम बढ़ा सकता है-

(अ) निराशावादी ⬡ (ब) आक्रामक ⬡

(स) शक्तिशाली ⬡ (द) आशावादी ⬡

(ग) धन्यवाद देने वाला मन भर जाता है-

(अ) शोक से ⬡ (ब) पीड़ा से ⬡

(स) आनंद से ⬡ (द) ईर्ष्या से ⬡

(घ) संसार में आकर पीड़ा भोगनी पड़ती है-

(अ) पापों के कारण ⬡ (ब) दुष्टों के कारण ⬡

(स) भूलों के कारण ⬡ (द) यह जानने के लिए कि मैं कौन हूँ ⬡

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) प्रेम और घृणा में क्या अंतर है?

(ख) परम मुक्ति किसे कहा गया है?

(ग) किस रास्ते पर पीड़ा भी मधुर लगती है?

(घ) किसके रास्ते पर सुविधाएँ भी ज़हर हो जाती हैं?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

आशय स्पष्ट कीजिए-

(क) 'जो मिलता है लेना होगा राज़ी से नाराज़ी से'

(ख) 'यदि व्यक्ति सच ही समृद्ध है, तो ऊब ही जाएगा धन से।'

(ग) धन्यवाद देने का भाव जीवन में क्या परिवर्तन लाता है?

भाषा-ज्ञान

1. तुक मिलाइए

(क) जाली / _____

(ख) छले / _____

(ग) माटी / _____

(घ) राजी / _____

2. उदाहरण के अनुसार शब्द समूह के लिए एक-एक शब्द लिखिए-

(क) टकसाल में ढला हुआ — टकसाली

(ख) मशीन में बना हुआ _____

(ग) विष से भरा हुआ _____

(घ) हित चाहने वाला _____

(ङ) क्षमा करने वाला _____

3. वाक्य शुद्ध कीजिए

(क) जन्म-मरण का चक्र चलती ही रहता है। _____

(ख) मेरी आशा नहीं मिटा है। _____

(ग) हर वस्तु की कीमत बढ़ गया है। _____

(घ) उसने मुझे धन्यवाद दीं। _____

4. उचित स्थान पर सही विराम चिह्न (, / " "/ ।) आदि लगाइए।

हमें सबसे प्रेम करना चाहिए घृणा करने से अपना ही मन मलिन होता है महात्मा गांधी ने कहा था पाप से घृ पापी से नहीं कोई भी पाप खुशी से नहीं करता और न ही पाप करके किसी को सुख मिलता है दया क्षमा शांति करने योग्य हैं बैर क्रोध हठ निंदा छोड़ने योग्य।

रचना के क्षण

- **भाव-भूमि–** आपके मन में भी प्रेम, धन, सुख, जीवन आदि को लेकर अनेक भाव उमड़ते होंगे। किसी एक विष अपने भाव प्रकट कीजिए।

कल्पना व चिंतन

- आप कौन हैं? इस संसार में आपको क्या-क्या सुख-दुख हैं? आप कैसी दुनिया बनाना चाहते हैं? आदि विषयों पर व कल्पना कीजिए।

क्रिया-कलाप

- पुस्तकालय जाकर महान विचारकों की पुस्तकें पढ़िए, जैसे–विवेकानंद, नेहरू, महर्षि दयानंद, वेद-पुराण, उपनि भगवत्गीता आदि। आप किनके विचारों से प्रभावित हुए यह भी बताइए।

अध्याय

12. असली माँ

प्रत्येक व्यक्ति प्रेम चाहता है और माँ तो प्रेम का प्रतिरूप ही होता है। यहाँ एक अकेली रह गई माँ की मार्मिक कहानी कही गई है–

"निधि कहाँ हो तुम? ..... इधर आओ, देखो मैं तुम्हारे लिए क्या लाई हूँ?" मिसेज जेम्स ने पुकारा।

निधि, पूजा और सुनील इस बार गर्मी की छुट्टियाँ बिताने यहाँ आए हैं। उनकी माँ भी साथ में है। उन्होंने यहाँ यह फ्लैट किराये पर ले लिया है, ताकि आराम से रह सकें। मिसेज जेम्स इस फ्लैट की मालकिन हैं, जो ऊपरी मंजिल में रहती हैं। वह बहुत ही मिलनसार महिला हैं। निधि ने तो पहले ही दिन से उनके दिल में अपनी जगह बना ली हैं। निधि को बहुत ही प्यार करती हैं मिसेज जेम्स। कभी वह उसके लिए चॉकलेट लाती हैं, तो कभी केक बनाती हैं। निधि को वह ज़्यादा से ज़्यादा समय अपने पास रखना चाहती हैं और इसके लिए वह कोई न कोई बहाना ढूँढ़ निकालती हैं। निधि अपने भाई-बहनों में सबसे छोटी है – दस साल की। उससे तीन साल बड़ी बहन है पूजा और पूजा से एक साल बड़ा भाई है सुनील।

मिसेज जेम्स निधि से प्यार करती हैं, यह बात पूजा और सुनील को पहले तो कुछ दिन अच्छी लगी। फिर उन्हें लगा कि वह केवल निधि को ही क्यों प्यार करती हैं? हमें क्यों नहीं? उन्हें निधि से चिढ़ होने लगी। वे दोनों निधि को चिढ़ाते। कहते, "निधि, मिसेज जेम्स ही तेरी 'असली माँ' हैं।" जब भी मिसेज जेम्स बाहर से आती या निधि को पुकारती तो दोनों कहते, "निधि, तेरी 'असली माँ' आ गई।" या फिर कहते, "निधि, तेरी 'असली माँ' तुझे बुला रही हैं।"

उस दिन भी मिसेज जेम्स ने पुकारा, "निधि बेटी, कहाँ हो? मेरे पास आओ!" इसे सुनकर सुनील ने निधि को चिढ़ाते हुए फुसफुसाकर कहा, "अजी निधि की 'असली माताजी', आप ही हमारे पास आ जाओ! निधि यहाँ है!"

पूजा, जो पहले से ही चिढ़ी बैठी थी, बड़बड़ाई, "कुछ लोग ऐसे भाग्यशाली होते हैं, जो सारे सुख लेकर धरती पर आते हैं, और हम जैसे लोग.....।" फिर बोली, "काश, मिसेज जेम्स जैसी हमारी भी कोई 'असली माँ' होती, जो हमें प्यार करतीं, रोज-रोज खाने के लिए टॉफियाँ, केक देती, तो कितने मज़े आते?"

पूजा की बात सुनकर सुनील ने कहा, "तो फिर पूजा, तुम निधि जितनी छोटी हो जाओ।" तभी निधि की माँ ने कहा, "मिसेज जेम्स, आप ही आ जाइए, आज निधि की तबियत ठीक नहीं है, उसके पेट में दर्द है।"

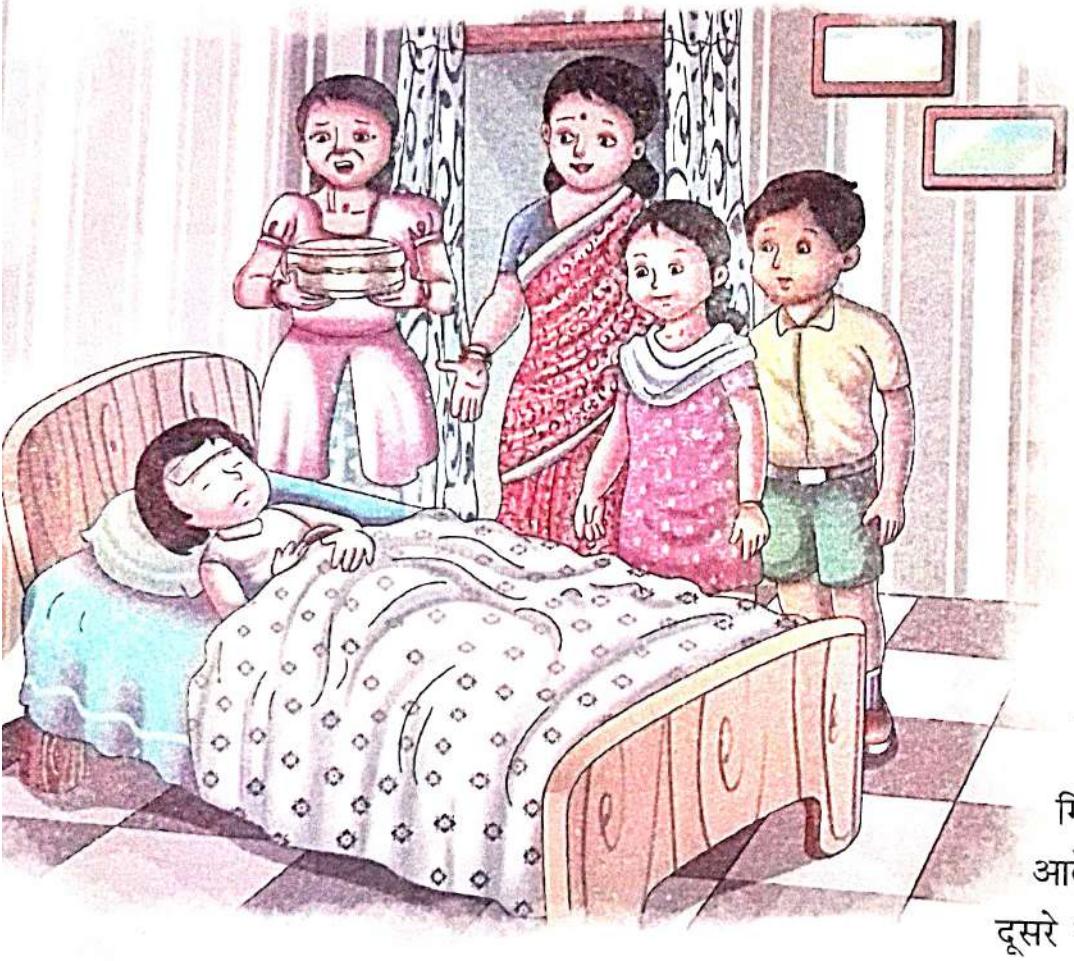

"क्या कहा? मेरी प्यारी बेटी निधि के पेट में दर्द है? ओह, मैंने तो उसके लिए चॉकलेट वाला केक बनाया था," कहती हुई मिसेज जेम्स नीचे उतर आई। निधि को लेटा देखकर निधि से पूछा, "क्या बात है निधि? पेट में दर्द है? कोई बात नहीं। मैं अभी ठीक किए देती हूँ।" कहते हुए वह ऊपर चली गई। कुछ ही देर बाद दवाई की शीशी लेकर नीचे आई।

मिसेज जेम्स को दवाई की शीशी लेकर आते हुए देख पूजा और सुनील ने एक-दूसरे को देखा और मुस्करा पड़े।

दवाई की शीशी में से निकालकर उन्होंने निधि को दवाई पिलाई। फिर निधि की मम्मी से कहा, "आप निधि के खाने की फिक्र न करना। मैं अभी इसके लिए सूप बनाए देती हूँ।" कहते हुए वह सूप बनाने ऊपर चली गई।

निधि ने देखा, सुनील और पूजा अभी भी उसे चिढ़ा रहे थे?

उन्हें चिढ़ाते देख निधि रूआँसी हो गई। उसने माँ का हाथ पकड़ लिया और बोली, "ओ माँ, ये मिसेज जेम्स मेरे पीछे क्यों पड़ी रहती हैं? मैं तो परेशान हो गई हूँ इनसे। कभी कहती हैं, यह खा लो, कभी यह ले लो, क्या मैं छोटी बच्ची हूँ?"

"इस तरह नहीं बोलते बेटी! मिसेज जेम्स तो तुम्हें बहुत प्यार करती हैं, इसीलिए वह तुम्हारा इतना ख्याल रखती हैं। फिर वह बिल्कुल अकेली हैं न! इसीलिए उन्हें तुम्हारा साथ अच्छा लगता है।"

अगले दिन निधि नीचे लॉन में खेल रही थी। मिसेज जेम्स बाज़ार से लौट रही थीं। निधि को खेलते देखकर उन्हें बहुत खुशी हुई, बोलीं, "अरे निधि, कैसी हो बेटी? अब तो तुम बिल्कुल ठीक हो न?"

"हाँ, आंटी, अब मैं ठीक हूँ," निधि ने प्यार से जवाब दिया।

"लो, मैं तुम्हारे लिए चॉकलेट लाई हूँ," निधि ने चॉकलेट लेने के लिए हाथ बढ़ाया, तभी उसकी नज़र दूर खड़े सुनील पर गई। उसने तुरंत अपना हाथ पीछे खींच लिया। बोलीं, "नहीं आंटी, मैंने चॉकलेट खाना छोड़ दिया है। मम्मी कहती हैं, इससे दाँत खराब हो जाते हैं और पेट भी खराब हो जाता है।"

मिसेज जेम्स कुछ मिनट यूँ ही खड़ी रहीं। फिर बोलीं, "अच्छा कल तुम दोपहर को खाना मेरे साथ खाना, मैं तुम्हारी माँ से कह दूँगी!"

निधि ने गरदन हिलाकर हाँ कर दी, पर वह मन ही मन बड़बड़ाने लगी, "मैं ही क्यों खाऊँ, भैया और दीदी भी क्यों नहीं खाएँ? क्या आंटी उन्हें नहीं बुला सकती? मैं उनके यहाँ खाना खाने जाऊँगी, तो वे दोनों मुझे फिर चिढ़ाएँगे। मैं नहीं जाऊँगी उनके पास खाना खाने। अगर भैया-दीदी को भी बुलाएँगी, तो जाऊँगी। नहीं तो मैं कल कहीं चली जाऊँगी। अगर माँ भी जाने के लिए कहेंगी, तो पेटदर्द का बहाना बना लूँगी.....।"

रात को खाना खाते समय निधि को पता चला कि सुनील और पूजा अपने दोस्तों के साथ घूमने लाल टिब्बा जा रहे हैं। निधि ने सोचा, 'अगर मैं भी इनके साथ चली जाऊँ तो मिसेज जेम्स के यहाँ जाने से बच जाऊँगी।' उसने सुनील से कहा, "भैया, मुझे भी अपने साथ ले चलो लाल टिब्बा।"

"नहीं, नहीं!" सुनील और पूजा दोनों एक साथ बोल पड़े, "लाल टिब्बा बहुत दूर है, निधि! तुम वहाँ तक चल नहीं सकोगी। हम लोग तो पैदल ही जाएँगे।"

"मुझे मालूम है, मैं भी पैदल चलूँगी। बहुत सुंदर जगह है लाल टिब्बा! वहाँ से बर्फ से ढकी चोटियाँ दिखाई देती हैं।"

"अरे वाह! तुम्हें बर्फ की चोटियाँ कब से पसंद आने लगीं? तुम्हें तो...." पूजा ने अभी बात पूरी नहीं की, पर उसे आगे क्या कहना था यह बात माँ और सुनील समझ गए थे।

"पूजा और सुनील! तुम लोग निधि को क्यों चिढ़ाते रहते हो? तुम इसे अपने साथ क्यों नहीं ले जा सकते? आखिर यह तुम्हारी छोटी बहन है।"

माँ के कहने पर सुनील निधि को ले जाने के लिए तैयार हो गया। बोला, "अच्छा ठीक है! निधि कल सुबह जल्दी तैयार हो जाना। देर मत करना, नहीं तो हम तुम्हें यहीं छोड़ जाएँगे।"

सुबह निधि सबसे पहले उठकर तैयार हो गई। आसमान एकदम साफ़, नीला-नीला दिख रहा था। ऐसे में पहाड़ की चोटियाँ बिल्कुल साफ़ दिखाई देती हैं। तैयार होने के बाद भी निधि के मन में उथल-पुथल हो रही थी। वह जानती थी कि भैया और दीदी उसे वहाँ भी चिढ़ाएँगे, पर वह जेम्स आंटी के साथ खाना खाने से बच जाएगी। लाल टिब्बा से लौटते-लौटते बच्चों को देर हो गई। सात बजे जब ये लोग लौटे, तो खूब थके थे। चारों तरफ़

अँधेरा घिर आया था। घर पहुँचते ही माँ ने निधि से कहा, "मिसेज जेम्स तुम्हारे लिए परेशान हो रही थीं, व
बार पूछ रही थीं कह रही थीं कि तुम उनसे कहकर क्यों नहीं गई। जाओ, जाकर मिल आओ।"

घर लौटते ही माँ की यह बात निधि को बहुत बुरी लगी। फिर भी उसने सोचा, चलो, एक बार जेम्स आंटी
देख आती हूँ। सुनील ने बुरा-सा मुँह बनाया, पर वह उसकी परवाह किए बिना सीढ़ियाँ चढ़ गई।

ऊपर तो बिल्कुल अँधेरा था। कमरे का दरवाजा सिर्फ़ अटका हुआ था। निधि ने दरवाजा खोला, तो जेम्स
की आवाज़ आई, "कौन है ..... अंदर
जाओ।" निधि अंदर कमरे में चली गई।
भी अँधेरा था। बस, दो बड़ी मोमबत्तियाँ
रही थी। निधि ने देखा कार्निस पर फ्रे
जड़ा बच्ची का एक फोटो रखा
मोमबत्तियाँ उसी के दोनों ओर रखी
रही हैं। नीचे छोटी-सी मेज पर एक
हुआ केक रखा है। केक पर लगी
मोमबत्तियाँ अभी जलाई ही नहीं गई हैं।

निधि ने आंटी के कंधे पर हाथ रखा।
"क्या बात है, आंटी?"

मिसेज जेम्स रो रही थीं। बोलीं, "आज मेरी
का जन्मदिन है।"

"आपकी बेटी कहाँ है, आंटी?"

उन्होंने तस्वीर की तरफ इशारा कर दिया। निधि ने ध्यान से दखा। तस्वीर की लड़की लगभग उसी की
की थी। केक पर भी दस मोमबत्तियाँ लगी हुई थीं। निधि चुप रह गई। उसकी समझ में नहीं आ रहा था
क्या कहे।

"हाँ निधि, मेरी भी एक बेटी थी। दो साल पहले वह अचानक मर गई। अगर आज वह होती, तो दस साल
होती।" फिर रुककर उन्होंने कहा, "उसका चेहरा बिल्कुल तुम्हारे चेहरे जैसा था। तुम जैसे हँसती हो, वह भी
ही हँसती थी। तुम जैसे बोलती हो, वह भी वैसे ही बोलती थी... मैंने तुम्हें जब पहली बार देखा, तो मुझे
मेरी बेटी मारिया मेरे पास वापस आ गई.... इसीलिए मैं तुम्हें सुनील और पूजा से कुछ ज़्यादा ही प्यार
लगी। मैं वही सब कुछ बनाकर तुम्हें खिलाती हूँ, जो मेरी मारिया को पसंद था। परंतु .... बेटी, मुझे माफ़ क
मैंने तुमको बहुत बाँध लिया था। तुम अपनी तरह नहीं रह पा रही थीं। मैं गलती पर थी, निधि! बेटी, मुझे
करना।" उनकी आँखों में आँसू आ गए।

निधि ने उठकर लाइट का स्विच दबाया, कमरे में उजाला हो गया। फिर उसने जेम्स आंटी के आँसू पोंछे
चुप हो जाइए, मैंने बहुत बुरा व्यवहार किया, माफ़ तो आप मुझे कर दीजिए।"

जेम्स आंटी ने उसे गले से लगा लिया और बोलीं, "मेरी बच्ची, तुम नहीं जानतीं कि तुमने मुझे कितनी खुशियाँ दी हैं। आओ चलो खाना खा लें। मैं खाना गर्म करके टेबल पर लगाती हूँ। तब तक तुम हाथ धो लो।"

"नहीं आंटी, पहले केक काट लें।"

जेम्स आंटी ने केक पर लगी मोमबत्तियाँ जलाईं। निधि ने उन मोमबत्तियों को एक ही फूँक में बुझा दिया और केक काटकर पहला टुकड़ा मिसेज जेम्स को खिलाया, फिर उनके गले से लिपटकर बोली, "आज से आप ही मेरी 'असली माँ' हैं और मैं आपकी 'असली बेटी'।"

अध्यापन संकेत बच्चों को समझाएँ कि हमें हमेशा दूसरों की भावनाओं का सम्मान करना चाहिए और कभी भी उनके प्रेम तथा सम्मान को ठेस नहीं पहुँचानी चाहिए।

शब्दार्थ

कार्निस - दीवार के सहारे सटा छोटा सा लकड़ी या सीमेंट का तख्ता; फ्रेम - फोटो के आस-पास का बॉर्डर।

अभ्यास

पाठ से

मौखिक प्रश्न

(क) फ्लैट की मालकिन कौन थी और कहाँ रहती थी?

(ख) मिसेज जेम्स निधि के खाने के लिए क्या-क्या लाती थी?

(ग) जेम्स आँटी को खुशियाँ किसने दी थी?

(घ) निधि को कौन चिढ़ाता था?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए-

(क) पूजा ने निधि को कहा-

(अ) दुष्ट

(ब) मूर्ख

(स) झगड़ालू

(द) भाग्यशाली

(ख) मिसेज जेम्स ने निधि के लिए बनाया था–

(अ) दलिया (ब) पास्ता

(स) चॉकलेट वाला केक (द) डोसा

(ग) निधि ने आंटी की दी हुई चॉकलेट-

(अ) खा ली (ब) फेंक दी

(स) रख ली (द) नहीं खाई

(घ) निधि अपने भाई-बहनों के साथ गई-

(अ) मेला देखने (ब) पिकनिक पर

(स) फिल्म देखने (द) पहाड़ों पर

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

किसने कहा-

(क) "नहीं आंटी, पहले केक काट लें।"

(ख) "मेरी बच्ची तुम नहीं जानती कि तुमने मुझे कितनी खुशियाँ दी हैं।"

(ग) "काश मिसेज जेम्स जैसी हमारी भी कोई 'असली माँ' होती, जो हमें प्यार करती।"

(घ) "इस तरह नहीं बोलते बेटी! मिसेज जेम्स तो तुम्हें बहुत प्यार करती हैं।"

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) प्रस्तुत कहानी में किस पीड़ा को व्यक्त किया गया है?

(ख) मिसेज जेम्स किसे सबसे अधिक प्यार करती थी और क्यों?

(ग) निधि मिसेज जेम्स से कतराने क्यों लगी?

(घ) पूजा और सुनील निधि को किस प्रकार चिढ़ाते थे?

भाषा-ज्ञान

1. पढ़िए और समझिए

(क) प्रेम, प्यार, स्नेह।

(ख) खुशी, प्रसन्नता, हर्ष।

(ग) मिनट, क्षण, पल।

(घ) हाथ, हस्त, कर।

2. बेमेल शब्द पर गोला बनाइए

(क) दाँत,	आँख,	टॉफी,	पैर।
(ख) भाई,	सास,	माँ,	बहन।
(ग) नया,	नवीन,	ताज़ा,	कठिन।
(घ) चिढ़,	ज़िद,	प्रेम,	क्रोध।

3. उचित वर्ग में रखिए

मम्मी, चॉकलेट, मोमबत्ती, व्यवहार, केक, उजाला, मुँह, माफ़, दवाई, सूप, भाग्यशाली, केवल, असली

हिंदी	उर्दू	अंग्रेज़ी
_____	_____	_____
_____	_____	_____
_____	_____	_____
_____	_____	_____

रचना के क्षण

भाव-भूमि– माँ के प्रेम का अनुभव आप सभी ने किया ही है। यदि माँ नहीं होती तो जीवन कितना नीरस हो जाता। इसी प्रकार अनुमान लगाइए कि जिस माँ से उसकी संतान बिछुड़ जाए, तो उसके हृदय में कैसे भाव उठते होंगे।

कल्पना व चिंतन

- बालक के पालन-पोषण के लिए माँ को कितने त्याग करने पड़ते है, इस तथ्य पर विचार कीजिए।

क्रिया-कलाप

- माँ की प्रशंसा में अनेक कवियों ने रचनाएँ की हैं, उन्हें ढूँढ़कर पढ़िए।

पठन हेतु

सवा सेर गेहूँ

किसी गाँव में शंकर नाम का एक कुरमी किसान रहता था। सीधा-सादा गरीब आदमी था, अपने काम से किसी के लेने में, न देने में। छक्का-पंजा न जानता था, छल-प्रपंच की उसे छूत भी न लगी थी। ठगे जाने न थी, ठग-विद्या न जानता था। भोजन मिला-खा लिया, न मिला-चबेने पर काट दी; चबेना भी न मिला पी लिया और राम का नाम लेकर सो गया। किंतु जब कोई अतिथि द्वार पर आ जाता था, तो उसे इस नि का त्याग करना पड़ता था। विशेषकर जब साधु-महात्मा पदार्पण करते थे, तो उसे अनिवार्यत: सांसारिकता लेनी पड़ती थी। खुद भूखा सो सकता था, पर साधु को कैसे भूखा सुलाता? भगवान के भक्त ठहरे!

एक दिन संध्या-समय एक महात्मा ने आकर उसके द्वार पर डेरा जमाया। तेजस्वी मूर्ति थी, पीतांबर गले सिर पर, पीतल का कमंडल हाथ में, खड़ाऊँ पैर में, ऐनक आँखों पर। संपूर्ण वेश उन महात्माओं का-सा रईसों के प्रासादों में तपस्या, हवागाड़ियों पर देवस्थानों की परिक्रमा और योगसिद्धि प्राप्त करने के लिए भोजन करते हैं। घर में जौं का आटा था, वह उन्हें कैसे खिलाता? प्राचीन काल में जौं का चाहे तो कु रहा हो, पर वर्तमान युग में जौं का भोजन सिद्ध पुरुषों के लिए दुष्पाच्य होता है। बड़ी चिंता हुई, महात्मा जी को क्या खिलाऊँ। आखिर निश्चय किया कि कहीं से गेहूँ का आटा उधार लाऊँ, पर गाँव भर में गेहूँ का आटा न मिला। गाँव में सब मनुष्य थे, देवता एक भी न था, अत: देवताओं का पदार्थ कैसे मिलता? सौभाग्य से गाँव के विप्र महाराज के यहाँ से थोड़े-से गेहूँ मिल गए। उसने सवा सेर गेहूँ उधार लिया और स्त्री से कहा कि पीस दे। महात्मा जी ने भोजन किया, लंबी तान कर सोए। प्रात:काल आशीर्वाद देकर अपनी राह ली।

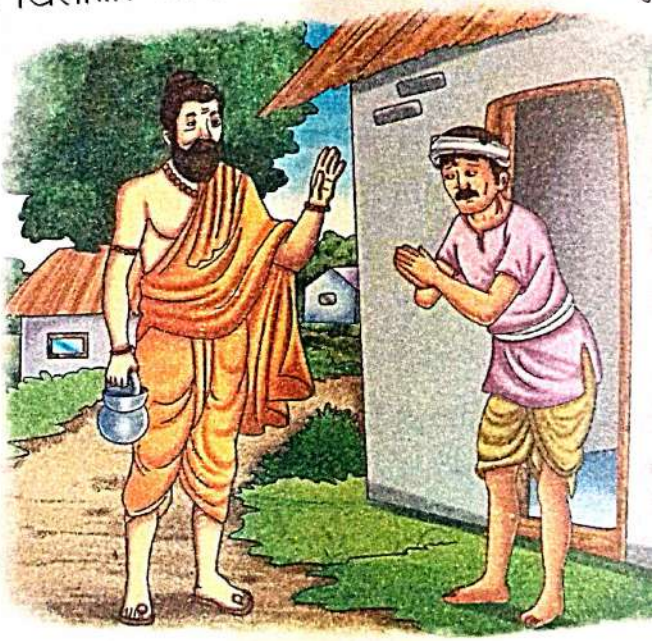

विप्र महाराज साल में दो बार खलिहानी किया करते थे। शंकर ने दिल में कहा— "सवा सेर गेहूँ लौटाऊँ, पसेरी के बदले कुछ ज्यादा खलिहानी दे दूँगा, ये भी समझ जाएँगे, मैं भी समझ जाऊँगा।" चैत विप्र जी पहुँचे, तो उन्हें डेढ़ पसेरी के लगभग गेहूँ दे दिया और अपने को उऋण समझकर उसकी कोई की। विप्र जी ने फिर कभी न माँगा। सरल शंकर को क्या मालूम था कि यह सवा सेर गेहूँ चुकाने के लि दूसरा जन्म लेना पड़ेगा।

सात साल गुजर गए। विप्र जी, विप्र से महाजन हुए, शंकर किसान से मज़ूर हो गया। उसका छोटा भा उससे अलग हो गया था। एक साथ रहकर दोनों किसान थे, अलग होकर मज़ूर हो गए थे। शंकर ने

द्वेष की आग भड़कने न पाए, किंतु परिस्थिति ने उसे विवश कर दिया। जिस दिन अलग-अलग चूल्हे जले, वह फूट-फूटकर रोया। आज से भाई-भाई शत्रु हो जाएँगे; एक रोएगा, तो दूसरा हँसेगा। एक के घर मातम होगा, तो दूसरे के घर गुलगुले पकेंगे। प्रेम का बंधन, खून का बंधन, दूध का बंधन आज टूट जाता है। उसने भगीरथ परिश्रम से कुलमर्यादा का वृक्ष लगाया था, उसे अपने रक्त से सींचा था, उसको जड़ से उखड़ता देखकर उसके हृदय के टुकड़े हो जाते थे। सात दिनों तक उसने दाने की सूरत तक न देखी। दिन भर जेठ की धूप में काम करता और रात को मुँह लपेटकर सोता रहता। इस भीषण वेदना और दुस्सह कष्ट ने रक्त को जला दिया, मांस और मज्जा को जला दिया। बीमार पड़ा, तो महीनों तक खाट से न उठा। अब गुज़र-बसर कैसे हो? पाँच बीघे के खेत रह गए, एक बैल रह गया, खेती क्या खाक होती। अंत में यहाँ तक नौबत आ पहुँची कि खेती केवल मर्यादा-रक्षा का साधन मात्र रह गई। जीविका का भार मज़ूरी पर आ पड़ा।

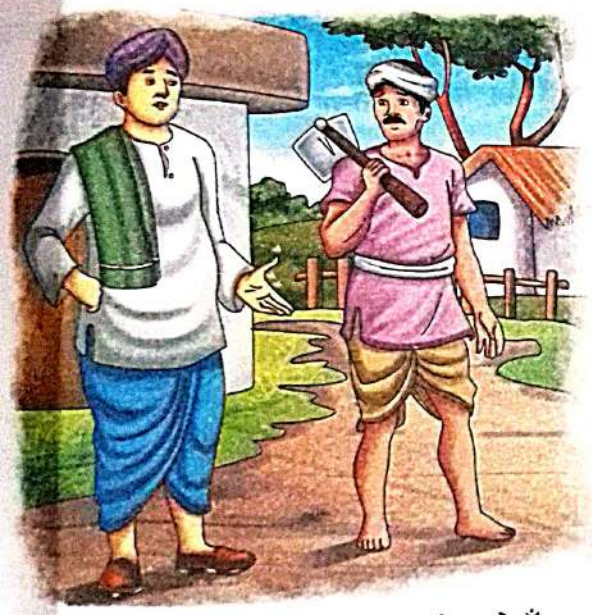

सात वर्ष बीत गए। एक दिन शंकर मजूरी करके लौटा, तो राह में विप्र जी ने टोककर कहा— "शंकर, कल आकर अपने बीज-बेंग का हिसाब कर ले। तेरे यहाँ साढ़े पाँच मन गेहूँ कब के बाकी पड़े हुए हैं और तू देने का नाम नहीं लेता, हज़म करने का मन है क्या?"

शंकर ने चकित होकर कहा— "मैंने तुमसे कब गेहूँ लिए थे जो साढ़े पाँच मन हो गए? तुम भूलते हो, मेरे यहाँ किसी का न छटाँक भर है, न एक पैसा उधार।"

विप्र— "इसी नीयत का तो फल भोग रहे हो कि खाने को नहीं जुड़ता।"

यह कहकर विप्र ने उस सवा सेर गेहूँ का जिक्र किया, जो आज से सात वर्ष पहले शंकर को दिया था। शंकर सुनकर अवाक् रह गया। ईश्वर! मैंने इन्हें कितनी बार खलिहानी दी, इन्होंने कौन सा काम किया? जब पोथी-पत्रा देखने, साइत-सगुन विचारने द्वार पर आते थे, कुछ न कुछ दक्षिणा ले ही जाते थे। इतना स्वार्थ! सवा सेर अनाज अंडे की भाँति से कर आज यह पिशाच खड़ा कर दिया, जो मुझे निगल जाएगा। इतने दिनों में एक बार भी कह देते, तो मैं गेहूँ तौल कर दे देता, क्या इसी नीयत से चुप साधे बैठे रहे। बोला— "महाराज नाम लेकर तो मैंने उतना अनाज नहीं दिया, पर कई बार खलिहानी में सेर-सेर, दो-दो सेर दिया है। अब आप साढ़े पाँच मन माँगते हैं, मैं कहाँ से दूँगा?"

विप्र— "लेखा जौ-जौ बखसी सौ-सौ। तुमने जो कुछ दिया होगा, उसका कोई हिसाब नहीं। चाहे एक की जगह चार पसेरी दे दो। तुम्हारे नाम बही में साढ़े पाँच मन लिखा हुआ है, जिससे चाहो हिसाब लगवा दो। दे दो तो तुम्हारा नाम छेंक दूँ, नहीं तो और भी बढ़ता रहेगा।"

शंकर— "पांडे, क्यों गरीब को सताते हो, मेरे खाने का ठिकाना नहीं, इतना गेहूँ कैसे किधर से लाऊँगा?"

विप्र— "जिसके घर से चाहो लाओ, छटाँक भर न छोड़ूँगा। यहाँ न दोगे, भगवान के घर दोगे।"

शंकर काँप उठा। हम पढ़े-लिखे आदमी होते, तो कह देते—अच्छी बात है, ईश्वर के घर ही देंगे। वहां र यहाँ से कुछ बड़ी तो न होगी। कम से कम इसका कोई प्रमाण हमारे पास नहीं, फिर उसकी क्या चिंता। कि इतना तार्किक, इतना व्यवहार-चतुर न था। एक तो ऋण, वह भी ब्राह्मण का। बही में नाम रह गया, तो मो में जाऊँगा, इस ख्याल से रोमांच हो आया। बोला— "महाराज! तुम्हारा जितना होगा, यहीं दूँगा। ईश्वर के द दें? इस जनम में तो खा ही रहा हूँ, उस जनम के लिए क्यों काँटे बोऊँ। मगर यह कोई नियाय नहीं है। तुमने पर्वत बना दिया, ब्राह्मण होके तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था। उसी घड़ी तगादा करके ले लिया होता, मेरे सिर पर इतना बड़ा बोझ क्यों पड़ता? मैं तो दूँगा, लेकिन तुम्हें भगवान के यहाँ जवाब देना पड़ेगा।"

विप्र— "वहाँ का डर तुम्हें होगा, मुझे क्यों होने लगा। वहाँ तो सब अपने ही भाई-बंधु हैं। ऋषि-मुनि ब्राह्मण ही हैं, देवता भी ब्राह्मण हैं, जो कुछ बने-बिगड़ेगी, संभाल लेंगे। तो कब देते हो?"

शंकर— "मेरे पास रखा तो है नहीं, किसी से माँग-जाँच कर लाऊँगा, तभी दे दूँगा।"

विप्र— "मैं यह न मानूँगा। सात साल हो गए, अब एक दिन का लिहाज न करूँगा। गेहूँ नहीं दे सकते। लिख दो।"

शंकर— "मुझे तो देना है, चाहे गेहूँ लो, चाहे दस्तावेज लिखाओ। किस हिसाब से दाम रखोगे?"

विप्र— "बाजार भाव पाँच सेर का है, तुम्हें सवा पाँच सेर का काट दूँगा।"

शंकर— "जब दे ही रहा हूँ तो बाजार भाव का दूँगा, पाव भर छुड़ाकर क्यों दोषी बनूँ?"

हिसाब लगाया तो गेहूँ का दाम साठ रुपए हुआ। साठ रुपए का दस्तावेज लिखवा लिया गया, तीन रुपय सूद। साल भर में न देने पर सूद की दर साढ़े तीन रुपए सैकड़े, बारह आने का स्टांप, एक रुपया दस्त तहरीर शंकर को ऊपर से देनी पड़ी। गाँव भर ने विप्र की निंदा की, लेकिन मुँह पर नहीं। महाजन से काम पड़ता है, उसके मुँह कौन आए। शंकर ने साल भर कठिन तपस्या की। मियाद के पहले रुपया अ का उसने व्रत-सा कर लिया। दोपहर को भी चूल्हा न जलता था, चबेने पर बसर होती थी, वह भी केवल लड़के के लिए रात को रोटियाँ रख दी जातीं। पैसे रोज़ का तंबाकू पी जाता था। यही एक व्य जिसका वह कभी त्याग न कर सका था। अब वह व्यसन भी इस कठिन व्रत के भेंट हो गया। उसने चिल दी, हुक्का तोड़ दिया और तंबाकू की हाँडी चूर कर डाली। कपड़े पहले ही चरमसीमा तक पहुँच चुके थे प्रकृति की न्यूनतम रेखाओं में आबद्ध हो गए थे। शिशिर की अस्थिबेधक शीत को उसने आग तापकर का इस ध्रुव संकल्प का फल आशा से बढ़कर निकला। साल के अंत में उसके पास साठ रुपए जमा हो गए समझा, पंडित जी को इतने रुपए दे दूँगा और कहूँगा, महाराज, बाकी रुपए भी जल्द ही आपके सामने करूँगा। पंद्रह रुपए की तो और बात है, क्या पंडित जी इतना भी न मानेंगे? उसने रुपए लिए और ले पंडित जी के चरण-कमलों पर अर्पण कर दिए।

पंडित जी ने विस्मित होकर पूछा— "किसी से उधार लिए क्या?"

शंकर— "नहीं महाराज! आपके असीस से अबकी मज़ूरी अच्छी मिली।"

विप्र— "लेकिन ये तो साठ रुपए ही हैं।"

शंकर— "हाँ, महाराज! इतने अभी लीजिए, बाकी दो-तीन महीने में दूँगा, मुझे उरिन कर दीजिए।"

विप्र— "उरिन तो तभी होंगे, जब मेरी कौड़ी-कौड़ी चुका दोगे। जाकर मेरे पंद्रह रुपए और लाओ।"

शंकर— "महाराज! इतनी दया करो, अब साँझ की रोटियों का भी ठिकाना नहीं है, गाँव में हूँ, तो कभी-न-कभी दे ही दूँगा।"

विप्र— "मैं यह रोग नहीं पालता, न बहुत बातें करना जानता हूँ। अगर रुपए पूरे न मिलेंगे, तो आज से साढ़े तीन रुपए सैकड़े का ब्याज लगेगा। अपने रुपए चाहे घर रखो, चाहे मेरे यहाँ छोड़ जाओ।"

शंकर— "अच्छा जितना लाया हूँ, उतना रख लीजिए। जाता हूँ, कहीं से पंद्रह रुपए और लाने की फ़िक्र करता हूँ।"

शंकर ने सारा गाँव छान मारा, मगर किसी ने रुपए न दिए। इसलिए नहीं कि उसका विश्वास न था या किसी के पास रुपया न था, बल्कि पंडित जी के शिकार को छेड़ने की किसी में हिम्मत न थी।

क्रिया के पश्चात् प्रतिक्रिया का नैसर्गिक नियम है। शंकर साल भर तक तपस्या करने पर जब ऋण से मुक्त होने में सफल न हो सका, तो उसका संयम निराशा के रूप में परिणित हो गया। उसने समझ लिया कि जब इतना कष्ट सहने पर भी मैं साठ रुपए से अधिक जमा न कर सका, तो अब और कौन सा उपाय है जिसके द्वारा उससे दूने रुपए जमा हों। जब सिर पर ऋण का बोझ ही लदना है, तो क्या मन का और क्या सवा मन का। उसका उत्साह क्षीण हो गया, मेहनत से घृणा हो गई। आशा उत्साह की जननी है। आशा में तेज है, बल है, जीवन है। आशा ही संसार की संचालक शक्ति है। शंकर आशाहीन होकर उदासीन हो गया। वे ज़रूरतें जिसने उसको साल भर तक टाल रखा था, अब द्वार पर खड़ी होने वाली भिखारिनी न थीं, बल्कि छाती पर सवार होने वाली पिशाचिनियाँ थीं, जो अपनी भेंट लिए बिना जान नहीं छोड़तीं। कपड़ों में चकतियों के लगने की भी एक सीमा होती है। अब शंकर को चिट्ठा मिलता, तो वह रुपए जमा न करता। कभी कपड़े लाता, कभी खाने की कोई वस्तु। जहाँ पहले तंबाकू ही पिया करता था, वहाँ अब गाँजे और चरस का चस्का भी लगा। उसे अब रुपए अदा करने की कोई चिंता न थी, मानो उसके ऊपर किसी का एक पैसा नहीं आता। पहले जूड़ी चढ़ी होती थी, पर वह काम करने अवश्य जाता था। अब काम पर न जाने के लिए बहाना खोजा करता।

इस भाँति तीन वर्ष निकल गए। विप्र जी महाराज ने एक बार भी तकादा न किया। वे चतुर शिकारी की भाँति अचूक निशाना लगाना चाहते थे। पहले से शिकार चौंकाना उनकी नीति के विरुद्ध था।

एक दिन पंडित जी ने शंकर को बुलाकर हिसाब दिखाया। साठ रुपए जो जमा थे, वे भिनहा करने पर भी शंकर के जिम्मे एक सौ बीस रुपए निकले।

शंकर— "इतने रुपए तो उसी जन्म में दूँगा, इस जन्म में नहीं हो सकते।"

विप्र— "मैं इसी जन्म में लूँगा। मूल न सही, सूद तो देना ही पड़ेगा।"

शंकर— "एक बैल है, वह ले लीजिए। एक झोंपड़ी है, वह ले लीजिए और मेरे पास क्या रखा है?"

विप्र— "मुझे बैल-बधिया लेकर क्या करना है? मुझे देने को तुम्हारे पास बहुत कुछ है।"

शंकर— "कुछ नहीं है।"

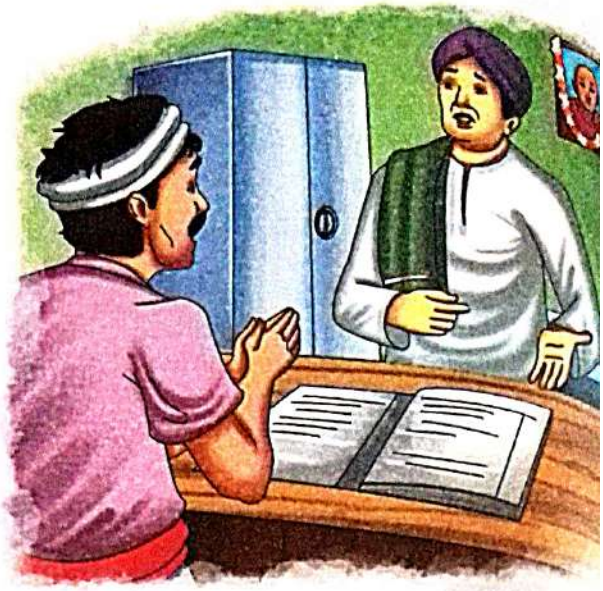

विप्र— "तुम तो हो। आखिर तुम भी कहीं मज़दूरी करने जाते ही हो, मुझे भी खेती के लिए मज़दूर रखना ही पड़ता है। सूद में हमारे यहाँ काम किया करो, जब सुभीता हो, मूल दे देना। सच तो यों है कि अब तुम किसी दूसरी जगह काम करने नहीं जा सकते, जब तक मेरे रुपए नहीं चुका देते। तुम्हारे पास कोई जायदाद नहीं है, इतनी बड़ी गठरी मैं किस एतबार से छोड़ दूँ? कौन इसका जिम्मा लेगा कि तुम मुझे महीने-महीने सूद देते जाओगे? और, कहीं कमाकर जब तुम मुझे सूद भी नहीं दे सकते, तो मूल की कौन कहे?"

शंकर— "महाराज, सूद में तो काम करूँगा और खाऊँगा क्या?"

विप्र— "तुम्हारी घरवाली है, लड़के हैं, क्या वे हाथ-पाँव कटा के बैठेंगे? तुम्हें आधा सेर जौं रोज़ कले लिए दे दिया करूँगा। ओढ़ने को साल में एक कंबल पा जाओगे, एक मिरजई भी बनवा दिया करूँगा, औ चाहिए? यह सच है कि और लोग तुम्हें छह आने रोज़ देते हैं, लेकिन मुझे ऐसी गरज नहीं है, मैं तो तुम्हें रुपए भरने के लिए रखता हूँ।"

शंकर ने कुछ देर तक गहरी चिंता में पड़े रहने के बाद कहा— "महाराज! यह तो जनम भर की गुलामी हुई

विप्र— "गुलामी समझो, चाहे मज़दूरी समझो। मैं अपने रुपए भराए बिना तुमको कभी न छोड़ूँगा। तुम न भरे तुम्हारा लड़का भरेगा। हाँ, जब कोई न रहेगा, तब की दूसरी बात है।"

इस निर्णय की कहीं अपील न थी। मजूर की जमानत कौन करता? कहीं शरण न थी। भागकर कहाँ जाता? दिन विप्र जी के यहाँ काम करना शुरू कर दिया। सवा सेर गेहूँ की बदौलत उम्र भर के लिए गुलामी की पैरों में डालनी पड़ी। उस अभागे को अब अगर किसी विचार से संतोष होता था, तो यह था कि यह मेरे पूर्व का संस्कार है। स्त्री को वे काम करने पड़ते थे, जो उसने कभी न किए थे। बच्चे दानों को तरसते थे, शंकर चुपचाप देखने के सिवा और कुछ न कर सकता था। गेहूँ के दाने किसी देवता के शाप की भाँति आ उसके सिर से न उतरे।

शंकर ने विप्र जी के यहाँ बीस वर्ष तक गुलामी करने के बाद इस दुस्साहर संसार से प्रस्थान किया। एक सौ रुपए अभी तब उसके सिर पर सवार थे। पंडित जी ने उस गरीब को ईश्वर के दरबार में कष्ट देना उचि समझा। इतने अन्यायी, इतने निर्दयी वे न थे। उसके जवान बेटे की गरदन पकड़ी। आज तक वह विप्र जी के काम करता है। उसका उद्धार कब होगा, होगा भी या नहीं, ईश्वर ही जानें।

ऐसे शंकरों और ऐसे विप्रों से दुनिया खाली नहीं है।

अध्याय

13.

वशीकरण एक मंत्र है

मीठी बोली के महत्व को प्रतिपादित करते हुए महात्मा तुलसीदास ने इसे वश में करने वाला मंत्र कहकर पुकारा है। इस निबंध में इसी विचार का विस्तार किया गया है।

भाषा मनुष्य का विशेष अधिकार है। भाषा के कारण ही मनुष्य इतनी उन्नति कर सका है। जानवर हज़ारों वर्ष से जहाँ-के-तहाँ बने हुए हैं, किंतु मनुष्य उत्तरोत्तर उन्नति करता चला आया है। अन्य जानवरों की अपेक्षा मनुष्य भौतिक बल में न्यून होता हुआ भी अपनी बुद्धि और भाषा के सहारे सबसे अधिक सबल हो गया है। उसने पंच-महाभूत को अपने वश में कर लिया है। यह सब भाषा द्वारा सहकारिता के बल पर ही हो सका है। भाषा द्वारा हमारे ज्ञान और अनुभव की रक्षा होती है।

भाषा द्वारा मनुष्य की सामाजिकता कायम है, किंतु भाषा का दुरुपयोग उसे छिन्न-भिन्न भी कर देता है। एक मधुर शब्द दो रूहों को मिला देता है और एक कटु शब्द दो मित्रों के मन में वैमनस्य उत्पन्न कर देता है।

अब प्रश्न यह है कि मधुर भाषी किसे कहते है? साधारणतया जो वस्तु मनोनुकूल होती है, जिससे चित्त प्रभावित होता है, वही मधुर भाषा कहलाती है। माधुर्य भाषा का भी गुण है।

वचनों का माधुर्य हृदय-द्वार खोलने की कुंजी है। वचनों का आकर्षण न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण और चुंबक के आकर्षण से भी बढ़कर है। तभी तो तुलसीदास ने कहा है :

तुलसी मीठे वचन ते सुख उपजत चहुँ ओर,
वशीकरण एक मंत्र है, तज दे वचन कठोर।

एक ही बात को हम कर्णकटु शब्दों में कहते हैं और उसी को हम मधुर बना सकते हैं। बाणभट्ट जब मरने वाले थे, तब यह प्रश्न उठा कि उनकी अधूरी 'कादंबरी' कौन पूरा करेगा? उन्होंने अपने दोनों लड़कों को बुलाया और उनसे पूछा कि सामने जो सूखा वृक्ष पड़ा है, उसको तुम किस प्रकार अपनी भाषा में व्यक्त करोगे? बड़े लड़के ने कहा, 'शुष्कंकाष्ठ तिष्ठत्यग्रे।' दूसरे ने कहा, 'नीरस तरूवर विलसति परतः।' बात एक ही थी, कहने में फ़र्क था। बाणभट्ट ने अपने छोटे लड़के को ही पुस्तक पूरी करने का भार सौंपा।

यह तो रही साहित्य के शब्द-संयोजन की बात। भाषा से साधारण बोल-चाल में भी बड़ा अंतर हो जाता है। भाव को प्रभावशाली भाषा में व्यक्त कर देना ही साहित्य है। जो मनुष्य किसी गलतफहमी को दूर कर रूठे हुए मित्र को मना लेता है, वह सच्चा साहित्यिक है। वार्तालाप की शिष्टता मनुष्य को आदर का पात्र बनाती है। समाज में उसकी सफलता के लिए रास्ता साफ़ कर देती है। मनुष्य का समाज पर प्रभाव पड़ता है, वह बहुत अंश में पोशाक और चाल-ढाल पर निर्भर रहता है, किंतु विष भरे कनक-घटों की संसार में कमी नहीं है। यह प्रभाव ऊपरी होता है। और पोशाक का मान जब तक भाषा से पुष्ट नहीं होता, तब तक स्थायी नहीं होता। मधुरभाषी के लिए करनी और कथनी का साम्य आवश्यक है, किंतु कर्म के लिए वचन पहली सीढ़ी है। मधुर वचन ही विश्वास उत्पन्न कर भय और आतंक का परिमार्जन कर देते हैं। कटुभाषी लोगों से लोग हृदय खोलकर बात करने से डरते हैं। सामाजिक व्यवहार के लिए विचारों का आदान-प्रदान आवश्यक है और वह भाषा की शिष्टता और स्पष्टता के विना प्राप्त नहीं होता है। भाषा की सार्थकता इसी से है कि वह दूसरों पर यथेष्ट प्रभाव डाल सके। जब बुरे वचन आदमी को रुष्ट कर सकते हैं, तो मधुर वचन दूसरे को प्रसन्न भी कर सकते हैं। शब्दों का जादू बड़ा जबर्दस्त होता है।

मधुर वचन के साथ भी आवश्यक है कि उनके पीछे भाव भी शिष्ट-मधुर हो, नहीं तो वे मुलम्मे के सिक्कों की भाँति बेकार रहेंगे। हृदय की मलीनता और मधुर वचनों का योग नहीं हो सकता है। वचन के अनुकूल जब कर्म होते हैं, तभी मनुष्य वंदय बनता है।

मनुष्य के चरित्र के असली परिचायक उसके कर्म भी होते हैं, किंतु बिना मधुर वचनों के लोग दूसरों के सद्व्यवहार का भी लाभ नहीं उठाना चाहते हैं। 'मानो महतां धनम्' मान ही बड़े आदमियों का धन होता है। जो लोग बिना मान के दान देते हैं, उनका दान स्वीकार नहीं होता। मान का दान भी बहुत होता है और रहीम के शब्दों में 'अमी पियावै मान बिनु सो नर मोहि न सुहाय' - मिष्ट भाषण समाज-सेवक का एक आवश्यक गुण हो जाता है।

ये गुण जन्म से तो प्राप्त होते हैं, किंतु शिक्षा द्वारा भी ऐसे शुभ अभ्यास और संस्कार बनाए जा सकते हैं। मन, वाणी और कर्म का सामंजस्य ही मनुष्य को श्रेष्ठता के पद पर पहुँचाता है। फिर भी वचनों का विशेष महत्व है, क्योंकि एक कटु वचन सारे किए-धरे पर पानी फेर सकता है। यद्यपि यह ठीक है कि दुधारू गाय की दो लातें भी सहन की जाती हैं, फिर भी दूसरे के स्वाभिमान का हनन कर उसके साथ उपकार करना कोई महत्व नहीं रखता। वाणी की मधुरता के साथ विनयपूर्वक व्यवहार की भी आवश्यकता है। विनयपूर्ण व्यवहार ही शिष्टाचार है। शिष्टाचार का अर्थ लोग दिखावा या तकल्लुफ मानते हैं। लेकिन वास्तव में उसका अर्थ है - सज्जनोचित व्यवहार। मधुर भाषण के साथ इसका भी मूल्य है। इनके द्वारा मनुष्य को शिक्षा-दीक्षा और कुल की परंपरा और मर्यादा का परिचय मिलता है।

शिष्टाचार वाणी का भी होता है और व्यवहार का भी। वाणी के शिष्टाचार में अपनों से बड़े को 'आप' कहकर 'आप क्या कहते हैं' के स्थान पर 'आपकी क्या आज्ञा है' जैसे वाक्य अधिक वांछनीय समझे जाते हैं।

किसी काम को कराने के लिए 'कृपया' शब्द का प्रयोग शिष्टता का परिचायक होता है। काम हो जाने के पश्चात् 'धन्यवाद' कहना भी ज़रूरी है। जो अपने से नीचे है, उनसे कोई ऐसी बात न कही जाए कि जिससे यह प्रकट हो कि हम उनको नीचे समझते हैं। अपने से कम स्थिति के लोगों के स्वाभिमान की रक्षा करना सज्जन लोगों का पहला कर्तव्य है।

जो काम करना है, उसको प्रसन्नता से करना चाहिए और उसके संबंध में कोई ऐसा शब्द भी नहीं कहना चाहिए, जिससे प्रकट हो कि यह काम अन्यमनस्कता से किया जा रहा है या उस काम के करने से दूसरे के साथ एहसान किया जा रहा है। या तो कोई वस्तु न दें और दें, तो पूर्ण उदारता से और प्रसन्नता के साथ कम से कम जहाँ क्रिया में उदारता हो वहाँ 'वचने दरिद्रता' नहीं आने देनी चाहिए।

यदि इनकार ही करना पड़े, तो उसमें अधिकार और अभिमान की गंध नहीं आनी

चाहिए। इनकार मजबूरी के ही कारण होना चाहिए, चाहे वह सैद्धांतिक मजबूरी हो या आर्थिक। इनकार शिष्ट के साथ भी हो सकता है और अशिष्टता के साथ भी। प्रायः लोग अशिष्टता से यह कह देते हैं – 'जाओ, अमुक वस्तु यहाँ कहाँ से आई, तुम्हारा कोई लेना-देना नहीं है? घरवालों को तो जुड़ता नहीं, तुम्हें लिए कहाँ से लाए?' इनकार करने में जो बातें कही जाए, उनमें पराएपन का भाव नहीं आने देना चाहि इनकार करते समय खेद प्रकट करना शिष्टाचार की माँग है। कहना चाहिए, 'मुझे बड़ा खेद है कि आ लिए इनकार करना पड़ा। आपने यहाँ आने या माँगने का कष्ट किया और, मैं इस विषय में आपकी सेवा न सका।'

वार्तालाप में हमको व्यापारिक बातचीत और निजी बातचीत में थोड़ा अंतर करना होगा। व्यापारिक बातचीत अशिष्ट नहीं होनी चाहिए, किंतु वह नपी-तुली हो सकती है। निजी संबंध की बातचीत में आत्मीयता का अ नहीं रहना चाहिए और थोड़ा-सा कष्ट उठाकर बात को पूरी तौर से समझा देना अपना कर्तव्य हो जाता है। लोग सबके साथ निजी संबंध की तरह ही वार्तालाप करते हैं। यह बुरा नहीं है, किंतु बात उतनी ही कही जितनी निभाई जा सके।

—बाबू गुलाब

विद्यार्थियों को मधुर भाषण की प्रेरणा देते हुए कटु वचनों से भयंकर परिणामों से अवगत कराएँ।

शब्दार्थ

उत्तरोतर - क्रम से; कटु शब्द - कड़वी बात; कर्णकटु - कानों को कड़वे प्रतीत होने वाले शब्द; मुलम्मे - पॉलिश किए हुए; मिष्ट - मीठा; न्यून - कम; वैमनस्य - वैर भाव; रूहों - आत्माओं; अन्यमनस्कता - अनमने भाव से।

अभ्यास

पाठ से

मौखिक प्रश्न

(क) मनुष्यों ने जानवरों से बहुत अधिक प्रगति की है, इसका क्या कारण है?

(ख) जानवर और मनुष्य किसमें भौतिक बल अधिक है?

(ग) एक कटु वचन का क्या परिणाम हो सकता है?

(घ) शिष्टाचार क्या है?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) इस निबंध के लेखक हैं–

(अ) हरिशंकर परसाई ⬡ (ब) श्याम सुंदरदास ⬡

(स) गुलाबराय ⬡ (द) रामधारी सिंह दिनकर ⬡

(ख) शिष्टाचार होता है–

(अ) केवल वाणी का ⬡ (ब) वाणी और व्यवहार का ⬡

(स) काल्पनिक ⬡ (द) अति आदर्शपूर्ण वार्तालाप ⬡

(ग) हृदय द्वार खोलने की कुंजी है–

(अ) धन ⬡ (ब) शक्ति ⬡

(स) मधुर वाणी ⬡ (द) उपदेश ⬡

(घ) यदि किसी को कोई वस्तु दें, तो–

(अ) एहसान जताएँ ⬡ (ब) सबको बताएँ ⬡

(स) शीघ्र वापिस माँग लें ⬡ (द) उदारता और प्रसन्नता के साथ दें ⬡

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) किसी काम को कराने के लिए किस शब्द का प्रयोग शिष्टता का परिचायक होगा?

(ख) भाषा द्वारा किसकी रक्षा होती है?

(ग) सहकारिता का वल किसे कहते हैं?

(घ) मधुर वचनों के आकर्षण को किन अन्य आकर्षणों से भी वड़ा माना गया है?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

आशय स्पष्ट कीजिए–

(क) 'एक कटु वचन सारे किए धरे पर पानी फेर सकता है।'

(ख) किसी वस्तु को देने से इनकार करने की विवशता हो, तो हमें किस प्रकार कहना चाहिए?

(ग) व्यापारिक और निजी वातचीत में क्या अंतर होता है?

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों को उनके विलोम शब्दों से सुमेल कीजिए

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) श्रेष्ठ	(i) दंभ
(ख) विनय	(ii) अशिष्ट
(ग) शिष्ट	(iii) स्वामी
(घ) मधुर	(iv) निकृष्ट
(ङ) सेवक	(v) कटु

2. समझकर लिखिए

(क) शिष्टाचार — शिष्ट + आचार

(ख) विनयपूर्वक — _____ + _____

(ग) क्षमाशील — _____ + _____

(घ) परिमार्जन — _____ + _____

3. 'परि' उपसर्ग का प्रयोग करके शब्द को पुनः लिखिए-

(क) कल्पना — परिकल्पना

(ख) योजना — _____

(ग) भ्रमण — _____

(घ) त्याग — _____

(ङ) भाषा — _____

(च) कल्पना — _____

4. वाक्यांशों के लिए एक-एक शब्द लिखिए-

(क) मीठा बोलने वाला — _____

(ख) कड़वा बोलने वाला — _____

(ग) कम बोलने वाला — _____

(घ) न बोलने वाला — _____

(ङ) बहुत अधिक बोलने वाला — _____

रचना के क्षण

- **भाव-भूमि–** आपने मीठे और कड़वे दोनों प्रकार के वचन सुने होंगे। इन दोनों का निजी अनुभव बताइए।

कल्पना व चिंतन

विचार कीजिए कि वाणी के प्रभाव से किस प्रकार हृदय में क्रोध अथवा प्रेम उत्पन्न होते हैं। व्यक्ति का दृष्टिकोण सकारात्मक है या नकारात्मक, यह वाणी से किस प्रकार जाना जा सकता है? बताइए।

क्रिया-कलाप

दी गई पंक्तियों का अर्थ जानकर इन्हें याद कीजिए–

1. "रहिमन मोहे न सुहाय
   अमिय पियावत मान बिनु।
   जो विष देत बुलाय
   प्रेम सहित मरिबो भलो।"

2. "आब नहीं, आदर नहीं, नैनन नहीं स्नेह,
   रहिमन तहाँ न जाइए भले कंचन बरसै मेह।"

'अच्छे विचार ही मीठी बोली का आधार है' इस विषय पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

अलग-अलग कीजिए–

अबे इधर आ, कृपया विराजिए, आपका स्वागत है, क्यों आए हो?, तुमसे कुछ नहीं हो सकता, कोशिश कीजिए, आपमें क्षमता है, बार-बार एक ही गलती करना तुम्हारी आदत है, शाबाश तुमने बढ़िया किया!

मधुर वचन	कटु वचन

अध्याय

14. स्वर्ग बना सकते हैं

प्रस्तुत कविता में कृष्ण धर्मराज युधिष्ठिर को संसार की रीति-नीति समझाते हुए कह रहे हैं कि संसार में न्यायोचित बात की अवहेलना करना ही द्वेष का कारण बनता है। इसी सत्यता पर कविता में प्रकाश डाला गया है।

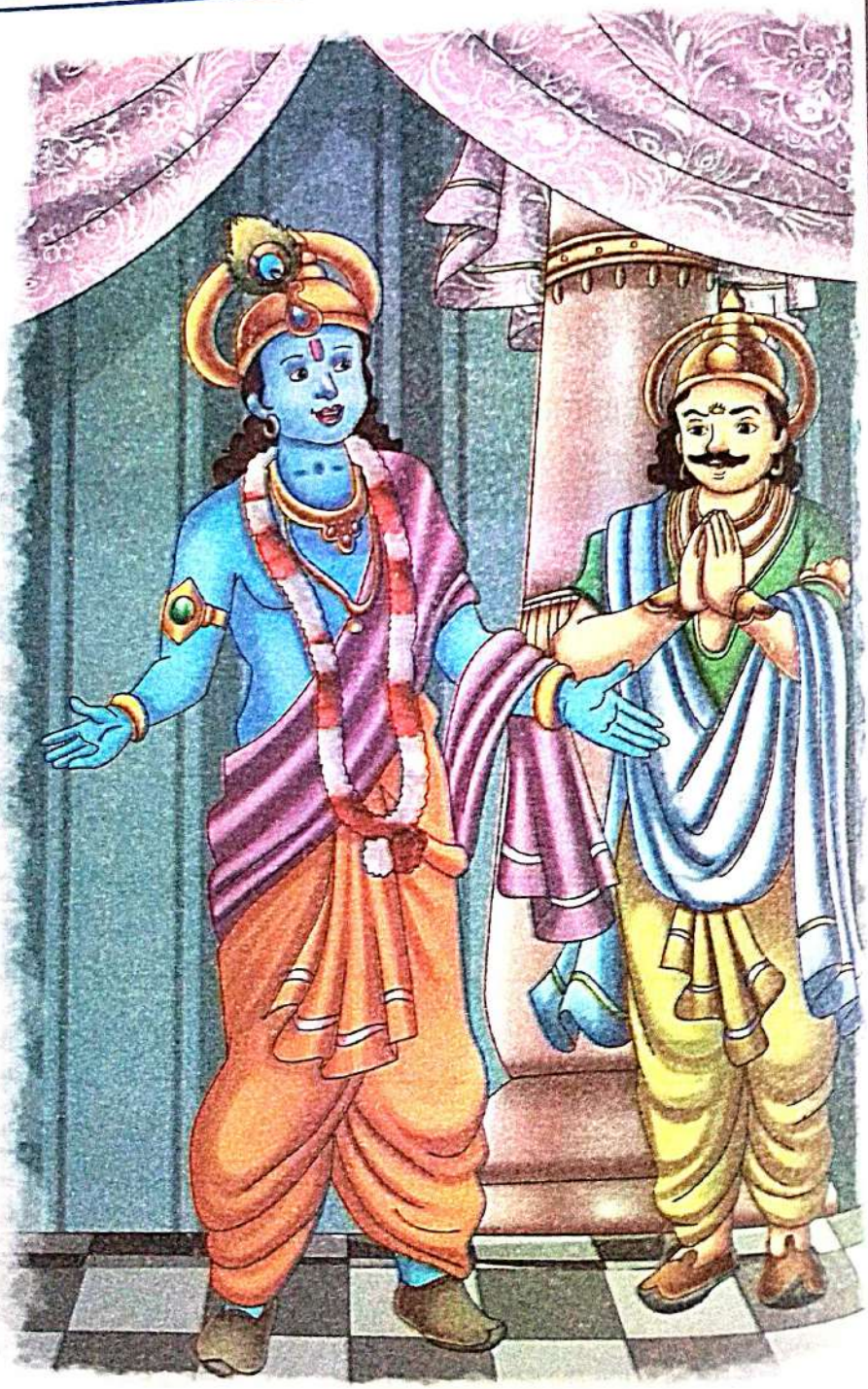

धर्मराज, यह भूमि किसी की
नहीं क्रीत है दासी
है जन्मना समान परस्पर
इसके सभी निवासी।

सबको मुक्त प्रकाश चाहिए
सबके मुक्त समीरण
बाधारहित विकास, मुक्त
आशंकाओं से जीवन।

लेकिन विघ्न अनेक अभी
इस पथ पर पड़े हुए हैं
मानवता की राह रोककर
पर्वत अड़े हुए हैं।

न्यायोचित सुख सुलभ नहीं
जब तक मानव-मानव को,
चैन कहाँ धरती पर तब तक
शांति कहाँ इस भव को?

जब तक मनुज-मनुज का यह
सुख भाग नहीं सम होगा,
शमित न होगा कोलाहल-
संघर्ष नहीं कम होगा।

उसे भूल वह फँसा परस्पर
ही शंका में, भय में,
लगा हुआ केवल अपने में
और भोग संचय में।

प्रभु के दिए हुए सुख इतने
है विकीर्ण धरती पर,
भोग सकें जो उन्हें जगत में
कहाँ अभी इतने नर?

सब हो सकते तुष्ट, एक-सा
सब सुख पा सकते हैं,
चाहें तो पल में धरती को
स्वर्ग बना सकते हैं।

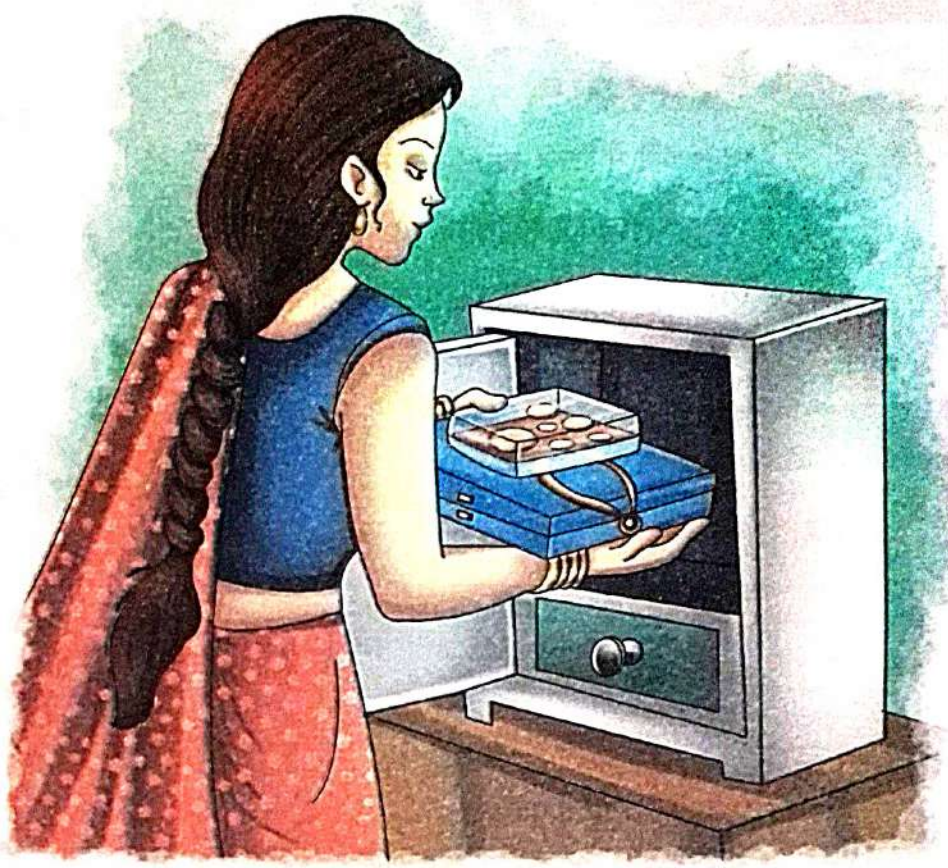

—रामधारी सिंह 'दिनकर'

अध्यापन संकेत

विद्यार्थियों को कविता के माध्यम से स्पष्ट कीजिए कि निर्धन-धनी के भेद को कैसे दूर किया जा सकता है।

शब्दार्थ

क्रीत - खरीदी हुई; समीरण - हवा; मनुज - मनुष्य; न्यायोचित - न्याय के अनुसार ठीक-ठाक; भोग संचय - भोगने के पदार्थ एकत्र करना; दासी - गुलाम; भव - संसार; शमित - शांत; विकीर्ण - बिखरे।

अभ्यास

कविता से

मौखिक प्रश्न

(क) कवि ने किन्हें समान बताया है?

(ख) धर्मराज का संबोधन किसे दिया गया है?

(ग) मनुष्य को शांति कब मिल सकती है?

(घ) प्रभु ने हमें कितने सुख दिए हैं?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) सभी को चाहिए–

(अ) मुफ़्त आटा

(ब) मुफ़्त कपड़े

(स) मुक्त प्रकाश

(द) मुफ़्त दवाई

(ख) मानव की सहज इच्छाओं के बीच है–

(अ) विघ्न

(ब) लोभ

(स) स्वप्न

(द) राज्य

(ग) शांति तभी हो सकती है–

(अ) जब राजा चाहे

(ब) जब उचित न्याय के अनुसार बँटवारा हो

(स) सभी वीर हो

(द) सभी नेता हो

(घ) प्रभु ने धरती पर सुख दिए हैं–

(अ) गिनकर

(ब) केवल भक्तों को

(स) बहुत अधिक

(द) केवल क्षत्रियों को

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) क्या धरती पर किसी का विशेष अधिकार है?

(ख) मनुष्य को किससे मुक्त जीवन चाहिए?

(ग) मनुष्य किस काम में लगा हुआ है?

(घ) व्यक्ति चाहे, तो क्या होना संभव है?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

आशय स्पष्ट कीजिए–

(क) मानवता की राह रोककर पर्वत अड़े हुए हैं।

(ख) उसे भूल वह फँसा परस्पर
ही शंका में भय में,
लगा हुआ केवल अपने में
और भोग संचय में।

भाषा-ज्ञान

1. तुक मिलाइए

(क) दासी / _____

(ख) समीकरण / _____

(ग) मानव / _____

(घ) पर / _____

(ङ) भय / _____

2. सुमेल कीजिए

(क) नर	(i) पवन
(ख) समीरण	(ii) इंसानियत
(ग) मानवता	(iii) संतुष्ट
(घ) तुष्ट	(iv) पुरुष

रचना के क्षण

भाव-भूमि– महाभारत की पूरी कथा जानिए और उसमें कृष्ण की भूमिका को समझिए।

कल्पना व चिंतन

यदि श्रीकृष्ण आज होते, तो वर्तमान जगत के प्रति क्या उद्‌बोधन देते, कल्पना कीजिए।

क्रिया-कलाप

रामधारी सिंह दिनकर द्‌वारा रचित काव्य 'कुरुक्षेत्र' को पढ़िए और कवि के संदेश को समझने का प्रयास कीजिए।

पठन हेतु

प्यार की जीत

सिद्धार्थ	:	कपिलवस्तु के राजकुमार
देवदत्त	:	सिद्धार्थ के चचेरे भाई
शुद्धोधन	:	कपिलवस्तु के महाराज, सिद्धार्थ के पिता
मंत्री	:	महाराज के मंत्री
सखा	:	सिद्धार्थ के मित्र
प्रतिहारी	:	एक पहरेदार

पहला दृश्य

(रंगमंच पर राजमहल के पास उद्यान का एक दृश्य। संध्याकाल। मंच पर लालिमा है। पुष्प झूमते हैं। वन से लौटती गौओं का स्वर उठता है। पक्षी विदा गान गाते हैं।)

सखा : अरे-अरे कुमार! ऊपर तो देखो, कैसे सुंदर पक्षी हैं?

सिद्धार्थ : *(ऊपर देखता हुआ)* अरे मित्र, ये तो राजहंस हैं।

सखा : देखो, इकट्ठे उड़ते हुए वे कैसे अच्छे लग रहे हैं?

सिद्धार्थ : सचमुच बहुत अच्छे लग रहे हैं। इनकी गरदनें तो देखो, कैसे आगे को निकली हुई हैं! लगता है हवा में तैर रहे हैं।

सखा : हाँ, जब ये अपने पंख हिलाना बंद कर देते हैं, तो लगता है कि तैर रहे हों।

सिद्धार्थ : *(हँसकर)* सच मित्र।

सिद्धार्थ : *(ऊपर देखते-देखते)* अरे-अरे मित्र, देखो! यह क्या हुआ?

सखा : *(घबराकर)* क्या हुआ कुमार! अरे, यह तीर किसने चलाया?

सिद्धार्थ : *(उतावलेपन से)* और उस पक्षी को देखो, वह किस तेज़ी से भूमि पर जा रहा है!

(उसी तरह) वह घायल हो गया है। उसकी चीख तो सुनो और वे शेष पक्षी कैसे प्राण बचाकर भाग रहे हैं? *(सिद्धार्थ आगे बढ़ते हैं। हंस उनके पास आ गिरता है। उसके शरीर में तीर लगा हुआ है और रक्त बह रहा है। कुमार करुणा से ओत-प्रोत होकर उसे उठा लेते हैं और गोद में रखकर उसे सँभालते हैं।)*

सिद्धार्थ : किस निर्दय ने इस भोले-भाले पक्षी को घायल किया है? इसने किसी का क्या बिगाड़ा था?

(हंस के शरीर से तीर निकालते हुए) क्या सुंदर होना पाप है? क्या प्यारा लगना बुरा है? *(तीर निकल जाने पर हंस सुख अनुभव करता है और बड़े अनुराग से कुमार की गोद में चिपक जाता है। कुमार स्नेह से उसके शरीर पर हाथ फेरते हैं।)*

सखा : किसने इस बेचारे को तीर मारा?

सिद्धार्थ : हाँ, किसने.....

सखा : पक्षी का शिकार खेलना मनुष्य का धर्म है, विशेषकर क्षत्रिय का।

सिद्धार्थ : पर मैं पूछता हूँ, यह धर्म किसने बनाया है? शक्ति तो मनुष्य के हाथ में हैं। वह अपने स्वार्थ के लिए जो चाहे कर लेता है। तुम इस पक्षी को ध्यान से देखो।

सखा : देख रहा हूँ, मित्र।

सिद्धार्थ : बताओ, यह क्या मारने के लिए है? क्या तुम्हारा मन इसे मारने को चाहता है?

सखा : *(काँपता-सा)* कुमार .....

सिद्धार्थ : सखे! देखो तो इसकी आँखें कितनी भोली हैं, इसके स्पर्श में कितना स्नेह है!

सखा : *(साँस खींचकर)* नहीं कुमार! मैं भी उसको मरता हुआ नहीं देख सकूँगा।

सिद्धार्थ : तुम ही नहीं, मित्र! कोई भी व्यक्ति जिसके पास हृदय है, इन निर्दोष पक्षियों को मारना पसंद नहीं करेगा। लेकिन हाँ, तुम दौड़कर राजवैद्य से मरहम तो ले आओ।

सखा : अभी जाता हूँ। *(सखा जाता है और कुमार देवदत्त तेज़ी से आते हैं।)*

देवदत्त : सिद्धार्थ, क्या तुमने मेरा हंस देखा है?

सिद्धार्थ : तुम्हारा हंस?

देवदत्त : हाँ-हाँ, अभी मैंने एक उड़ते हुए हंस को तीर मारकर नीचे गिराया था। मैंने अपनी आँखों से उसे देखा है, वह इधर ही कहीं आया है।

सिद्धार्थ : हाँ देवदत्त! तुमने एक निर्दोष पक्षी की हत्या का प्रयास किया है। इसका प्रमाण यह हंस है। (*सहसा देवदत्त को देखकर चीखता है, और सिद्धार्थ की गोद में दुबक जाता है।*)

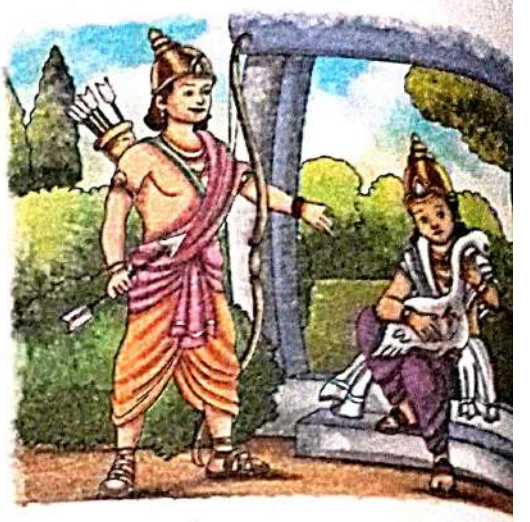

देवदत्त : **अहा, मेरा हंस** तुम्हारे पास है! लाओ, पहले मुझे दो। विवाद पीछे होगा।

सिद्धार्थ : क्यों दूँ?

देवदत्त : क्योंकि यह मेरा है।

सिद्धार्थ : इसका प्रमाण?

देवदत्त : प्रमाण! अरे प्रमाण क्या? मैंने इसे मारा है।

इसके शरीर में मेरा तीर लगा है।

सिद्धार्थ : तुमने मारा है, परंतु मैंने बचाया है। इसलिए यह हंस मेरा है। मैं तुम्हें नहीं दूँगा।

देवदत्त : तुम्हें देना होगा, सिद्धार्थ।

सिद्धार्थ : नहीं देवदत्त।

देवदत्त : तुम राजकुमार हो, इसलिए धौंस जमाना चाहते हो? पर यह न भूलना कि मैं भी राजकुमार हूँ।

सिद्धार्थ : *(मुस्कराकर)* मैं कब कहता हूँ कि तुम राजकुमार नहीं हो। मैं यह हंस तुमको कभी नहीं (*सखा का प्रवेश। वह अचरज से देवदत्त को देखता है। फिर हंस को मरहम लगाता है। फड़फड़ाता है तथा सिद्धार्थ की गोदी में चिपक जाता है।*)

देवदत्त : कुमार, मैं इसे लेकर रहूँगा, यह मेरा है।

सिद्धार्थ : देखा जाएगा।

देवदत्त : *(क्रोध से)* सिद्धार्थ, मैं क्षत्रिय हूँ और क्षत्रिय अपना शिकार नहीं छोड़ सकता।

सिद्धार्थ : *(दृढ़ स्वर में)* मैं भी क्षत्रिय हूँ, देवदत्त! और क्षत्रिय अपने शरणागत को नहीं छोड़ सकता।

देवदत्त : *(तिलमिलाकर)* कुमार।

सिद्धार्थ : *(शांत स्वर से)* ठीक है, देवदत्त! मैं विवश हूँ।

सखा : आप दोनों राजकुमार हैं, क्षत्रिय हैं। आपका झगड़ा इस प्रकार नहीं सुलझ सकता। मेरा सुझाव है, हमें महाराज के पास चलना चाहिए।

देवदत्त : *(क्रोध से)* मैं अभी महाराज के पास जाता हूँ। मैं तब देखूँगा, तुम मेरा हंस मुझे कैसे नहीं लौटाते। *(पैर पटकता हुआ जाता है।)*

सिद्धार्थ : आओ मित्र! हम भी चलें। महाराज ही इसका निर्णय करेंगे।

सखा : चलो, कुमार।

(दोनों जाते हैं)

दूसरा दृश्य

(शुद्धोधन की राज्यसभा। सभी मंत्री अपने-अपने आसनों पर बैठे हैं। महाराज का आसन कुछ ऊँचा है। इसी समय प्रतिहारी प्रवेश करता है।)

महाराज : क्या है प्रतिहारी?

प्रतिहारी : महाराज की जय हो। राजकुमार देवदत्त आने की आज्ञा चाहते हैं।

महाराज : आने दो।

(प्रतिहारी लौटता है। देवदत्त प्रवेश करता है)

देवदत्त : मैं महाराज को प्रणाम करता हूँ।

महाराज : राजकुमार देवदत्त! कहो, इस समय कैसे आए?

देवदत्त : महाराज, मैं आप से न्याय चाहता हूँ। राजकुमार सिद्धार्थ मेरा हंस नहीं देते।

महाराज : *(मुस्कराकर)* राजकुमार सिद्धार्थ?

देवदत्त : हाँ, महाराज।

महाराज : उसने तुम्हारा हंस छीन लिया है?

देवदत्त : हाँ, महाराज! मैंने उड़ते हुए हंस को अपने तीर से मारा था। वह राजकुमार के पास आ गिरा। उन्होंने उसे उठा लिया। वे अब उसे नहीं लौटाते। न्याय से यह मेरा है। मुझे दिला दीजिए।

महाराज : कुमार अब कहाँ है?

देवदत्त : उद्यान में, महाराज।

महाराज : प्रतिहारी, कुमार से कहो कि महाराज तुम्हें बुलाते हैं।

प्रतिहारी : जो आज्ञा ; महाराज।

(प्रतिहारी प्रणाम करके मुड़ता है, तभी राजकुमार सिद्धार्थ हंस को गोद में लिए वहाँ प्रवेश करते हैं।)

सिद्धार्थ : सिद्धार्थ आपको प्रणाम करता है, महाराज!

महाराज : सिद्धार्थ। देवदत्त कहता है, तुमने उसका हंस छीना है। क्या यह ठीक है? क्या यह देवदत्त का हंस है?

सिद्धार्थ : जी नहीं, यह मेरा है।

महाराज : तुम्हारा.... ?

देवदत्त : *(शीघ्रता से)* महाराज, यह हंस मेरा है। इसको मेरा तीर लगा है। सिद्धार्थ झूठ बोलते हैं।

महाराज : शांत देवदत्त, क्रोध मत करो। तुम कहते हो, यह हंस तुम्हारा है क्योंकि तुमने उसका आखेट किया है।

देवदत्त : , हाँ, महाराज।

महाराज : क्यों सिद्धार्थ, देवदत्त ठीक कहता है?

सिद्धार्थ : जी महाराज! हंस का आखेट देवदत्त ने किया है।

महाराज : तो फिर कैसे कहते हो कि वह हंस तुम्हारा है?

सिद्धार्थ : महाराज। देवदत्त ने हंस को मारा है, परंतु मैंने उसे बचाया है। इसलिए अब यह मेरा है। मारने वाले से बचाने वाला बड़ा होता है।

(सभा में हर्ष-ध्वनि)

महाराज : पर सिद्धार्थ! क्षत्रिय अपना आखेट नहीं छोड़ सकता हैं। हंस देवदत्त का आखेट है।

सिद्धार्थ : ठीक है, महाराज! क्षत्रिय अपना आखेट नहीं छोड़ सकता, परंतु क्षत्रिय शरणागत को भी धोखा नहीं दे सकता।

(देवदत्त तिलमिलाता है।)

देवदत्त : महाराज! पहले मैंने हंस को मारा है, इसलिए यह मेरा है।

सिद्धार्थ : यह कोई तर्क नहीं है, महाराज! पहले मारा था, तभी तो यह मेरी शरण में आया।

(सब लोग एक-दूसरे की ओर देखते हैं।)

महाराज : मंत्री जी! समस्या जटिल है.....

मंत्री : महाराज! समस्या बड़ी आसान है.....

महाराज : मंत्री जी, आप ही इसका निर्णय करें।

देवदत्त : हंस मेरा है। मैंने उसे तीर मारा है।

मंत्री : ठीक है। और राजकुमार सिद्धार्थ! तुम कहते हो, हंस तुम्हारा है?

: हाँ, मंत्री जी! मैंने उसे बचाया है।

: ठीक है। राजकुमार, तुम हंस को यहाँ इस आसन पर बैठा दो।

: लीजिए बैठाता हूँ।

(राजकुमार आगे बढ़कर हंस को आसन पर बैठा देता है। हंस पंख फड़फड़ाता है, काँपता है।)

: कुमार देवदत्त! हंस यहाँ आसन पर बैठा है। तुम इसे बुलाओ तो।

(सभा अचरज में भरकर देवदत्त की ओर देखती है। वह आगे बढ़कर हंस को पुकारता है।)

: *(पुचकारकर)* आओ, मेरे पास आओ। (पक्षी डरकर पंख फड़फड़ाता है और चीख़ता है।)

: कुमार देवदत्त! हंस तुम्हारे पास आना नहीं चाहता। राजकुमार सिद्धार्थ, अब तुम्हारी बारी है। तुम हंस को बुलाओ।

(सिद्धार्थ आगे बढ़ता है।)

: *(प्यार से)* आओ मित्र! मेरी गोद में बैठ जाओ।

(सिद्धार्थ के कंठ से स्नेह-पूरित शब्द कहते ही हंस एकदम उड़कर उसकी गोद में जा बैठता है। सभा आनंद-विभोर होकर हर्ष-ध्वनि करती है।)

: देखिए महाराज, पक्षी ने स्वयं इस प्रश्न का हल कर दिया है। वह राजकुमार सिद्धार्थ के पास रहना चाहता है। वह उन्हीं को मिले।

: मंत्रीवर! तुम्हारा निर्णय न्यायसंगत है। पक्षी राजकुमार सिद्धार्थ के पास ही रहे।

(राजकुमार सिद्धार्थ प्रेम से हंस को छाती से लगाते हैं। देवदत्त गरदन झुका लेता है।)

(परदा गिरता है।)

—विष्णु प्रभाकर

अध्याय

15. हिंद महासागर में छोटा-सा हिंदुस्तान

यात्रा के दौरान लेखक ने मॉरीशस को देखा और पाया कि यह तो मानो हिंदुस्तान का ही एक रूप है। यहाँ लेखक के कुछ अनुभव दिए गए हैं।

मॉरीशस वह देश है, जिसका कोई भी हिस्सा समुद्र से पंद्रह मील से ज़्यादा दूर नहीं है। मॉरीशस वह देश है, जिसकी राजधानी पोर्टलुई की गलियों के नाम कलकत्ता, मद्रास, हैदराबाद और बंबई हैं तथा जिसके एक मोहल्ले का नाम काशी है। मॉरीशस वह देश है, जहाँ बनारस भी है, और गोकुल भी है।

यात्रा पर मैं दिल्ली से 15 जुलाई को, बंबई (मुंबई) को और नैरोबी से 17 जुलाई को मॉरीशस के लिए रवाना हुआ। इधर से जाते समय नैरोबी (की दुनिया) में मुझे एक रात और दो दिन ठहरने का मौका मिल गया। अतएव मन में यह लोभ जाग गया है कि मॉरीशस के भारतीयों और अफ्रीकियों से मिलने के पूर्व हमें अफ्रीका के शेरों से मुलाकात कर लेनी चाहिए। विमान दूसरे दिन शाम को मिलने वाला था। अतएव हम जिस दिन नैरोबी पहुँचे, उस दिन उच्चायुक्त श्री भाटिया के साथ नेशनल पार्क में घूमने को निकल गए। नैरोबी का नेशनल पार्क चिड़ियाघर नहीं है। शहर से बाहर बहुत बड़ा जंगल है, जिसमें घास अधिक, पेड़ बहुत कम है, लेकिन जंगल में सर्वत्र अच्छी सड़कें बिछी हुई हैं और पर्यटकों की गाड़ियाँ उन पर दौड़ती रहती हैं। हमारी गाड़ी को भी काफ़ी देर तक दौड़ना पड़ा, मगर शेर कहीं दिखाई नहीं पड़े।

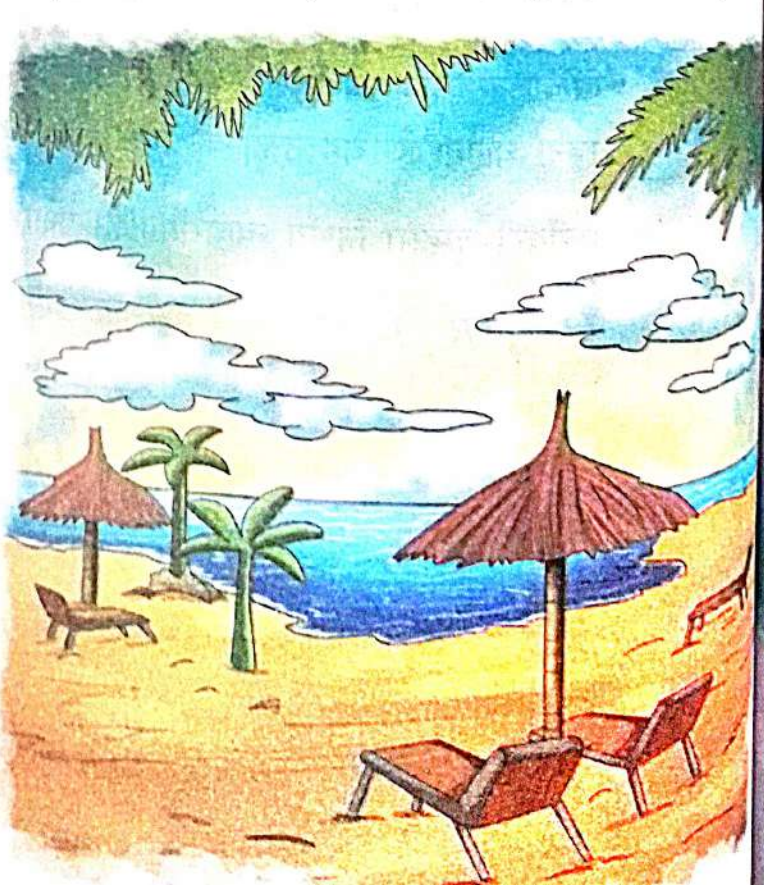

दूरी तय करने के बाद या यों कहिए कि दस-बीस मील के भीतर हर सड़क छान लेने के बाद, हम उस जगह जा पहुँचे, जहाँ सिंह उस दिन आराम कर रहे थे। वहाँ जो कुछ देखा, वह जन्मभर कभी नहीं भूलेगा। कोई सात-आठ सिंह लेटे या सोए हुए थे और उन्हें घेर कर आठ-दस मोटरें खड़ी हुई थीं। तुर्रा यह कि सिंहों को यह जानने की कोई

इच्छा ही नहीं थी कि हमें देखने को आने वाले लोग कौन हैं। मोटरों में शीशे चढ़ाकर उनके भीतर बैठे लोगों की ओर सिंहों ने कभी दृष्टिपात नहीं किया, मानो हम लोग तुच्छातितुच्छ हों और उनकी नज़र में आने के योग्य बिल्कुल नहीं हो। हम लोग वहाँ आधा घंटा ठहरे होंगे। इस बीच एक सिंह ने उठकर जँभाई ली, दूसरे ने देह को ताना, तीसरे ने सोई हुई सिंहानियों की देह चाटी, मगर हमारी ओर किसी भी सिंह ने नज़र नहीं उठाई। हम लोग पेड़-पौधे और खरपतवार से भी बदतर समझे गए।

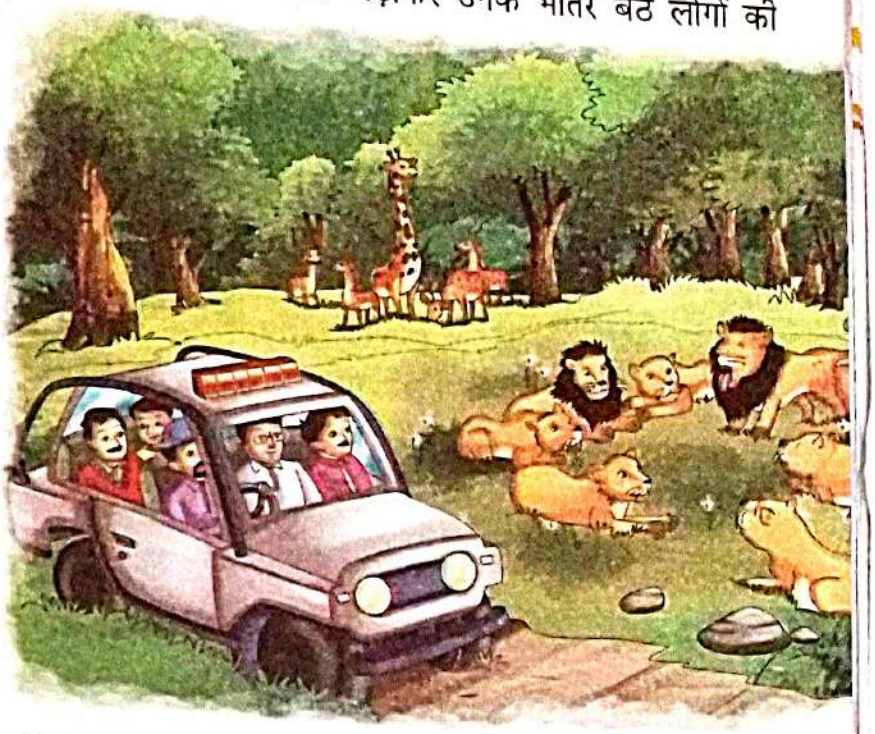

इतने में कोई मील भर की दूरी पर हिरनों का एक झुंड दिखाई पड़ा, जिनके बीच एक जिराफ़ खड़ा था। अब दो जवान सिंह उठे और दो दिशाओं की ओर चल दिए। एक तो थोड़ा-सा आगे बढ़कर एक जगह बैठ गया, लेकिन दूसरा घास के बीच छिपता हुआ मोर्चे पर आगे बढ़ने लगा।

हिरनों के झुंडों ने ताड़ लिया कि उन पर सिंहों की नज़र पड़ रही है। अतएव वे चरना भूलकर चौकन्ने हो उठे। फिर ऐसा हुआ कि झुंड से छूटकर कुछ हिरन एक तरफ़ को भाग निकले, मगर बाकी जहाँ के तहाँ खड़े रहे। इच्छा तो यह थी कि हम लोग देर तक रुकें और देखें क्या होता है! किंतु समय छह से ऊपर हो रहा था और सात बजे तक नेशनल पार्क का फाटक बंद हो जाता है। फिर यह भी बात थी कि शिकार तो सिंह सूर्यास्त के बाद किया करते हैं और शिकार वे झुंड का नहीं करते, बल्कि उस जानवर का करते हैं, जो भागते हुए झुंड से पिछड़ जाता है। अब यह बात समझ में आई कि हिरन भागने को निरापद नहीं समझकर एक गोल में क्यों खड़े थे।

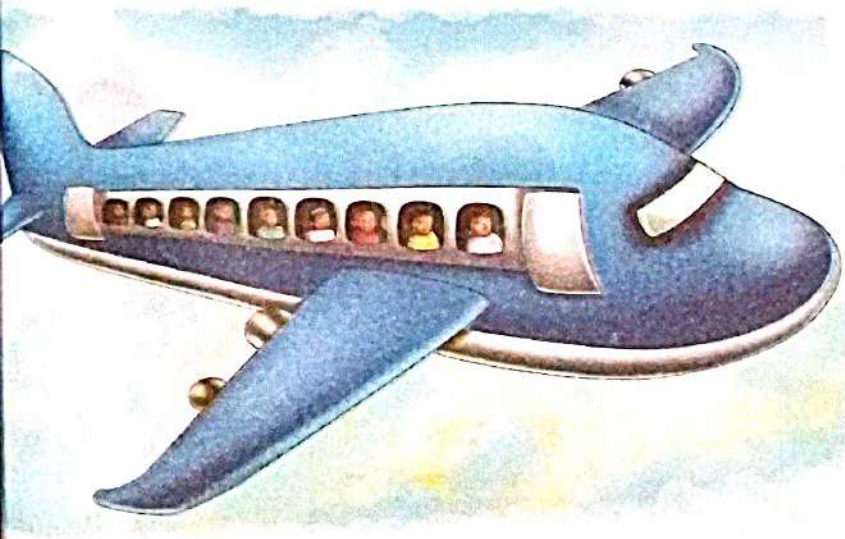

नैरोबी से मॉरीशस तक हम बी०ओ०ए०सी० के विमान में उड़े। यह विमान नैरोबी से चार बजे शाम को उड़ा और पाँच घंटे की निरंतर उड़ान के बाद जब वह मॉरीशस पहुँचा, तब वहाँ रात के लगभग दस बज रहे थे। रात थी, अँधेरा था, पानी बरस रहा था। मगर तब भी हमारे स्वागत में काफ़ी लोग खड़े थे। हवाई अड्डे के स्वागत का समाँ देखकर यह भाव जगे बिना नहीं रहा कि हम जहाँ आए है, वह छोटे पैमाने पर भारत ही है।

मॉरीशस द्वीप भूमध्य रेखा से कोई 20 अंश दक्षिण और देशांतर रेखा से 60 अंश के बिल्कुल पास, किंतु उससे पश्चिम की ओर बसा हुआ है। मॉरीशस की अधिकतम लंबाई 47 कि०मी० और अधिकतम चौड़ाई लगभग

48 कि०मी० है। वैसे पूरे मॉरीशस द्वीप का रकबा 1150 वर्ग कि०मी० आँका जाता है। यह द्वीप हिंद महासागर का मोती है तथा हिंद महासागर का सबसे खूबसूरत सितारा है।

चूँकि मॉरीशस के भारतीयों में से अधिकांश बिहार और उत्तर प्रदेश के लोग हैं, इसलिए हिंदी का मॉरीशस में व्यापक प्रचार है। मॉरीशस की हिंदी प्रचारिणी सभा जीवित जागृत संस्था है।

मॉरीशस की राजभाषा 'अँगरेज़ी' किंतु बोलचाल की भाषा 'क्रेयोल' है। क्रेयोल के बाद मॉरीशस की दूसरी जनभाषा 'भोजपुरी' को ही मानना पड़ेगा। प्रायः सभी भारतीय भोजपुरी बखूबी बोल लेते हैं। किंतु मॉरीशस की भोजपुरी शाहाबाद या सारन की भोजपुरी नहीं है, उसमें फ्रेंच के इतने संज्ञापद घुस गए हैं कि आपको बार-बार शब्दों के अर्थ पूछने पड़ेंगे। हिंदी और भोजपुरी मॉरीशस निवासी भारतीयों को एक सूत्र में बाँधे हैं और मॉरीशस को भारत के साथ बाँधने का काम भी हिंदी ही कर रही है। मॉरीशस में हिंदू संस्कृति की रक्षा का काम तुलसीदास जी की रामायण ने किया है।

मॉरीशस में ईख की खेती और उसके व्यवसाय को जो सफलता मिली है, वह भारतीय वंश के लोगों के कारण मिली है। सारा मॉरीशस कृषि प्रधान द्वीप है, क्योंकि चीनी वहाँ का प्रमुख अथवा एकमात्र उद्योग है।

भारत में बैठे-बैठे हम यह समझ नहीं पाते कि भारतीय संस्कृति कितनी प्राणवती और चिरायु है। मॉरीशस जाकर हम अपनी संस्कृति की प्राणवत्ता का ज्ञान आसानी से प्राप्त कर लेते हैं। मालिकों की इच्छा तो यही थी कि भारतीय लोग भी क्रिस्तान हो जाएँ, किंतु भारतीयों ने अत्याचार तो सहे, लेकिन प्रलोभनों को दुकरा दिया। वे अपने धर्म पर डटे रहे और जिस द्वीप में परिस्थितियों ने उन्हें भेज दिया था, उस द्वीप को उन्होंने छोटा-सा हिंदुस्तान बना डाला। यह ऐसी सफलता की बात है, जिस पर सभी भारतीयों को गर्व होना चाहिए।

मॉरीशस के प्रत्येक प्रमुख ग्राम में शिवालय होता है। मॉरीशस के प्रत्येक प्रमुख ग्राम में हिंदू तुलसीकृत रामायण का पाठ करते हैं अथवा ढोलक और झाँझ पर उसका गायन करते हैं। मॉरीशस के मंदिरों और शिवालयों को मैंने अत्यंत स्वच्छ और सुरम्य पाया। कितना अच्छा हो, यदि हम भारत में भी अपने मंदिरों और तीर्थस्थलों को उतना ही स्वच्छ और सुरम्य बनाएँ, जितना स्वच्छ वे मॉरीशस में दिखाई देते हैं।

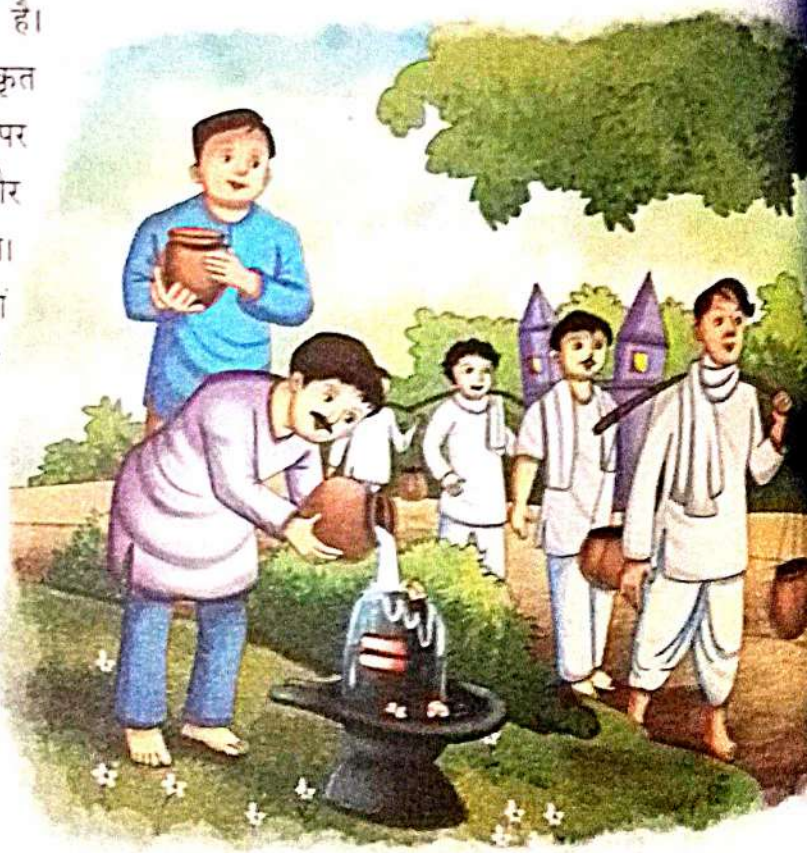

वहाँ का परी तालाब भी हिंदुओं की ऐतिहासिक भक्ति के कारण पुण्यधाम हो उठा है। परी तालाब केवल तीर्थ ही नहीं, दृश्य से भी पिकनिक का स्थान है। शिवरात्रि के समय सारे मॉरीशस के हिंदू श्वेत वस्त्र धारण करके कंधों पर काँवर लिए जुलूस बाँधकर परी तालाब पर आते हैं

और परी तालाब का जल लेकर अपने-अपने गाँव के शिवालय को लौट जाते हैं तथा शिवजी को जल चढ़ाकर अपने घरों में प्रवेश करते हैं। ये सारे काम वे बड़ी भक्ति-भावना और पवित्रता से करते हैं।

हाँ, बच्चे हाफ़ पैंट पहन सकते हैं, लेकिन गांधी टोपी उस दिन उन्हें भी पहननी पड़ती है। परी तालाब पर चलने वाला यह मेला मॉरीशस के प्रमुख आकर्षणों में से एक है और उसे देखने को अन्य धर्मों के लोग भी काफ़ी संख्या में आते हैं।

—श्री रामधारी सिंह 'दिनकर'

अध्यापन संकेत विद्यार्थियों को स्पष्ट करें कि किस प्रकार पर्यटन की आदत से किसी देश की संस्कृति व आचार-विचार को भली-भाँति जाना जा सकता है।

शब्दार्थ

दृष्टिपात - देखना; तुच्छातितुच्छ - छोटे-से-छोटा; क्रेयोल - भोजपुरी और फ्रेंच भाषा के मिश्रण से बनी भाषा जो मॉरीशस में बोली जाती है; प्राणवत्ता - जीवित होने का भाव; पुण्यधाम - पवित्र स्थान।

अभ्यास

पाठ से

मौखिक प्रश्न

(क) मॉरीशस की राजधानी का क्या नाम है?

(ख) मॉरीशस की राजधानी में गलियों के क्या नाम हैं?

(ग) मॉरीशस की बोलचाल की भाषा क्या है?

(घ) मॉरीशस का प्रसिद्ध उद्योग क्या है?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए-

(क) नेशनल पार्क का फाटक बंद हो जाता था-

(अ) चार बजे तक

(ब) छह बजे तक

(स) सात बजे तक

(द) नौ बजे तक

(ख) मॉरीशस में व्यापक प्रचार है-

(अ) हिंदी का

(ब) बंगाली का

(स) उड़िया का

(द) मलयालम का

(ग) हिरनों के झुंड चौकन्ने हो गए-

(अ) हॉर्न सुनकर

(ब) बिजली की कड़क से

(स) सिंहों के देखकर

(द) जिराफ़ों को देखकर

(घ) मॉरीशस में हिंदू संस्कृति की रक्षा का काम किया है-

(अ) शिवशक्ति सेना ने

(ब) तुलसीदास जी की रामायण ने

(स) विश्व हिंदू परिषद् ने

(द) राजदूतों ने

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) लेखक मॉरीशस कब गया?

(ख) नैरोबी का नेशनल पार्क कैसा है?

(ग) किसे पौधों और खरपतवार से भी बदतर समझा गया?

(घ) हिंदी मॉरीशस में क्या काम कर रही है?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

आशय स्पष्ट कीजिए-

(क) नैरोबी पहुँचकर लेखक ने क्या देखने का कार्यक्रम बनाया?

(ख) कौन सा दृश्य लेखक जन्मभर नहीं भूलेगा?

(ग) किस सफलता पर सभी भारतीयों को गर्व होना चाहिए?

भाषा-ज्ञान

1. शब्दों का वर्ण-विच्छेद करके लिखिए

(क) तुच्छातितुच्छ

(ख) तीर्थस्थल

(ग) पुण्यधाम

(घ) प्राणवती

(ङ) सुरम्य

(च) तीर्थस्थल

'इक' प्रत्यय जोड़कर नया सार्थक शब्द लिखिए-

(क) सप्ताह _____

(ख) धर्म _____

(ग) नीति _____

(घ) मध्यम _____

(ङ) दिन _____

(च) वर्ष _____

निम्नलिखित शब्दों को उनके विलोम शब्दों से सुमेल कीजिए-

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) आकर्षण	(i) सीमित
(ख) व्यापक	(ii) अस्वच्छ
(ग) सफलता	(iii) मृत
(घ) स्वच्छ	(iv) विकर्षण
(ङ) जीवित	(v) विफलता

रचना के क्षण

भाव-भूमि– अन्य देशों में हिंदी व भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार देखकर आपके मन में कैसे भाव उठते हैं? लिखिए।

कल्पना व चिंतन

- कल्पना कीजिए कि आप विश्व भ्रमण पर हैं। तब आप सबसे पहले कहाँ जाना चाहेंगे? विचार कीजिए, यदि पूरे विश्व की संस्कृति एक ही होती, तो क्या होता?

क्रिया-कलाप

- सच्चा धर्म क्या है? किस प्रकार इसे पाया जाता है? क्या कभी आपने विचार किया है? इस विषय पर एक वार्ता का आयोजन कीजिए और सहपाठियों के विचार जानिए।
- भारतीय संस्कृति की छाप किन-किन देशों पर खड़ी है? पता लगाइए।

2.

ह मन भूत समान है, दौड़े दाँत पसार।
स गाड़ि उतरै चढ़ै, सब बल जावै हार।।
ं तौ जानि न दीजिए, घेरि-घेरि करि लाव।
मन कूँ परचाय के, ध्यानहिं माहिं लगाव।।
ौर कहूँ बिधि दूसरी, सूनियो चित्त लगाय।
म नाम मन सूँ जपै, चंचलता थकि जाय।।
वन रुकै जब मन थकै, और दृष्टि ठहराय।
सी साधन साधिए, गुरु गम भेद मिलाय।।।
द्री रोके मन रुकै, अरु उत्तम बिधि येहु।
चरणदास यों कहत हैं, यह साधन करि लेहु।।

—चरणदास

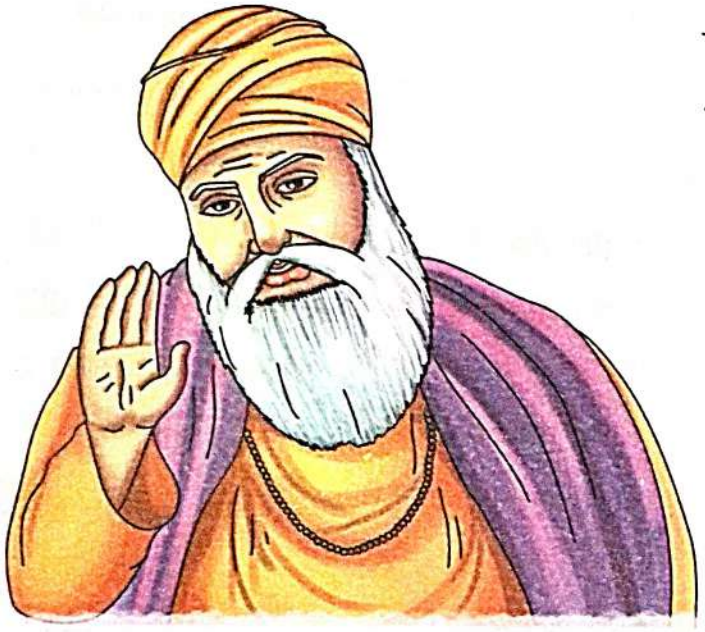

3.

जो नर दुख में दुख नहीं मानै।
सुख स्नेह अरु भय नहिं जाके, कंचन माटी जानै।।
नहिं निंदा नहिं अस्तुति जाके, लोभ मोह अभिमाना।
हर्ष शोक तैं रहे नियारौ, नाहि मान-अपमाना।।
आसा मनसा सकल त्यागि कै, जगतैं रहै, निरासा।
काम क्रोध नहिं परसैं नाहिन, तेहि घट ब्रह्म निवासा।।
गुरु किरपा तेहि पर पै कीन्ही, तिन यह जुगति पिछानी।
'नानक' लीन भयौ गोबिंद सौं, ज्यों पानी संग पानी।।

—नानक

अध्यापन संकेत कभी किसी के सामने पाखंड नहीं करना चाहिए क्योंकि पाखंड के कारण कोई आपका सम्मान नहीं करता।

शब्दार्थ

करणी - करनी; बकवादी - बकवास करने वाला; भूषण - आभूषण; बहुडिभी - बहुत पाखंडी; परचाय - बहलाकर; शूरमा - वीर, योद्धा; वाचक - वाणी द्वारा; चौरासी - चौरासी लाख योनियाँ; इंद्रिन - इंद्रियाँ; कथनी - कहना; बाँरे - बावले; बाँझ - जिसकी संतान नहीं हो सकती; थोथी - खोखली, व्यर्थ; कंचन - सोना; अस्तुति - प्रशंसा।

अभ्यास

कविता से

मौखिक प्रश्न

(क) कवि ने किन्हें बकवादी कहा है?

(ख) किनकी कथनी और करनी एक समान होती है?

(ग) यहाँ मन की तुलना किससे की गई है?

(घ) किसके घर में ब्रह्म का निवास होता है?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) मन को बहला-समझाकर लगाना चाहिए-

(अ) खेल में ⬡ (ब) हँसी में ⬡

(स) ध्यान में ⬡ (द) दुनिया में ⬡

(ख) मन की चंचलता रुकती है-

(अ) हठयोग से ⬡ (ब) घोर तपस्या से ⬡

(स) टीवी देखने से ⬡ (द) राम नाम जपने से ⬡

(ग) गोविंद को प्राप्त करने की युक्ति मिलती है-

(अ) उपनिषद् से ⬡ (ब) वेदों से ⬡

(स) इंटरनेट से ⬡ (द) गुरु किरपा से ⬡

(घ) नानकदेव जी थे-

(अ) एक नेता ⬡ (ब) एक लेखक ⬡

(स) एक संत ⬡ (द) एक योद्धा ⬡

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) बकवादी लोग क्या करते हैं?

(ख) कौन हरि के समान हो जाते हैं?

(ग) किसे रोकने से मन रुकता है?

(घ) कंचन को मिट्टी जानने का क्या अर्थ है?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) आशय स्पष्ट कीजिए–

भजै तो जानि न दीजिए
घेरि-घेरि कर लाव
या मन कूँ परचाय के
ध्यानहिं माँहि लगाव,

(ख) गुरु नानकदेव ने प्रभु से मिलने वाले-व्यक्ति के लिए किन विशेषताओं का होना आवश्यक माना है?

भाषा-ज्ञान

1. तुक मिलाइए

(क) पसार / _____

(ख) निरासा / _____

(ग) जाय / _____

(घ) अभिमाना / _____

(ङ) मानै / _____

(च) पिछानी / _____

(छ) रजनी / _____

(ज) विचारो / _____

2. तत्सम और तद्भव शब्दों को मिलाइए-

तद्भव	तत्सम
(क) अस्तुति	(i) युक्ति
(ख) जुगति	(ii) वैराग्य
(ग) किरपा	(iii) विधि
(घ) पिछानी	(iv) कृपा
(ङ) वैराग	(v) स्तुति
(च) बिधि	(vi) पहचानी

3. पढ़िए और समझिए

(क) वीर, शूर, बहादुर।

(ख) दृढ़, मजबूत, कठोर।

(ग) बल, शक्ति, ऊर्जा।

(घ) गति, चाल, रफ़्तार।

रचना के क्षण

- भाव-भूमि– क्या आप भी अपने ही मन से परेशान हो जाते हैं, इसमें कौन-कौन से भाव उमड़ते रहते हैं? बताइए।

कल्पना व चिंतन

- संत व साधुजन सबके हित की बात बताते हैं। यदि ये न होते, तो संसार का क्या रूप होता बताइए।

क्रिया-कलाप

- कुछ अन्य संतों की रचनाएँ भी पढ़िए और उनके भाव समझने का प्रयास कीजिए। कोई पठित दोहा बड़े-बड़े अक्षरों में लिखकर अपनी कक्षा में टाँगिए।
- भावों को उनकी व्याख्या से मिलाइए–

(क)	क्रूरता	(i)	विशाल हृदय से व्यवहार करना
(ख)	उदारता	(ii)	अपना सुख व वस्तु बाँटना
(ग)	क्षमा	(iii)	बेरहमी से दुख देना
(घ)	त्याग	(iv)	अपराधी को दंड न देने का भाव
(ङ)	तपस्या	(v)	द्वेष की भावना होना
(च)	वैमनस्य	(vi)	कष्ट साधना द्वारा दृढ़ता लाना

अध्याय

17. कवि का चुनाव

भले ही इस संसार में असत्य काफ़ी लोगों को भ्रमित करता है, किंतु अंत में सत्य ही उभरकर सामने आता है, यही इस कहानी का मूल तथ्य है।

एक बार एक राजा ने अपने नौजवान मंत्री से कहा, "हमें अपने दरबार के लिए एक कवि की ज़रुरत है, जो सचमुच कवि हो।"

दूसरे दिन नौजवान मंत्री ने नगर में मुनादी करवा दी। तीसरे दिन एक हज़ार एक आदमी मंत्री के महल के नीचे खड़े थे, जो कहते थे, हम सब कवि हैं। मंत्री ने इक्कीस दिनों में उन सबकी कविताएँ सुनीं और देखा कि वे सब की सब सुंदर शब्दों और रसीले भावों से भरी थीं, उनमें मधु की मिठास थी, यौवन की शोभा थी, मदभरी उपमाएँ थीं और मन को मोह लेने वाले अलंकार थे। मगर उनमें सर्वश्रेष्ठ कौन हैं, नौजवान मंत्री इसका फ़ैसला न कर सका। उसने एक दिन सोचा, दो दिन सोचा, तीन दिन सोचा, चौथे दिन फूल की पंखुड़ियों जैसे कागज़ पर सुनहरे रंग से एक हज़ार एक कवियों के नाम लिखे और यह सुनाम-सूची महाराज की सेवा में उपस्थित कर दी।

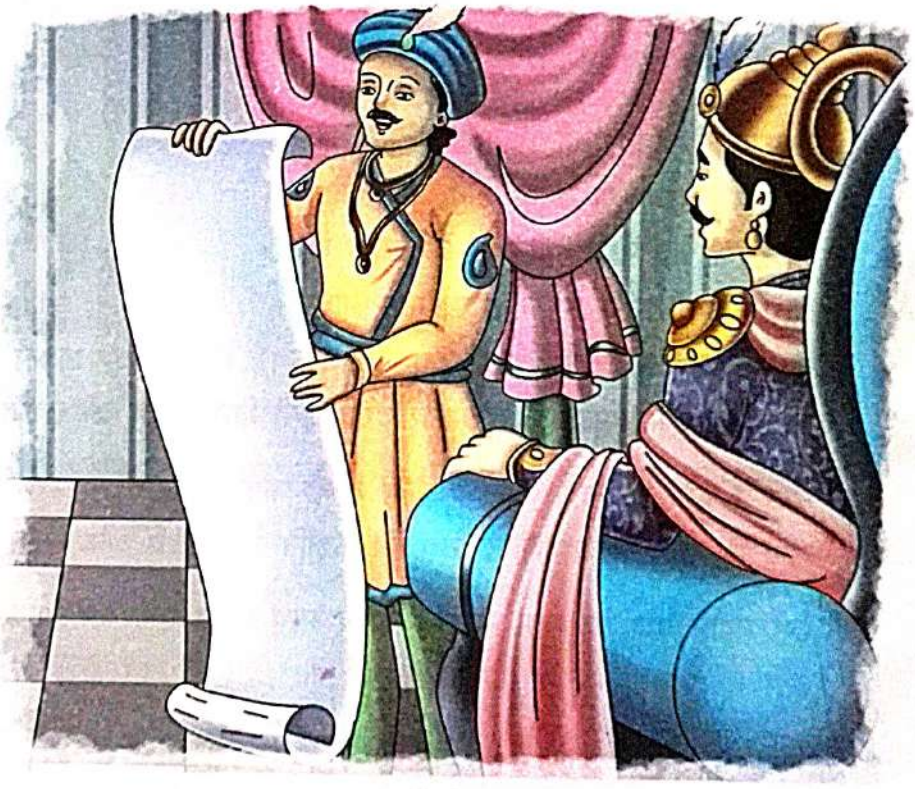

महाराज को हैरानी हुई। बोले, "क्या ये सब कवि हैं?"

मंत्री ने विनय से सिर झुकाया और धीरे-से जवाब दिया, "मैंने उनकी कृतियाँ सुनी हैं और इसके बाद यह नामावली तैयार की है। मगर हमें एक कवि की ज़रूरत है और ये एक हज़ार एक हैं। मैं चुनाव नहीं कर सका।"

महाराज ने एक घंटा विचार किया, दो घंटे विचार किया, तीन घंटे विचार किया, चौथे घंटे आज्ञा दी, "इन सबको कैद कर लो, इनसे कोल्हू चलवाओ और हुक्म दे दो कि अब से जो आदमी कविता करेगा, उसे हमारे राज्य का सबसे बलवान आदमी कोड़े मार-मारकर जान से मार डालेगा।"

मंत्री ने आज्ञा का पालन किया।

अब वहाँ एक भी कवि न था, न कोई काव्य की चर्चा करता था। लोग उन अभागों के संकट की कहानियाँ सुनते थे और उनके हाल पर अफ़सोस करते थे।

छह महीने बाद महाराज एक हज़ार एक कवियों के कैदखाने में गए और उन सब की तलाशी की आज्ञा दी। ये एक हज़ार एक कवियों में से एक सौ एक ऐसे निकले, जिन्होंने बंदीगृह की कड़ी यातनाओं के बीच में रहते हुए भी रात के समय, जाग-जागकर, पहरेदारों से छिपा-छिपाकर कविता की थी और यह न सोचा था कि अगर महाराज को उनके इस अपराध का पता लग गया, तो उनका क्रोध जाग उठेगा और इस राज्य का सबसे बलवान आदमी उन्हें कोड़े मार-मारकर जान से मार डालेगा।

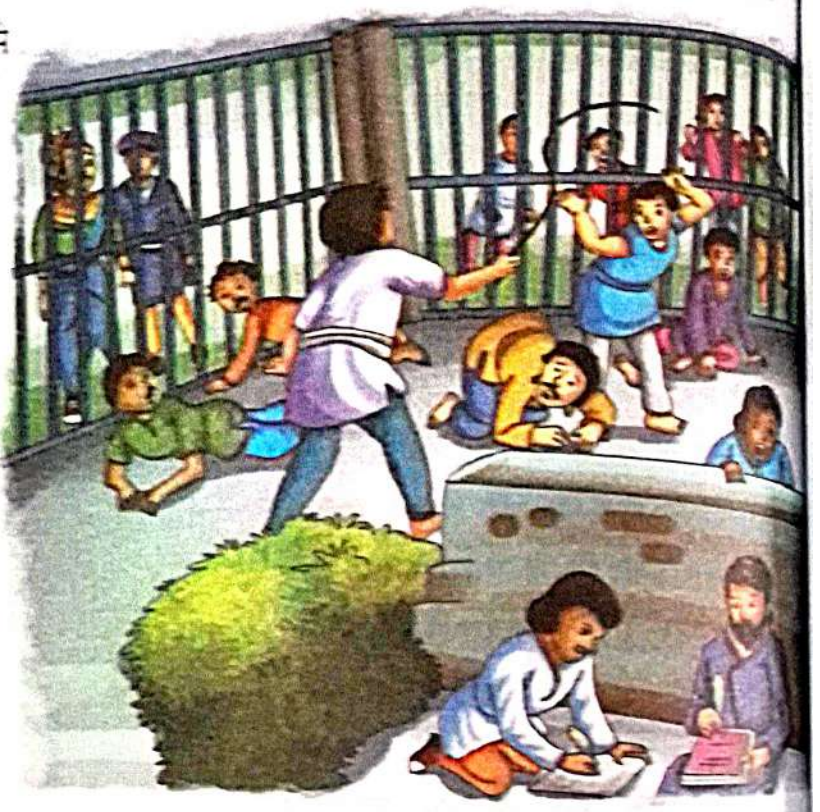

महाराज ने अपने मंत्री से कहा, "तुमने देखा! यह नौ सौ आदमी कवि न थे, नाम के भूखे थे। इनको छह-छह महीने की तनख्वाह देकर विदा कर दो। और यह एक सौ एक आदमी किसी हद तक कवि हैं। इनको रहने के लिए हमारा मोर महल दे दो, और देखो, इन्हें किसी तरह की तकलीफ़ न हो।"

मंत्री ने ऐसा ही किया। अब ये कवि अच्छे कपड़े पहनते थे, अच्छा भोजन करते थे और रात-दिन रासरंग में लीन रहते थे। लोग उनके ऐशो-आराम की कहानियाँ सुनते थे और अपने दुर्भाग्य पर ठंडी आहें भरते थे।

छह महीने बाद महाराज अपने मंत्री को साथ लेकर एक बार फिर एक सौ एक कवियों से मिलने मोर महल गए और उन सबको अपने सामने बुलाकर बोले, "तुमने बेपरवाही के छह महीनों में क्या कुछ किया है, हम सुनना चाहते हैं।"

एक सौ एक आरामदासों में से सिर्फ़ एक ऐसा था, जिसने मोर महल की इंद्र सभाओं में कोई भाग न लिया और अपने मन के उद्‌गारों को शब्दों में बाँधता रहा था। दूसरे शराब पीते थे और झूमते थे। वह एकांत में बैठकर आप ही अपनी कविताएँ पढ़ता था, आप ही खुश होता था। जैसे जंगल में मोर आप ही नाचता है, आप ही देखकर खुश होता है।

महाराज ने अपने नौजवान मंत्री से कहा, "ये एक सौ आदमी भी कवि न थे, आराम के भूखे थे। जब ये कैदी थे, इनकी आँखें अपनी दुर्दशा पर रोती थी और चूँकि उस वक्त इनका जीवन, जीवन की बहारों से खाली था, इसलिए उन दिनों इन्हें अपना जीवन प्यारा न था। उस समय इन्होंने कविता की और उसमें अपने भाग्य के अँधेरे और अँधेरे के भाग्य का रोना रोया। मगर जब वे दिन बीत गए और काली घड़ियाँ गुज़र गईं, तो ये काव्य और कल्पना की कला भी भूल गए। ये दुख के दिनों के कवि हैं सुख के समय के कलाकार नहीं। इनको धक्के देकर महल से निकाल दो।"

इसके बाद महाराज ने उस साधु स्वभाव, लापरवाह आदमी की तरफ़ इशारा करके कहा, "यह सच्चा कवि है, जिसके लिए दुख और सुख दोनों एक बराबर हैं। यह एक हज़ार एक कंकड़ों में हीरा है। हमने इसे आज से अपना दरबारी कवि नियत किया। हम इसे मुँहमाँगी तनख्वाह देंगे। इसका काम केवल इतना है कि हमें हर रोज़ दरबार में आकर एक दोहा सुना जाया करे।"

कवि ने दरबार में जाकर महाराज को एक दिन दोहा सुनाया, दूसरे दिन दोहा सुनाया तीसरे दिन दोहा सुनाया, चौथे दिन लिख भेजा, "मुझसे इस तरह की कविता नहीं हो सकती। मैं उद्‌गारों का कवि हूँ, किसी की मरज़ी का गुलाम नहीं।"

नौजवान मंत्री ने कहा, "यह आदमी कितना अभागा है!"

मगर महाराज ने कहा, "नहीं यह अभागा नहीं, यह सच्चा कवि है। यह आज़ाद है, यह आज़ादी की कविता करता है। जो गुलाम होगा, वह गुलामी की कविता करेगा। यह आदमी दरबार में आए या न आए, इसकी तनख्वाह हमेशा इसके घर पहुँचते रहें। ऐसे उच्चकोटि के कलाकार का भूखा रहना मेरे राज्य का सबसे बड़ा अपमान है।"

—श्री सुदर्शन

अध्यापन संकेत विद्‌यार्थियों को कविता का महत्व समझाएँ और स्पष्ट करें कि कविता कहना एक उच्चकोटि की कला है।

शब्दार्थ

यौवन - तरुणाई, जवानी; सुनाम - श्रेष्ठ नाम, विख्यात; नामावली - नामों की सूची; नियत - नियुक्त; तनख्वाह - वेतन; नौजवान - युवा।

अभ्यास

पाठ से

मौखिक प्रश्न

(क) राजा को दरबार के लिए किसकी आवश्यकता थी?

(ख) कितने लोगों ने स्वयं के कवि होने की घोषणा की?

(ग) कवियों का चुनाव न करके राजा ने पहले क्या घोषणा की?

(घ) लोग किस बात पर ठंडी आहें भरते थे?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए-

(क) इस कहानी के लेखक हैं-

(अ) प्रेमचंद ⬡ (ब) सुदर्शन ⬡

(स) जयशंकर प्रसाद ⬡ (द) अज्ञेय ⬡

(ख) जिन कवियों को वापिस भेजा गया, उन्हें कितने महीने की तनख्वाह दी गई?

(अ) आठ महीने ⬡ (ब) तीन महीने ⬡

(स) छह महीने ⬡ (द) चार महीने ⬡

(ग) सच्चे कवि को राजा ने कहा।

(अ) मोती ⬡ (ब) सोना ⬡

(स) पन्ना ⬡ (द) हीरा ⬡

(घ) राजा ने सच्चे कवि को प्रतिदिन सुनाने का आदेश दिया-

(अ) एक भाषण ⬡ (ब) एक दोहा ⬡

(स) एक गीत ⬡ (द) एक सूक्ति ⬡

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) मंत्री ने कितने दिनों तक कवियों की कविताएँ सुनीं?

(ख) कविताएँ सुनकर मंत्री किस नतीजे पर पहुँचा?

(ग) कितने कवियों ने बंदीगृह में भी कविता की?

(घ) सच्चे कवि ने चौथे दिन राजा को क्या लिख भेजा?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) राजा ने बंदीगृह में निकले सौ कवियों के विषय में क्या कहा?

(ख) मंत्री ने किस बात पर सच्चे कवि को अभागा कहा?

(ग) राजा ने सच्चे कवि के लिए क्या घोषणा की?

भाषा-ज्ञान

1. सही वर्ग में लिखिए-

तनख्वाह, वेतन, अलंकार, इनाम, पुरस्कार, अभागा, जेवर, उच्चकोटि, कल्पना, ख्याल, नियत

हिंदी	उर्दू	अंग्रेज़ी
_____	_____	_____
_____	_____	_____
_____	_____	_____
_____	_____	_____
_____	_____	_____

2. निम्नलिखित शब्दों का उनके विलोम शब्दों से सुमेल कीजिए

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) मिठास	(i) सौभाग्यशाली
(ख) अभागा	(ii) गुलाम
(ग) आज़ाद	(iii) अवज्ञा
(घ) आज्ञा	(iv) विनती
(ङ) क्रोध	(v) खटास

3. 'ला' उपसर्ग जोड़कर नए शब्द बनाइए-

(क) परवाह — लापरवाह

(ख) जवाब — _____

(ग) इलाज — _____

(घ) पता — _____

(ङ) वारिस — _____

4. पढ़िए और समझिए

(क) जेल,	कैद,	बंदीगृह।
(ख) अभागा,	बदकिस्मत,	बदनसीब।
(ग) गुलाम,	कैदी,	पराधीन।
(घ) अपमान,	बेइज़्ज़ती,	जलालत।

रचना के क्षण

- **भाव-भूमि–** आपके मन में अनेक भाव उमड़ते घुमड़ते होंगे, भावुक क्षणों में आपने भी अपने हृदय के उद्‌गार कविता या गीत के रूप में शायद लिखे हों। यदि लिखे हैं, तो उन्हें यहाँ लिखकर प्रस्तुत कीजिए।

कल्पना व चिंतन

- कवि प्रायः सुंदर-सुंदर कल्पनाएँ करते हैं और उन्हें गीतों में ढालते आए हैं। कल्पना कीजिए कि यदि कवियों ने सुंदर गीत न लिखे होते, तो क्या होता। साथ ही इस पर भी विचार कीजिए कि गीत या कविता यदि सच्ची हो, तो मन पर कितना गहरा प्रभाव रखती है।

क्रिया-कलाप

- अपनी पसंद की कुछ कविताएँ उनके रचनाकारों के नामों सहित यहाँ लिखिए।
- आपको जो कविताएँ याद हों, उन्हें कक्षा में सुनाइए।

पूर्व मध्यावधि प्रश्न-पत्र

पाठ 1 से 5 पर आधारित

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए-

(क) घृणा-द्वेष के शिकार होते हैं-

(अ) कमज़ोरों को　　(ब) वीरों को

(स) चित्त को　　(द) शरीर को

(ख) सुसज्जित दालान में मकरध्वज घोटने वाले थे-

(अ) रहीमदास　　(ब) नरोत्तमदास

(स) रत्नाकर　　(द) जयशंकर प्रसाद

(ग) हर माँ की आकांक्षा होती है कि उसका पुत्र-

(अ) राजनेता हो　　(ब) राजा हो

(स) ज्ञानी हो　　(द) यशस्वी हो

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) अमेरिकी व्यक्ति ने क्या-क्या दान किया था?

(ख) शिवाजी का महान व्यक्तित्व किसकी देन है?

(ग) बिना शिक्षा के शक्ति कैसी होती है?

(घ) धनाढ्य परोपकारी व्यक्तियों को लेखक ने क्या परामर्श दिया है?

(ङ) राजा ने किसे अपना मंत्री बनाया और क्यों?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) जीवन में खुशी या उमंग कब आते हैं?

(ख) पुरोहित ने यजमान को कौन-सा सत्य समझाया?

(ग) लेखक के अनुसार शिक्षा का क्या उद्देश्य है? स्पष्ट कीजिए।

(घ) जापान के किस कार्य को लेखक ने राष्ट्रीय यज्ञ कहा है?

(ङ) मंत्री पुत्र पाठ किस प्रकार दोहराता था?

4. तत्सम-तद्भव शब्दों को मिलाइए

(क) मित्र	(i) पन्ना
(ख) पृष्ठ	(ii) घी
(ग) दुग्ध	(iii) मीत
(घ) घृत	(iv) दूध

5. वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए-

(क) महान है जो पुरुष _____

(ख) विशाल काया वाला _____

(ग) सेवा का भाव रखने वाला _____

(घ) नरक में रहने वाला _____

6. निम्नलिखित शब्दों में सही स्थान पर अनुस्वार या अनुनासिक लगाइए-

(क) मत्री _____

(ख) सदेश _____

(ग) झाक _____

(घ) फाद _____

7. 'ता' प्रत्यय जोड़कर लिखिए

(क) मानव _____

(ख) निज _____

(ग) सफल _____

(घ) व्यर्थ _____

(ङ) दावन _____

(च) नभ _____

8. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थक शब्द लिखिए-

(क) विषधर _____

(ख) उमंग _____

(ग) मृतक _____

(घ) अनूठा _____

(ङ) गुणगान _____

(च) ईश्वर _____

9. निम्नलिखित शब्दों को सुमेलित कीजिए-

(क) आमोद	(i) पदार्थ
(ख) पेय	(ii) लोग
(ग) सैर	(iii) प्रमोद
(घ) उपस्थित	(iv) सपाटा

10. नीचे दिए गए शब्दांशों और मुहावरों का प्रयोग अपने वाक्यों में कीजिए-

(क) दाने-दाने को मुहताज _____

(ख) स्वर्ग सिधारना _____

(ग) मुँह लटकाना _____

11. निम्नलिखित शब्दों का उनके विलोम शब्दों से सुमेल कीजिए-

(क) निष्फल	(i) भोग
(ख) उदार	(ii) परमार्थ
(ग) उन्नति	(iii) निरक्षर
(घ) साक्षर	(iv) संकीर्ण
(ग) स्वार्थ	(v) अवनति
(घ) त्याग	(vi) सफल

मध्यावधि प्रश्न-पत्र

पाठ 1 से 9 पर आधारित

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए-

(क) जीवन को सफल बनाता है

(अ) धन (ब) यश

(स) पद (द) प्रेम

(ख) पेड़ क्या खींचते रहते हैं-

(अ) गंदी हवा (ब) साफ हवा

(स) दोनों (द) इनमें से कोई नहीं

(ग) प्रेमचंद जी को देखकर लेखक को लगा-

(अ) धक्का (ब) कि जैसी कल्पना थी वह सही थी

(स) कि वे बिल्कुल अलग थे (द) इनमें से कोई नहीं

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) दालान में रत्नाकर जी क्या घोंट रहे थे?

(ख) व्यक्ति का परम कर्तव्य क्या है?

(ग) आशय स्पष्ट कीजिए- प्राणवायु नहीं मिली तो ज़िंदगी कैसे चलेगी?

(घ) प्रेमचंद जी की पत्नी का धीरज कब छूट गया?

(ङ) विज्ञापन कला की दृष्टि से सब चीज़ों का आपस में कैसा संबंध है?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) 'जब मैं मर गया' पाठ में लेखक ने लेखकों और कवियों की हालत पर क्या व्यंग्य किया है?

(ख) धनी व्यापारी के पुत्र का मित्र किन विद्याओं का विद्वान बना?

(ग) हमें शुद्ध प्राणवायु (ऑक्सीजन) कैसे मिलती है?

(घ) लेखक को विटामिन बी कॉम्पलैक्स का विज्ञापन किसमें दिखाई देता है और लेखक की चित्र गैलरियों के विषय में क्या राय है?

(ङ) यासुकी-चान ने कब और कैसे दुनिया की नई झलक देखी?

4. शब्दों को अलग-अलग करके लिखिए

(क) शुभाशीष = _____ + _____

(ख) निर्वसन = _____ + _____

(ग) धर्मभीरु = _____ + _____

5. **निम्नलिखित शब्दों को उनके विलोम शब्दों से सुमेल कीजिए**

(क) धूप	(i) पराई
(ख) अपनी	(ii) मौत
(ग) निरंतर	(iii) दूषित
(घ) विशुद्ध	(iv) छाँव
(ङ) ज़िंदगी	(v) कभी-कभी

6. **सही वर्ग में रखिए**

पेड़, जंगल, टहनी, डर, प्रीति, अनुराग, कली, झाड़ी, बीमारी, काँटा, सलाखें

स्त्रीलिंग _____ _____ _____ _____ _____

पुल्लिंग _____ _____ _____ _____ _____

7. **प्रत्येक वर्ग में बेमेल शब्द काटिए**

(क) पेड़,	पौधा,	बाँस,	वृक्ष।
(ख) रोग,	दवा,	बीमारी,	मर्ज़।
(ग) हिम्मत,	हौसला,	साहस,	विजय।
(घ) हीन,	श्रेष्ठ,	घटिया,	तुच्छ।

8. **निम्नलिखित शब्दों को उनके समानार्थी शब्दों से सुमेल कीजिए**

(क) खूबी	(i) राशि
(ख) रकम	(ii) समय
(ग) वक्त	(iii) अगुआ
(घ) मनोहारी	(iv) विशेषता
(ङ) प्रतिनिधि	(v) सुंदर

9. **निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए**

(क) पेड़ सभी को अपनी छाया देती हैं।

(ख) पेड़ों से हमेशा शुद्ध वायु मिलता है।

(ग) वर्षा होने पर सभी लहलहाता हैं।

(घ) प्राणवायु नहीं मिला, तो ज़िंदगी कैसे चलेगा?

10. **दिए गए शब्दों में 'इक' प्रत्यय लगाकर नया शब्द बनाइए**

(क) समाज	_____	(ख) नगर	_____
(ग) दिन	_____	(घ) समूह	_____
(ङ) परंपरा	_____		

उत्तर मध्यावधि प्रश्न-पत्र

पाठ 1 से 17 पर आधारित

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) माँ की शुभ दृष्टि पुत्र के इरादों को बनाती है–

(अ) मोम ⬡ (ब) वज्र ⬡

(स) कमजोर ⬡ (द) ठंडा ⬡

(ख) प्रेमचंद ने लेखक को सुनाई–

(अ) एक कहानी ⬡ (ब) एक कविता ⬡

(स) एक गजल ⬡ (द) जिंदगी की दास्तान ⬡

(ग) भारत भूमि पर रक्त का बहना बंद होगा–

(अ) नेताओं द्वारा ⬡ (ब) अहिंसा द्वारा ⬡

(स) बंदूक द्वारा ⬡ (द) तलवार द्वारा ⬡

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) कृष्ण ने दुर्योधन को क्या सलाह दी और क्यों?

(ख) प्रेमचंद दफ़्तर का कार्य किस प्रकार पूरा करते थे?

(ग) लेखक को किसकी मुस्कराहट मिलियन डॉलर की लगती है?

(घ) कुपथ पर किसका कहना मानकर हम अग्रसर होते हैं?

(ङ) कौन हरि के समान हो जाते हैं?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) आशय स्पष्ट कीजिए– यदि हम सुगंध बनकर फैल सकते हैं, तो हम शिक्षित हैं; यदि सूर्य की भाँति स्वयं तपकर दूसरों को प्रकाश और ऊर्जा देते हैं, तो शिक्षित हैं।

(ख) पेड़ों को काटने पर क्या होगा?

(ग) जब लेखक दूसरी बार प्रेमचंद जी से मिला, तो उनका हुलिया कैसा था?

(घ) धन्यवाद देने का भाव जीवन में क्या परिवर्तन लाता है?

(ङ) राजा ने सच्चे कवि के लिए क्या घोषणा की?

4. तुक मिलाइए

(क) दासी / _____ (ख) समीकरण / _____

(ग) मानव / _____ (घ) पर / _____

(ङ) भय / _____

5. उदाहरण के अनुसार शब्द समूह के लिए एक-एक शब्द लिखिए

(क) टकसाल में ढला हुआ _____ (ख) मशीन में बना हुआ _____

(ग) विष से भरा हुआ _____ (घ) हित चाहने वाला _____

(ङ) क्षमा करने वाला _____

6. निम्नलिखित शब्दों को उनके विलोम शब्दों से सुमेल कीजिए-

(क) श्रेष्ठ	(i) दंभ
(ख) विनय	(ii) अशिष्ट
(ग) शिष्ट	(iii) स्वामी
(घ) मधुर	(iv) निकृष्ट
(ङ) सेवक	(v) कटु

7. तत्सम और तद्भव शब्दों को मिलाइए-

(क) अस्तुति	(i) युक्ति
(ख) जुगति	(ii) वैराग्य
(ग) किरपा	(iii) पहचानी
(घ) पिछानी	(iv) कृपा
(ङ) वैराग	(v) स्तुति

8. 'ला' उपसर्ग जोड़कर नए शब्द बनाइए

(क) परवाह _____ (ख) जवाब _____

(ग) इलाज _____ (घ) पता _____

9. निम्नलिखित शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए

(क) कर्तव्य _____

(ख) संयम _____

(ग) दासता _____

(घ) स्वार्थ _____

10. वाक्य शुद्ध कीजिए

(क) जन्म-मरण का चक्र चलती ही रहता है। _____

(ख) मेरी आशा नहीं मिटा है। _____

(घ) हर वस्तु की कीमत बढ़ गया है। _____

(घ) उसने मुझे धन्यवाद दी। _____

Practica's
SchoolEasy
School Management Made Easy

Always a teacher with you

READ
WATCH
LEARN

Scan and Watch Sample Video

Introducing
Chapterwise Video Lectures
Use our SchoolEasy ERP
Set up your school ONLINE with free pre loaded data
Complete Solution of exercises
Animations | Worksheets
Question Bank | Test papers
Online classes
and much more features of ERP to manage your school.

For Demo and Enquiry, Contact : +91-9548524525

is an innovative digital solution for teachers and students. It contains three modules delivering the content that can be used effectively with the coursebooks.

For Desktop Application

- Go to www.vardhmanbooks.com/digital library to download our UDC (Unique Digibank Code) desktop software.
- Open the software and get registered.
- Select the series and click on the Add Book Icon.
- Submit Book Series Code.
- Submit Digibank Code UDC (Unique Digibank Code) provided on the front page.
- Now, the digital version of the book would start downloading.
- Once downloaded, the digibook can be opened up inside the UDC software.

Scan QR code

For Mobile Application

Our animated e-books can be viewed and read on android mobiles as well.

How to enter in our Digital world?

- Download vardhmanbooks app from Play Store. (https://play.google.com/store/apps/details?id= com.siron.vardhman)
- Click on the Add Book Icon and then scan the QR code given here.
- Submit the book code (UDC – Unique Digibank Code) in the download panel and download your book.
- After downloading, a pop-up button appears on your app screen showing– yes or no asking for installation. When you click on the yes button, your e-book will get installed.
- Now, the e-book icon would be shown on the shelf. Click on it to explore a brighter, more active and cheerful learning world.

Web Support For Teachers

- Teacher manuals are provided for pedagogical guidance.
- Paper generator is also provided for creating and managing tests, exam papers from our pool of thousands of questions.
- Lesson Plan and Worksheets are also available on our website.
- We are also providing e-books for teacher's aid.

Vardhman Books International Pvt. Ltd.

Plot No. 16, Sector 10-C, IInd Floor, Vasundhara, Delhi NCR-201012

Toll Free No. 1800-121-9968

info@vardhmanbooks.com

www.vardhmanbooks.com

ISBN : 978-93-88513-05-0